

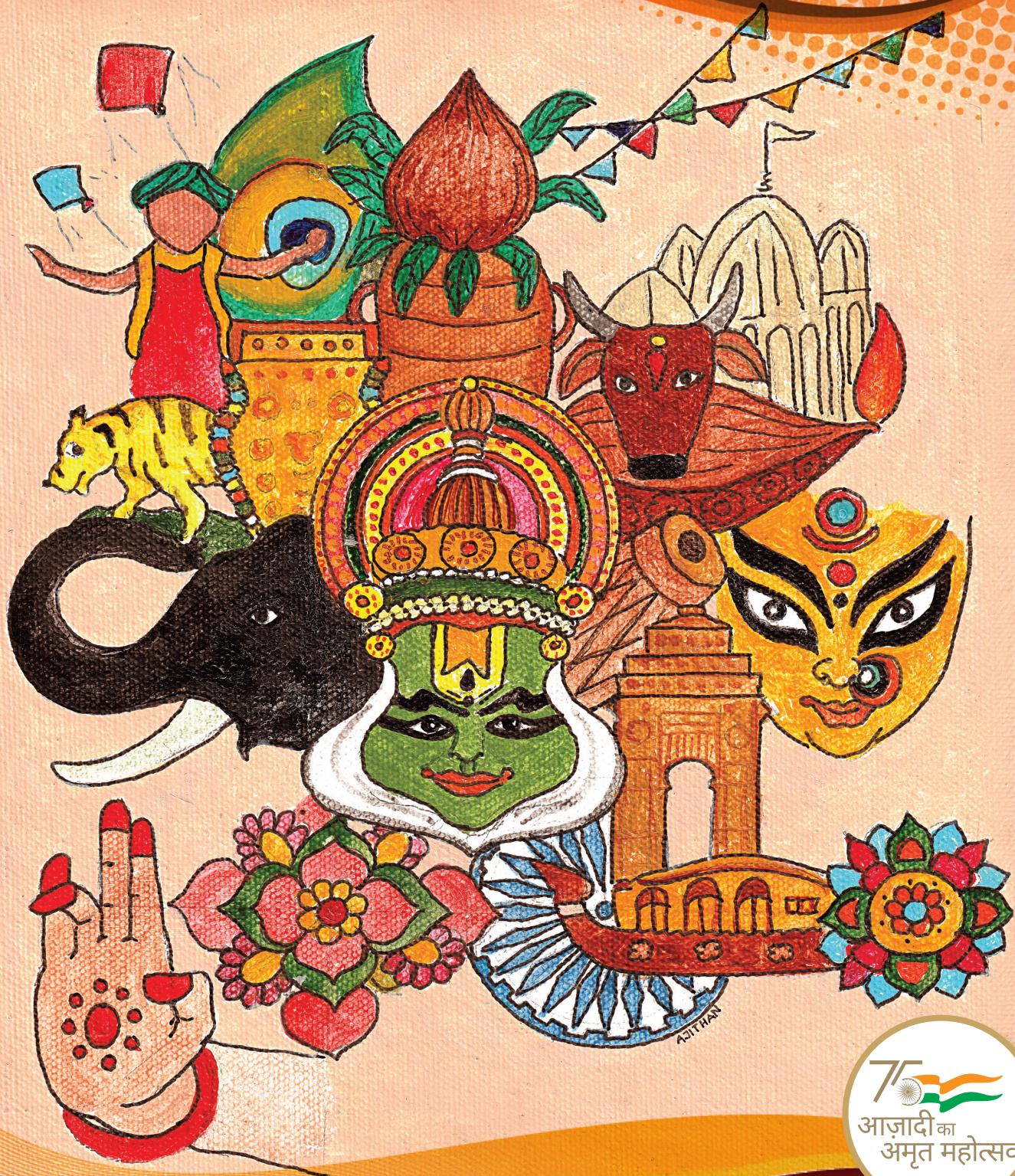


अंक ९
वर्ष २०२१

नोडन कन्तुदा



इव नोडन प्रणाली केंद्र की गृह पत्रिका



गणतंत्र दिवस समारोह 2021, वलियमला



इसरो टीम उत्कृष्टता पुरस्कार, बेंगलूरु



पर्यावरण दिवस समारोह 2021 का आयोजन, वलियमला



नोदन मुकुर

संरक्षक

डॉ. व. नारायणन

मुख्य संपादक

डॉ. ए.के. अशरफ

उप संपादक

श्री सूर्य मणि त्रिपाठी

संपादक मंडल

श्रीधर पाणिग्रही

डॉ. दीपक कुमार अग्रवाल

रंजु चंद्रन

नरेंद्र कुमार झा

रामप्रसाद बी

गौरव शर्मा

योगेश जामठे

आशीश मिश्रा

विकास शर्मा

प्रसून कुमार नाग

खालिद रघीद

अर्पिता दास

सुमित बुधवार

संदीप कुमार

साई तेजा दसरी

अमृता बिश्वास

ऐश्वर्य मिश्रा

संदीपन दास

मनोज कुमार

संपादन सहयोग

पी अनुश्री

श्रीजा आर

कुमारी शालु

अधिमन्यु कुमार

मुख्य पृष्ठ

प्रदाता: अजितन ए

वरि. तकनीशियन-बी, एलपीएससी, वलियमला

मुद्रण

मेसर्स भानु ऑफसेट, तिरुवनंतपुरम

प्रकाशित सामग्रियों में लेखकों/रचनाकारों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। यह आवश्यक नहीं है कि उनसे संपादक मंडल सहमत हो।

द्रव नोदन प्रणाली केंद्र

वलियमला, तिरुवनंतपुरम - 695547

दूरभाष: 0470-2567704, 2567531

फैक्स: 0471 2567896

द्रव नोदन प्रणाली केंद्र

80 फीट रोड, एचएल स्टेज-2

बैंगलूरु - 560 008

संपादकीय



मुझे प्रसन्नता है कि द्रव नोदन प्रणाली केंद्र की हिंदी गृह-पत्रिका “नोदन मुकुर” का 9वाँ अंक मूर्त रूप ले चुका है और यह अधिकारियों/कर्मचारियों और उनके परिजनों द्वारा रचित लेखों, कविताओं, यात्रा-वृत्तांतों, वैज्ञानिक उपलब्धियों पर विभिन्न रिपोर्टों, राजभाषा हिंदी और अन्य गतिविधियों पर रिपोर्टों के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इस पत्रिका के प्रकाशन में अहम योगदान के लिए मैं सभी अधिकारियों/कर्मचारियों एवं उनके परिजनों को बधाई देता हूँ। कोविड-19 जैसी महामारी की चुनौतियों के बीच एल पी एस सी के सभी क्रिया-कलाप निरंतर चलते रहे - चाहे वह तकनीकी संवर्धन का कार्य हो या राजभाषा हिंदी के संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन का। राजभाषा हिंदी पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा है, जिसके माध्यम से हम बड़ी ही सरलता से जन-जन तक अपनी बात पहुँचा पाते हैं। इस पत्रिका में संकलित लेख, कविताएँ आदि इस बात की परिचायक हैं कि हिंदी लेखन में लोगों की रुचि बढ़ रही है। वे अपने नियमित व्यावसायिक कार्यों के साथ ही अपनी लेखनी से हिंदी की सेवा कर रहे हैं - यह प्रशंसनीय है। लेखकगण अपनी कविताओं, कहानियों, यात्रा-वृत्तांतों और जीवन में घटित वास्तविक घटनाओं/प्रसंगों के जरिये अपने अनुभवों, विचारों और अवधारणाओं को अभिव्यक्त किये हैं, जो अत्यंत प्रेरक और उत्साहवर्धक हैं। इस पत्रिका में संकलित कई प्रसंग अनायास ही हमारे मन को छू लेते हैं। लेखन-कला एक ऐसी विधा है, जिसके माध्यम से लेखक पाठकों के साथ संवाद करता है, उनके मन को टटोलता है। यदि संवाद की यह भाषा सहज और सरल हो तो पाठक और लेखक के बीच एक सुन्दर तादात्म्य स्थापित हो जाता है।

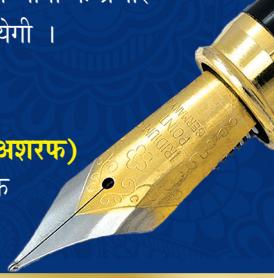
हिंदी भाषा अपनी सहजता और सरलता के कारण भारत के सभी प्रांतों एवं क्षेत्रों को जोड़ने वाली संर्पक भाषा के रूप में गैरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी है। यह धीरे - धीरे वैश्विक भाषा का रूप भी ले रही है। प्रवासी भारतीय, जो पश्चिमी देशों में वास करते हैं, हिंदी और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

हमें आशा है कि द्रव नोदन प्रणाली केंद्र की हिंदी गृह-पत्रिका “नोदन मुकुर” सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और सहज संवादसंप्रेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

जय हिंद... जय हिंदी।

(डॉ. ए.के. अशरफ)

संपादक



इस अंक में



प्रौद्योगिकी बनाम शिक्षा	07
आदि शंकराचार्य	09
आखिरी बँड	10
नित्य जीवन में ध्यान या मेडिटेशन का महत्व	10
रेलयात्रा	11
मेरे बचपन का खेल 'कुश्ती/पहलवानी'	12
क्रिश्ययन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर की यात्रा	15
बचपन	15
मेरी चिकमगलूर यात्रा	16
भविष्य की नींव	17
कशमकश	18
महामारी, 3D प्रिंटिंग और हम!	19
समर्पण	20
आवाज़ का जादू	21
पिता	22
सर्दी दस्तक दे रही	22
कर्नाटक की दिलचस्प जगहें	23
गगनयान के कर्मादल मॉड्यूल के लिए हाइड्रोजन पराक्रसाइड आधारित ग्रीन नौदन प्रणाली का विकास	28
भारत का हृदय	29

हकीकत	34
पोन्मुड़ी: सुनहरा शिखर	35
हिमाचल की वादियों से: शिमला, कुल्लू, मनाली की यात्रा	36
रास्ता	38
गगनयान	39
मेरे पहले शिक्षक	42
समझौता ज्ञापन	44
गीतों के राजकुँवर: डॉ. कुँवर बेचैन	46
जीवन की कहानी	47
पिता-पुत्री संवाद	48
वो मैराथन जो मेरे बचपन का सपना था	50
लॉकडाउन की पहली हवाई यात्रा	52
वक्त है... गुजरेगा	53
सरदार वल्लभ भाई पटेल और राष्ट्रीय अखण्डता	54
खुशी की तालाश	55
परछाई की पहचान	58
बिना सीखे	58
2020-21... इतना बुरा भी नहीं था।	59

भारत सरकार
अंतरिक्ष विभाग
द्रव नोदन प्रणाली केंद्र
वलियमला पोस्ट
तिरुवनंतपुरम - 695 547, भारत
दूरभाष : 0471 2567257/2567554
फैक्स : 0471 2567242
ईमेल : director@lpsc.gov.in



डॉ. वी. नारायणन / Dr. V. Narayanan
निदेशक/Director

Government of India
Department of Space
Liquid Propulsion Systems Centre
Valiamala P.O.
Thiruvananthapuram - 695 547, India
Telephone : 0471 2567257/2567554
Fax : 0471 2567242
Email : director@lpsc.gov.in



निदेशक की कलम से

मुझे यह बताते हुए बेहद प्रसन्नता हो रही है कि द्रव नोदन प्रणाली केंद्र की उत्साही टीम ने हमारी हिंदी गृह-पत्रिका “नोदन मुकुर” के इस 9वें अंक को मूर्त रूप दे दिया है। इस हिंदी गृह-पत्रिका को 9वें सोपान तक पहुँचाने में सभी क्षेत्रों के कर्मचारियों एवं उनके परिजनों का अहम योगदान रहा है, जिसके लिए वे सभी प्रशंसा एवं बधाई के पात्र हैं। साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से जीवन के कड़वे-भीठे अनुभवों, अधिनव विचारों, समसामयिक घटना-चक्रों, सामाजिक बदलावों आदि को अधिव्यक्त करने के लिए यह पत्रिका हमारे सभी कर्मचारियों को अनूठा मंच प्रदान करती है। एल पी एस सी की तकनीकी एवं अनुसंधान गतिविधियों में व्यस्तता एवं संलिप्तता के बावजूद, कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में तन्मयता से समर्पित होना और हिंदी में साहित्यिक गतिविधियों को आगे बढ़ाना - इस बात का द्योतक है कि राजभाषा हिंदी के संवैधानिक दायित्व का बखूबी निर्वहन किया जा रहा है।

यह खुशी की बात है कि वर्तमान महामारी की स्थिति के बावजूद, द्रव नोदन प्रणाली केंद्र ने पिछले एक वर्ष के दौरान तकनीकी संवर्धन, अनुसंधान, प्रबंधन एवं प्रशासनिक गतिविधियों में कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। प्रत्येक चुनौती का समाधान करते हुए सेमिक्रायो परियोजना में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है और पीएचटीए परीक्षण के लिए इंजन का अंतिम समुच्चयन प्रारंभ किया गया है। C32 स्टेज का संवर्धन, हार्डवेयर निर्माण एवं परीक्षण के महत्वपूर्ण चरण में पहुँच चुका है। गगनयान कार्यक्रम के लिए तीन अति महत्वपूर्ण प्रणालियों के सफल हॉट टेस्ट निष्पादित किये गए हैं, जो इस प्रकार हैं - सीई 20(ई9) इंजन योग्यता हॉट टेस्ट, विकास इंजन का दीर्घावधि हॉट टेस्ट और सेवा मॉड्यूल नोदन प्रणाली के चार हॉट टेस्ट। कर्मीदल नोदन-प्रणाली प्रदर्शन प्रारूप का समुच्चयन पूरा हो चुका है और कैबिन दाब नियंत्रण प्रणाली के अभिस्फूरण एवं अभिकल्पना में महत्वपूर्ण प्रगति देखी गई है। इसके साथ ही, तापीय एवं आर्द्रता नियंत्रण प्रणाली, मानव उपापचय अनुकारक, कर्मीदल मॉड्यूल अपाराइट प्रणाली की गतिविधियों में भी आशातीत प्रगति हुई है।

इसके अतिरिक्त, लॉक्स-मीथेन इंजन के पाँच हॉट टेस्ट किये गये हैं, जिससे इसके विकास में सन्तुष्टि सभी बड़ी महत्वपूर्ण तकनीकियों का प्रदर्शन किया जा सका। ग्रीन नोदन प्रणाली के विकास के लिए 100N H₂O₂ प्रणोदक विकास के परीक्षण पूरे कर लिये गये हैं। स्मॉल उपग्रह प्रमोचन यान के विकास की दिशा में द्विप्रणोदक आधारित बेग ट्रीपिंग मॉड्यूल नोदन प्रणाली का संवर्धन पूरा कर लिया गया है। चन्द्रयान-3 मिशन के लिए L110 M₂ स्टेज का निर्माण आखिरी चरण में है तथा लैंडर मॉड्यूल के लिए 800N इंजन डेल्टा योग्यता परीक्षण संपन्न हो चुका है। इस केंद्र ने सुलभ संदर्भ के लिए सैकड़ों गणितीय प्रारूपों और सामग्री स्वदेशीकरण दस्तावेजों के साथ-साथ गगनयान डिजाइन के अनेक रिपोर्टें प्रकाशित की हैं, जिससे ज्ञान प्रबंधन में सहायता मिल रही है।

मैं एल पी एस सी के प्रत्येक कर्मचारी को उपर्युक्त उपलब्धियों के लिए बधाई देता हूँ। इन मुख्य विकासात्मक क्रियकलापों के बीच राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन का कार्य भी अत्यंत प्रभावी ढंग से किया जा रहा है। “नोदन मुकुर” पत्रिका तकनीकी/अनुसंधान से संबंधित विभिन्न गतिविधियों, सामान्य वैज्ञानिक विचारों, कर्मचारियों एवं उनके परिजनों के विभिन्न वैचारिक उद्गारों/धारणाओं को प्रतिविम्बित करती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले दिनों में यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के माध्यम के साथ ही इस क्षेत्र के सभी संबंधितों तक तकनीकी, वैज्ञानिक विकास एवं अनुसंधान संबंधी ज्ञान पहुँचाने का सरल माध्यम बनेगी।

जय हिंद... जय हिंदी।

व. नारायणन
(डॉ. व. नारायणन)

निदेशक, एल पी एस सी एवं अध्यक्ष, रा.भा.का.स. (एल पी एस सी)



उप-संपादक की कलम से...



प्रिय पाठकों!

हम अपनी गृह पत्रिका के नए अंक के साथ एक बार पुनः उपस्थित होने का सौभाग्य मिला है। आप लोगों का हमारे संपादक मण्डल तथा मेरी तरफ से सादर अभिवादन। आशा है कि हमारे पिछले अंक को आप लोगों ने जरूर पढ़ा होगा तथा रचनाओं का आनन्द उठाया होगा। इस अंक के माध्यम से एक बार फिर हम किसी ऐसे पहलू को छूना चाहेंगे जो आप सभी को उद्वेलित कर सके। इसी सिलसिले में भारत सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम आजादी के अमृत-महोत्सव के बारे में क्यों न बात की जाये? वैसे तो कार्यक्रम सरकार द्वारा प्रायोजित है पर इसका उद्देश्य जन-जन की भागीदारी सुनिश्चित करना है।

यह महोत्सव आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के 75 सप्ताह के पूर्व से प्रारम्भ किया गया है। इस तरह यह 12 मार्च 2021 से शुरू होकर देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस यानी 15 अगस्त 2023 को समाप्त होगा। इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य जन भागीदारी को जन आंदोलन में बदलना है। इस जन आंदोलन का उद्देश्य लोगों के छोटे-छोटे प्रयासों के द्वारा देश को आत्म निर्भर बनाना है। जिससे आजादी के द्वितीय संस्करण की शुरूआत हो। जैसा कि सब लोगों को विदित है कि हमारी वास्तविक आजादी तभी है जब हम किसी भी चीज के लिए किसी दूसरे देश पर अपनी शर्तों पर निर्भर हों। यदि देखा जाये तो पिछले 75 वर्षों में हमने काफी कुछ प्राप्त भी किया है। उदाहरण के तौर पर आजादी के शुरूआत में ही विश्वस्तरीय तकनीकी संस्थानों की स्थापना उसी दिशा में एक प्रयास था। काफी हद तक हम इस दिशा में सफल भी रहे हैं। लेकिन जिस गति से हमें आगे बढ़ना था हम नहीं बढ़ पाये। इसके कई कारण हो सकते हैं पर मुझे आज जो बात समझ आ रही है वह यह है कि इसमें अधिकतर प्रयास सरकारी बन कर ही रह गये। हम फिर से परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से दूसरों पर निर्भर रहना सीख गये। इसका एक कारण यह भी है कि सारे प्रयासों में आम जन-मानस का जुड़ाव उस स्तर पर नहीं पहुँचा जहाँ हर कोई इसे अपना कर्तव्य समझे तथा अपने स्तर पर पूरा करने की कोशिश कर।

आज इस समय पर हमें छोटी-सी प्रेरक बात जापान के बारे में याद आ रही है। जिसे किसी और ने नहीं, बल्कि पूर्व सोवियत राष्ट्रपति तथा 1980 के शांति के नोबेल पुरस्कार विजेता मिखाईल गोर्बाचोव ने अपनी आत्मकथा में लिखा है।

“अपने बचपन के दिनों में वे यूरोप में दो जापानी छात्रों के साथ पढ़ते थे। द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो चुका था और जापान पूरी तरह से बर्बाद ही नहीं बल्कि कठोर आर्थिक प्रतिबंधों का सामना कर रहा था। ये दोनों जापानी छात्र बारी-बारी से नोट लिख रहे थे। जब एक लिखता था तो दूसरा अपनी पेंसिल को ठीक कर रहा होता था। क्योंकि उन

दिनों में जापानी पेंसिल की गुणवत्ता अच्छी नहीं होती थी तथा पेंसिल की टिप बहुत भंगर होती थी और जलदी ही टूट जाती थी।

उसी समय कुछ साथी विद्यार्थियों ने उन्हें सलाह दी की आप इंग्लैंड में बनी अच्छी गुणवत्ता वाली पेंसिल क्यों नहीं प्रयोग करते जोकि सस्ती भी है।

उन विद्यार्थियों के आँखों में आँसू आ गये और उन्होंने कहा कि यदि हमीं अपने देश के उत्पादों को खरीदेंगे नहीं और प्रयोग नहीं करेंगे फिर दूसरे क्यों ऐसा करेंगे। हम इस बात से मुकर नहीं सकते कि हम गुणवत्ता के मामले में आज कहीं नहीं ठहरते लेकिन एक दिन ऐसा जरूर आयेगा जब पूरा विश्व जापानी पेंसिलों का प्रयोग कर रहा होगा।” यह उद्धरण हमें देश को आत्म निर्भर बनाने के लिए जरूर प्रेरित करेगा।

आज कुछ कड़वी बातें कहने की भी जरूरत है, शायद देश में विदेशी सामानों के प्रयोग की एक कवायद सी शुरू हो गई है। हम आज रॉकेट तकनीक के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं लेकिन कई मूलभूत छोटी छोटी चीजों के लिए विदेशी तकनीक तथा उत्पादों पर निर्भर हो गये हैं। आज यदि उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो रोजमर्रा की ज़िन्दगी में प्रयोग होने वाले फोन, कम्प्यूटर आदि सभी विदेशी तकनीक से बने हैं और प्रयोग किए जा रहे हैं। इसके लिए हम शायद कई गुना मूल्य भी चुका रहे हैं तथा बहुमूल्य मुद्रा विदेशों में जा रही है। यह आजादी का अमृत महोत्सव शायद उसी दिशा में किया गया एक प्रयास है, जो हमें अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, अपने उत्पाद तथा अपनी तकनीक पर गर्व करना सिखाए तथा हम अच्छे से उत्कृष्टता की तरफ अग्रसर हो सके। यह तभी संभव है जब हर एक को अपने महत्व का ज्ञान हो तथा अपने सामर्थ्य का एहसास हो। यदि हम चाँद, मंगल तक जा सकते हैं तो जरूर ही एक दिन हर क्षेत्र में अग्रणी हो सकते हैं।

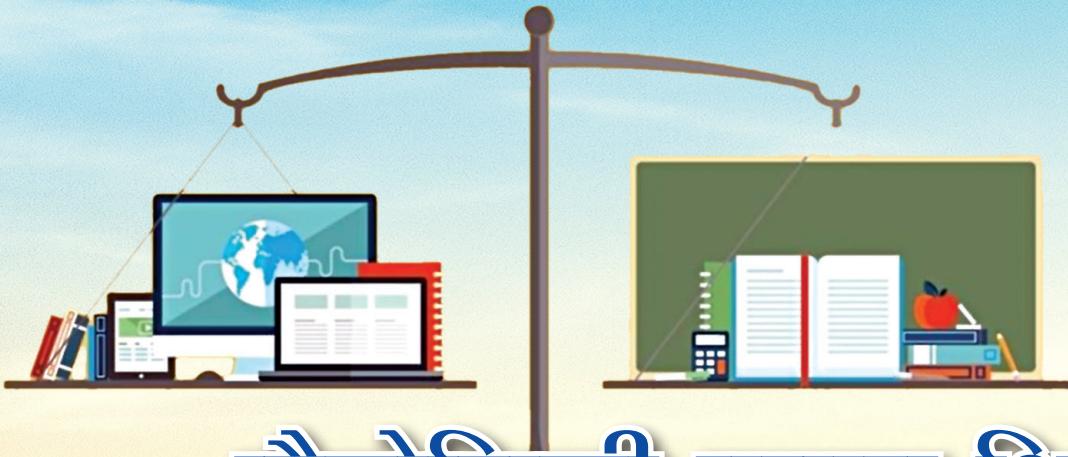
अतः इस समय जरूरत है जनभागीदारी की न कि सरकारी कार्यक्रमों की। तभी हम इस तकनीकी स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंत्रता को प्राप्त कर पायेंगे। इस समय महाकवि भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी की दो पंक्तियाँ याद आ रही हैं जो उचित हैं।

निज भाषा उन्नत अहे
सब उन्नत को मूल
निज भाषा ज्ञान के
मिटे न हिय को शूल।

यहाँ इन पंक्तियों का इस संदर्भ में आशय है कि बिना जन सामान्य की उन्नति के भागीदारी के देश की उन्नति संभव नहीं है।

आशा है आप इस अंक को पढ़ेंगे तथा आत्मनिर्भर भारत के प्रयासों में अपना सक्रिय योगदान करेंगे।

सूर्य मणि त्रिपाठी



सरस्वती के एन
नियंत्रक, ड्र. नो. प्र. कें.

प्रौद्योगिकी बनाम शिक्षा

पारंपरिक स्कूली परिवेश में प्रौद्योगिकी का योगदान संवर्धित क्षमता और प्रभाव के साथ ज्ञान और कौशल की शिक्षा को सुविधाजनक बनाना है। शैक्षणिक परिवेश (स्कूली परिवेश) में जब प्रौद्योगिकी का सीधे प्रयोग किया जाता है तब छात्र और शिक्षक दोनों ही प्रशिक्षण बन जाते हैं। इस प्रकार हम यह मान सकते हैं कि शिक्षक के ज्ञान और उसकी उपयोगिता में किसी भी प्रकार की वृद्धि छात्रों के ज्ञान की वृद्धि पर प्रभाव डालती है। अंततः प्रौद्योगिकी का उद्देश्य स्कूली छात्रों की उपलब्धियों में वृद्धि करना है।

प्रौद्योगिकी दो मुख्य तरीकों से शिक्षा की उपलब्धि में सहायता कर सकती है - शिक्षण में भौतिक बाधाओं को हटाकर तथा ज्ञान अर्जन की जगह ज्ञान की उपयोगिता पर ध्यान केंद्रित कर। शैक्षणिक परिवेशों में उनके महत्व के प्रभाव को देखने के लिए छात्र और शिक्षक दोनों के संबंध में इन दोनों तरीकों में से प्रत्येक की जाँच की जानी चाहिए।

स्थूल बाधाओं को हटाने से शिक्षकों के व्यावसायिक उत्थान में और स्नातक शिक्षा में बेहतर सुविधा उपलब्ध हुई है। इंटरनेट युग एवं दूरस्थ शिक्षा के आगमन से पूर्व शिक्षण समुदाय को एक स्थान, जैसे स्कूली परिवेश में लाने के लिए समुदाय सदस्यों के बीच अत्यंत समीपता की आवश्यकता थी। वर्तमान में शैक्षणिक क्षेत्र में विपरित शिक्षा प्रौद्योगिकी के अनेक उदाहरण हैं। सर्वप्रथम, कई विद्यालय स्नातकस्तीय कार्यक्रमों में बदलाव ला रहे हैं ताकि दूरस्थ शिक्षा संभव हो सके। अब यह आवश्यक नहीं है कि तकनीकी और इसके शिक्षा में उपयोग हेतु शिक्षकों को भौगोलिक परिवेश में रहना पड़े। ऑनलाइन

कक्षाओं और शैक्षणिक अवसरों का प्रचलन काफी बढ़ चुका है।

दूसरा दूरस्थ शिक्षण का प्रयोग केवल विश्वविद्यालयी परिवेश तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वेब आधारित सम्मेलनों तथा संगोष्ठियों के प्रादुर्भाव से, शिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन, सभी स्तरों-स्कूली परिवेश, जिला और राज्य-स्तरों पर इसे देखा गया है।

इसके अतिरिक्त इंटरनेट आधारित प्रौद्योगिकी शिक्षकों को अपना शिक्षण समुदाय गठित करने में सहायता प्रदान करती है, जो स्थानीय स्कूली परिवेश तक सीमित नहीं है। डिजाइन के संदर्भ में, ऑनलाइन शिक्षण समुदाय विभिन्न चर्चाओं और सामाजिक मेल-जोल में सहायता करते हैं, जो संरचनात्मक शिक्षण सिद्धांत का पालन करते हैं, जिसके अंतर्गत पाठों के माध्यम से ज्ञानानुभव कर इसे परिभाषित करते हुए, लोग प्रभावकारी ढंग से जानकारियाँ हासिल करते हैं।

छात्र सुदूर शिक्षण तकनीकी से शारीरिक बंधनों को दूरकर लाभान्वित हो सकते हैं। छात्र अक्सर नये-नये विषयों को सीख रहे हैं, और ये विषय उनके दैनिक जीवन से प्रायः हट जाते हैं। इसके विपरित शिक्षक अपनी नौकरी पेशा संबंधी व्यावसायिक उन्नति पर ध्यान केन्द्रित करते हैं ताकि उन्हें सीखने में सहायता मिल सके। उदाहणस्वरूप, मल्टीमीडिया प्रस्तुतियाँ जो चित्रों, कथानक, पाठ आदि जैसे मीडिया के विविध फॉर्मटों का प्रयोग करती हैं, संकल्पना में सहायता कर सकती हैं।

शैक्षणिक तकनीकी का प्रयोग और भी लाभप्रद है, विशेषकर



मल्टीमीडिया और सिमुलेशन के क्षेत्रों में, जहाँ स्थान और वित्तीय सीमाओं की बाधाओं को दूर किया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप, छात्र बिना स्थूल रूप से किन्हीं दूरस्थ भौगोलिक स्थलों की यात्रा किए, वहाँ की तस्वीरों के साथ ही वहाँ के विडियोज़ देख सकते हैं। जबकि कुछ छात्रों के लिए किसी क्षेत्र के स्थूल रूप से भ्रमण की व्यवस्था संभव नहीं है, उपलब्ध इंटरनेट सुविधा के जरिये सभी छात्र त्रिविमिय एवं भौगोलिक प्रोग्रामों का प्रयोग कर सकते हैं और आधारी स्थल से किसी दूरस्थ स्थान का भ्रमण कर सकते हैं। उपर्युक्त भौगोलिक तकनीकी की लागत बेहद कम है क्योंकि इस तकनीकी को कॉर्पोरेशन, गूगल और इसके वेब आधारित मैप उपकरणों से मुफ्त प्राप्त किया जा सकता है।

अज्ञात विषय वस्तुओं की जानकारी हासिल करने के साथ ही, शिक्षा के क्षेत्र में अपने समकक्षों की तरह ही छात्र दूरस्थ शिक्षण से लाभान्वित हो सकते हैं। वित्तीय लागतों एवं भौगोलिक अवरोधों जैसी - स्थूल बाधाओं को हटा कर तकनीकी, शिक्षकों और छात्रों दोनों को शिक्षण क्षेत्रों में भाग लेने के लिए या उन विषय वस्तुओं, जो तत्कालिक परिवेश में अनुपलब्ध हैं, की खोज के लिए और भी अवसर प्रदान कर सकती है। शिक्षण अवसरों में वृद्धि करने के बजाय सिमुलेशन एवं मल्टीमीडिया के जरिए शिक्षण अवसरों को समृद्ध कर हमलोग ज्ञान अर्जन बढ़ा सकते हैं।

अब रिमोट संचालित उपकरणों पर उपलब्ध अन्वेषणीय डाटाबेसों के विकास के द्वारा तकनीकी शिक्षण उद्देश्यों को परिभाषित करने के तरीके में बदलाव लाएगी। विशेष रूप से, यह बदलाव देखा गया है कि तथ्यों एवं सूचनाओं को याद रखने या रटने की जगह कौशल एवं कौशल विकास की उपयोगिता पर जोर दिया जा रहा है, जिससे अन्य साधनों जैसे ऑनलाइन डाटाबेसों के अनुसंधान एवं मूल्यांकन में सुधार आएगा।

ज्ञान के सामूहिक संग्रहण से विकासशील क्षेत्र का मार्ग प्रशस्त होता है, जिसे ज्ञान प्रबंधन कहा जाता है। ज्ञान प्रबंधन सिद्धांतों के अनुसार, शिक्षकों के लिए तकनीकी प्रयोग डाटाबेस के विकास के लिए किया जा सकता है जो व्यावसायिक विकास में परिवर्तन लाएगा।

मुख्य रूप से, प्रौद्योगिकी की मुख्य समस्या को तीन प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है :

1. वर्तमान शिक्षा सिद्धांत को आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ एकीकृत करना
2. निर्देशात्मक परिपेक्ष्य के अंदर प्रौद्योगिकी के प्रभाव का मूल्यांकन
3. समान क्षेत्रों में सफलतापूर्वक प्रौद्योगिकी का एकीकरण परीक्षण।

जब तक तकनीकी को पहले के शैक्षणिक सिद्धांतों से समर्थित नहीं किया जाता तब तक तकनीकी का शैक्षणिक प्रक्रिया से दूरी बनी रहेगी और समय और धन दोनों ही दृष्टि से यह अनावश्यक रूप से महँगी रहेगी। पारंपरिक रूप से व्यवहारवाद, बौद्धिक शिक्षण सिद्धांत और रचनावाद शिक्षा के तीन मुख्य सिद्धांत माने गए हैं।

हालांकि, वर्तमान शिक्षा के मामले में प्रौद्योगिकी का प्रयोग न्यायसंगत माना जा सकता है पर हम यह नहीं मान सकते कि प्रौद्योगिकी का तत्काल तथा एकमात्र उपयोग प्रभावी शिक्षा को बढ़ावा

दे सकता है।

मुख्यतः चिकित्सा स्कूलों में शिक्षा प्रयोजनों के लिए अभिकल्पित स्वास्थ्य देखभाल शिक्षा में प्रौद्योगिकी के प्रयोग में बढ़ोतरी देखी गई है।

यह देखते हुए कि वर्तमान प्रौद्योगिकी का विभिन्न क्षेत्रों में प्रभाव पड़ा है, शैक्षणिक तकनीकी के और भी विकास एवं अनुप्रयोग अपेक्षित हैं। पहला, व्यावसायिक विकास के लिए दूरस्थ शिक्षण से लागत में कटौती आयेगी, विशेषकर के तब जब अतिरिक्त प्रशिक्षण के लिए शिक्षकों को कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार के लागतों में कटौती नगण्य हो जाएगी, यदि उन्हीं प्रशिक्षण विषयों के लिए अलग-अलग एजेंसियां उत्तरदायी होती हैं।

दूसरा, शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन के ऐसे तरीके विकसित किए जाने चाहिए ताकि छात्र द्वारा तकनीकी के प्रयोग को अनुचित लाभ या शैक्षणिक बेर्इमानी न माना जाए। पेशेवरों के लिए उनके कार्यस्थल पर कंप्यूटर एवं इंटरनेट डाटाबेस उपलब्ध होने चाहिए तथा छात्रों को परीक्षाओं/मूल्यांकनों के दौरान सूचना प्राप्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

यदि वर्तमान तकनीकी यथा, वितरित शिक्षण तथा सूचना आधारित तकनीकी प्रणालियों को भविष्य में अपना जोरदार असर डालना है तो हमें उन तकनीकों का विकास एवं समर्थन जारी रखना होगा।

शैक्षणिक उद्देश्यों की वर्तमान स्थिति एवं प्रयोजनों के संदर्भ में, पारंपरिक शिक्षा के क्षेत्र में एवं दूसरे क्षेत्रों में जहाँ शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए तकनीक का प्रयोग हो रहा है, तकनीकी की भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। हम शिक्षा को शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों और शिक्षकों दोनों ही के लिए बाधाएँ मुक्त करने वाला साधन मानते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी बहुत ही मजबूत सैद्धांतिक आधारशिला है। शिक्षा के बहुत से सिद्धांत तकनीकी के प्रयोग के अनुरूप हैं, विशेषकर वे सिद्धांत जिनसे सामाजिक मेल-जोल से शिक्षण के विभिन्न रूपों के अनुकरण को बल मिलता है।

निष्कर्षतः तकनीकी ने शिक्षा के विविध क्षेत्रों में पहले ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। विशेष रूप से छात्रों एवं शिक्षकों-दोनों के शैक्षणिक अनुभवों के प्रभाव एवं क्षमता में सुधार में तकनीकी की महत्वपूर्ण उपयोगिता रही है। तकनीकी के अनवरत प्रयोग एवं विकास शिक्षण के क्षेत्र को और अधिक फायदा पहुँचा सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में महत्म उपलब्धियाँ हासिल करने के लिए शिक्षा के वर्तमान प्रचलनों के विकास के आधार पर की गई अनुशंसाओं का अनुसरण किया जाना चाहिए।



आदि शंकराचार्य



मनोज कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)
द्र.नो.प्र.कै.

पाप-कर्मों से संतप्त धरा जब देख रही थी अंबर को।
दास्तान-वेदना में चीख-चीख कर पुकार रही थी ईश्वर को।
वेद-ऋचाओं के अमृत-ज्ञान जब ढूँक गये थे आडंबरों से।
धर्म-आस्था के केन्द्र जब बन गये थे, केन्द्र दुराचारों के।
अलग-अलग मत-पंथ चल गये थे, बँट गये थे मनुज विचारों से।
चारों दिशाओं में कोलाहल-क्रंदन था मनुज के कुत्सित व्यवहारों से।
धरा विलापती बोल रही थी अब कौन बचायेगा इसे पाप-अनाचारों से।

लेकिन आशाएं अभी भी बाकी थीं जो आदिशंकर आने वाले थे।
धर्म-ध्वजा लिए हाथ में पापकर्मों से धरा को त्राण दिलाने वाले थे।
किलकारी गूँजी कलदी में स्वयं शिवशम्भू ने अवतार लिया।
शिवगुरु एवं आर्यम्बल के पुत्र-रत्न पाने का स्वयं स्वप्न साकार किया।
शिवोहम के नाद से गूँज उठी सारी दिशाएँ।
स्वयं शिव ने लहराई धरा से अम्बर तक धर्म-ध्वजाएँ।

सत्य सुंदर आदिशंकर ने धरणि पर अवतार लिया।
सद्ज्ञान की गंगा बहाकर मनुज का पुनरुद्धार किया।
बाल्य काल में ही सभी वेदों ऋचाओं का स्मरण किया।
मानव हित के निमित्त संन्यास ले पूरे देश का भ्रमण किया।

पहला गंतव्य था औंकारेश्वर जहाँ गुरु गोविंद का दर्शन किया।
अद्वैतवाद की शिक्षा विश्व को देकर सनातन का पुनर्स्थापन किया।
अहं - ब्रह्म का भेद मिटा कर आदिशंकर ने जग का परित्राण किया।
सत्य सुंदर आदिशंकर ने धरणि पर अवतार लिया।



आखिरी बूँद



विपिन एन
वैज्ञा./इंजी. एससी
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

वह आखिरी बूँद थी, नर्हीं-काली।
बादल की गोद में पली थी।
आशा थी उसको आसमान में उड़ने की।
पर किस्मत थी बंजर धरती में पड़ने की।

वह आखिरी बूँद थी।
नाची वो, थोड़ी ठंड तो दिलाई धरती को।
हँसी वो, छू कर गीली झाड़ों को।
नामुमकिन था वापस आसमान को चूमना।

वह आखिरी बूँद थी।
जमीन पर विदाई होने पर वो दुःखी थी।
रो-रोकर उसके आँखों से और बूँदें आई।
निराश थी, पर आगे उसको जाना ही था।



नित्य जीवन में ध्यान या मेडिटेशन का महत्व



कुमारी अभिरामी आर
सुपुत्री रम्या एस यू
वरि. सहायक
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

क्या आप वह व्यक्ति हैं जो अपना मानसिक स्वास्थ्य सुधार करने का प्रयास कर रहे हैं? क्या आप अपने आप को चिंताओं से मुक्त करना चाहते हैं? क्या किसी काम में आपका ध्यान केंद्रित नहीं हो पाता? यदि हाँ, तो इन सभी समस्याओं से मुक्त होने का उपाय है-ध्यान या मेडिटेशन। ध्यान वह विधा है जिसमें मनुष्य अपने विचारों पर अपना मस्तिष्क केंद्रित करता है और एकाग्रता प्राप्त करने के लिए इसे प्रशिक्षित करता है। इस प्रकार धीरे-धीरे एकाग्र होने की, ध्यान मग्न होने की आदत बन जाती है। मेडिटेशन करने से हमारे जीवन शैली में परिवर्तन आता है और हम एक बेहतर इंसान बनते हैं। ध्यान हमारे नकारात्मक विचारों को दूर करता है और हमारे अंदर सकारात्मक विचारों का संचार करता है। नियमित ध्यान करने से व्यक्ति केवल मानसिक रूप से ही नहीं, अपितु शारीरिक रूप से भी स्वस्थ और निरोगी रहता है। नियमित ध्यान करके रचनात्मक कार्य करनेवाला व्यक्ति सदैव ऊर्जावान बना रहता है।

मेडिटेशन या ध्यान से व्यक्ति को अपने जीवन का उद्देश्य पता चलता है। जिसे हासिल करने के लिए वह अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा

लगा देता है। ध्यान से मनुष्य के अंदर धैर्य, दया, सद्भावना और सहिष्णुता जैसे मानवोचित गुणों का विकास होता है। जो लोग प्रतिदिन ध्यान करते हैं, उनका मन, आत्मा और शरीर सदा शुद्ध रहते हैं तथा वे अपने आपको सदा ईश्वर के करीब पाते हैं। ध्यान करने से छात्र भी कई प्रकार से लाभान्वित होते हैं। जो छात्र प्रतिदिन ध्यान करते हैं, उनके मन, आत्मा में विश्वास बढ़ता है, उनका पढ़ाई में मन लगता है और पठित पाठ उन्हें याद रहता है।

ध्यान के लिए धन व्यय करने की आवश्यकता नहीं होती। अतः छोटे उम्र के बच्चों से लेकर बयोवृद्ध तक ध्यान या मेडिटेशन सीख सकते हैं, प्रतिदिन ध्यान कर सकते हैं। मेडिटेशन से शांति का मार्ग प्रशस्त होता है और जीवन के हर क्षेत्र में सफलता मिलती है। इतना ही नहीं, आज के महामारी कोविड-19 के समय शरीर और मन को स्वस्थ रखने में ध्यान या मेडिटेशन की मुख्य भूमिका रही है।

इसलिए हम सभी ध्यान करना शुरू करें और अपने जीवन को, अपने भविष्य को सुखमय बनायें।



राकेश कुमार
वरि. तकनीकी सहायक
द्र.नो.प्र.कै., बैंगलूरु

रेलयात्रा

रेल यात्रा का अवसर पाते ही, मैं रोमांचित हो उठता था। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, जब मेरा चयन जिला स्कूल, सहरसा (बिहार) के द्वारा एनसीसी ट्रेनिंग केंप (जामनगर गुजरात) के लिए हुआ था। उस समय मैं नवीं कक्षा का छात्र था। सितम्बर, 2002 का आखिरी सप्ताह, यात्रा के लिए निर्धारित था। मैं इस अवसर को पाकर अत्यंत उत्साहित था।

किंतु, यात्रा से करीब 10 दिन पहले, रात के 11 बजे, एक अत्यंत दुःखद खबर आई - अगली सुबह अखबार की हेड लाइंस थी - कलकत्ता - नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस दुर्घटनाग्रस्त : 150 यात्रियों की मौत व 250 से ज्यादा घायल। दिल दहला देने वाली यह खबर औरंगाबाद स्थित रफीगांज से आयी थी। यह हादसा न केवल मेरे उत्साह पर पानी फेरने के लिए काफी था, बल्कि मैं व्यक्तिगत रूप से बहुत दुःखी था।

इसके बावजूद, यह अवसर खोना नहीं चाहता था। मेरे माता-पिता घबराये हुए थे। मैं जामनगर यात्रा की इजाजत लेने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। बहुत प्रयास के बाद, पापा ने 'हाँ' कर दी। अगली सुबह हमारी ट्रेन थी।

करीब 40 सदस्यों वाली हमारी एनसीसी टुकड़ी अपने ट्रेनर-गाइड के साथ सहरसा रेलवे स्टेशन पहुँचती है। करीब 7 बजे सुबह छोटी-लाईन की ट्रेन से हम और हमारी टीम मुजफ्फरपुर पहुँची। मुजफ्फरपुर-जामनगर 'पोरबंदर एक्सप्रेस' अपने निर्धारित समय शाम के 3:30 बजे मुजफ्फरपुर पहुँच जाती है। डिब्बे का आधा हिस्सा हमारे टीम के लिए आरक्षित था। द्वितीय श्रेणी के शयनयान कक्ष में हमारी यात्रा, हमें भरपूर उत्साहित कर रही थी। ना ही लेटने और ना ही बैठने की पाबंदी। ऐसा आरामदायक सफर हमने पहले नहीं किया था। दोस्तों के बीच हँसी-मजाक के बीच कब शाम हो गया, पता ही नहीं चला।

मैं खिड़की वाली सीट पर बैठे बाहर के मनोहर दृश्य का आनंद ले रहा था। सूरज की ढलती लालिमा के बीच, पास से गुजरते गाँव-घर, मुझे अपने घर की याद दिला रहा थे। माँ-पिता की याद थोड़ा भावुक कर रही थी - पहली बार घर से इतने दूर के सफर पर जो निकला था। देखते ही-देखते सूरज ढल गया। दिन भर का थका, नींद आ गई।

अगली सुबह जब नींद खुली, हमारी ट्रेन उत्तर प्रदेश व हरियाणा राज्य से गुजर रही थी। खिड़की से बाहर का दृश्य अत्यंत ही खूबसूरत नजर आ रहा था। गेंहूँ के नये पौधे, मानो खेतों में लहलहा रहें हों, वहीं

सरसों के फूल मानों मुस्कुरा रही हों। चारों तरफ हरियाली-ही-हरियाली, कहीं खेत तो कहीं जंगल व वृक्ष, कहीं धूप तो कहीं छांव, कहीं दूर नीलगायों का झुंड तो कहीं मोर का समूह। बढ़ा ही मनमोहक दृश्य था। नदियों की स्वच्छ जल धारा तो कहीं तालाब में खिले कमल के फूल, प्रकृति के सौंदर्य में चार-चाँद लगा रहे थे। प्रकृति की इस अद्भुत विविधता को करीब से देखने का यह महान अवसर बेहद सुखद था।

अगली सुबह ट्रेन राजस्थान और फिर गुजरात में प्रवेश करती है, इस क्रम में कई नई चीजों को देखने का अवसर मिलता है। कहीं गगनचुंबी पहाड़ तो कहीं दूर तक फैले पठार, कहीं रेत ही रेत तो कहीं कँटींली झाड़ियाँ। बचपन में मिली किताबी जानकारियों का जैसे जीवित दर्शन, हमारी जिजासा को और भी बढ़ा रहे थे। ट्रेन की रफतार कभी तेज तो कभी धीमी हो रही थी।

महाराष्ट्र के किसी स्टेशन पर भीड़ ज्यादा होने की वजह से कुछ यात्री हमारे डिब्बे में चढ़ गये। हमने उन्हें अपने बर्थ पर बैठने की अनुमति दे दी। शायद 45 वर्ष की एक शिक्षिका मेरे बर्थ पर आ बैठी। उनके पूछने पर मैंने अपने और टीम के बारे में बताया। मुझे उन्हें समझने में थोड़ी परेशानी हो रही थी, क्योंकि उनकी भाषा अलग थी। पर नई भाषा को जानने एवं सुनने का यह एक अवसर था। इस तरह कई ऐसी नई जगहों को देखने एवं कई नई भाषाओं को सुनने का मौका मिला।

हमारा यह सफर और भी ज्यादा खास इस बात को लेकर था कि एनसीसी-ट्रेनिंग के दौरान भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा हम सभी को शस्त्र एवं मानव सुरक्षा हेतु प्रशिक्षण दिया जाना था।

इतना ही नहीं, एनसीसी प्रशिक्षण के दौरान अच्छा प्रदर्शन पर देश के प्रधानमंत्री से गणतंत्र दिवस पर मिलने का अवसर भी हमें उत्साहित कर रहा था। इन्हीं सब उधेड़-बुन के बीच हमारी ट्रेन जामनगर पहुँच गयी।

15 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समाप्त होने पर, अगली शाम ही, हमारी वापसी की ट्रेन थी।

निष्कर्ष: 'यात्रा' मनुष्य को न केवल आनंदित करती है, बल्कि, उसे बहुत कुछ सिखाती भी है। विभिन्न भाषाओं, भेष-भूषां, खान-पान एवं संस्कृति से अवगत कराती है।

किताबों में पढ़ी ज्ञान की बातों का वास्तविक परिचय हमें यात्रा के दौरान ही होता है। यात्रा मनुष्य के न केवल सामाजिक, सांस्कृतिक, अपितु व्यक्तित्व विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।



अभिमन्यु कुमार

हिंदी टंकक

द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

मेरे बचपन का खेल ‘कुश्ती/पहलवानी’

पंजाब राज्य को गुरुओं और पीरों की धरती माना जाता है। जहाँ हर महीने पंजाब के अलग-अलग जगहों पर मेले आए दिन लगते रहते हैं। उन मेलों में कई प्रकार के रंगा-रंग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, साथ ही खेलों को भी बढ़ावा दिया जाता है। वहाँ विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन किया जाता है और हिस्सा लेने वाले प्रतिभागियों को इनाम भी दिए जाते हैं। कुछ खेल जो मेले में अक्सर देखे जा सकते हैं, वे हैं- कुश्ती, कबड्डी, फूटबॉल, वॉलीबॉल, रस्साकस्सी व अन्य जो हर मेले में देखने को मिल जाते हैं। इन सभी खेलों में मेरा पारिवारिक अथवा रुचिकर खेल कुश्ती है। पंजाब में तीन धर्मों के मेले ज्यादा लगते हैं। पहला मुस्लिम, दूसरा सिक्ख और तीसरा हिंदुओं का, और इन सब मेलों में सभी वर्ग के लोग शामिल होते हैं। ये सब मेले लोगों को एकनित कर आपसी प्रेमभाव बढ़ाने का काम करते हैं। मेले में आए श्रद्धालुओं की अपनी-अपनी रुचि होती है जैसे किसी को रंगा-रंग कार्यक्रमों का लुत्फ उठाना और कइयों को खेल देखने में आनंद मिलता है। जैसे रंगा-रंग कार्यक्रम के आनंद लेते समय किसी कलाकार की पेशकश अच्छी लगने पर उन्हें प्यार व आशीर्वाद के रूप में नकद राशि भेंट करते हैं। इसी प्रकार खेल देखने और आनंद लेते समय किसी खिलाड़ी का अच्छा प्रदर्शन देखकर दर्शक खिलाड़ियों को अपने प्यार व आशीर्वाद के साथ कुछ राशि भेंट करते हैं और उनका हौसला बढ़ाते हैं।

मैं छठी-सातवीं कक्षा तक सिर्फ खेलों को देखता था पर खेलता नहीं था। बचपन के खेलों के अलावा और कोई खेल नहीं खेलने आता था। फिर मेरी मुलाकात विकास जोशी (जो मेरे उम्र से 2-3 साल छोटे हैं) से हुई। वह बचपन से ही पहलवानी कर रहा है। मुझे वह अपने अखाड़े पर लेकर गया और साथ में गुलाब के फूल तोड़ते-तोड़ते बताया कि यह अखाड़ा है जहाँ हम रोज जार करते हैं। (जार करना- कुश्ती का अभ्यास करना।) फिर उसने मेरे पिता जी से मेरे बारे में कुश्ती के लिए अखाड़े पर जोर करने के लिए बात की। मेरे पिता जी तुरंत मान गए और बताया कि मैं भी चाहता था कि मेरा पुत्र जोर करे। मेरे पिता जी ने विकास के पिता जी से मेरे अखाड़े पर जाने की बात की और अगले ही दिन से मैंने अखाड़े पर जाना शरू किया था। तब मुझे पहलवानी का कुछ ज्ञान नहीं था। विकास के पिता जी को सभी पहलवान उस्ताद जी कह कर बुलाते हैं। मेरा पहला दिन अखाड़े का बहुत ही आनंदमय रहा, मैंने पहली बार पकड़ लगाई (पकड़ लगाना-कुश्ती करना) जिसमें मुझे सभी पहलवानों ने हल्लाशरी (हल्लाशरी-हौसला देना) दिया। मेरा पहला दिन होने के कारण मैंने अपने शरीर की पूरी ताकत लगा दी। उस्ताद जी ने दो-तीन पकड़ के बाद हटा दिया और आराम से वर्जिश करने के लिए कहा। और अगले दिन सबेरे शरीर में दर्द का कोई ठिकाना नहीं था। क्योंकि मुझे मालूम नहीं था कि पहले दिन किस हिसाब से ताकत लगाते हैं। फिर आहिस्ता-आहिस्ता अखाड़े के तौर तरीकों का पता चला, साथ में लंगोट पहनना सीखा। कुछ दिनों के अभ्यास के बाद गुरु जी ने पीर बाबा रामे शाह जी का मेला, जहाँ कुश्ती का दंगल होना था उसके बारे में बताया और मुझे खूब जोर और मेहनत के साथ-साथ दाव-पेंच का ज्ञान दिया, पर मुझे कुछ ही दिनों के अभ्यास में सिर्फ खड़ा होना ही आया था कि किस रूप से प्रतिद्वंद्वी पहलवान के आगे खड़ा होना है और पहले कैसे बचाव करना है। दंगल का दिन निकट होने के कारण मेरा मनोबल गिरता जा रहा था कि मैं कैसे पहले से ही सीखे और

मेहनत करके पके हुए पहलवान से मुकाबला करूँगा। मेरे उस्ताद जी अपने सभी चेलों को यही बताते हैं- हमेशा तगड़े/जोशीले होकर रहो, सामने कैसा भी पहलवान आ जाए अपना मनोबल हमेशा ऊँचा रखो। अखिर वह दिन दंगल का आ ही गया जो मेरे जीवन का मेरा पहला दंगल था। उस दिन मेरे मन में एक ही बात चल रही थी कि आज क्या होगा? यह सबाल मुझे बहुत परेशान करके रखा था। उस दंगल में मैं अपने सभी साथी पहलवानों के साथ उपस्थित हुआ और दंगल के लिए बने अखाड़े को मैंने अपने सभी साथी पहलवानों के साथ सलामी दी। (सलामी देना-दंगल में बने अखाड़े को नमस्कार करना) यह सलामी मेरे जीवन की पहली सलामी और मेरे पहलवानी करियर के लिए बहुत ही नामदेय साबित हुई। सलामी के बाद सभी अपने स्थान पर बैठ गए फिर जोड़ों का चुनाव हुआ। मैं उस समय सिर्फ 32 कि.ग्रा. का था तो बच्चों की पहले कुश्ती करवाते हैं फिर बड़े पहलवानों की, तो मेरा दूसरा या तीसरा कुश्ती था। मेरा नाम पुकारा तो मैं तैयार हुआ और लंगोट पहन कर दंगल के मैदान में आया फिर हाथजोड़ी करवाई फिर कुश्ती शुरू हो गई और कुछ 1-2 मिनट ही कुश्ती चली और मैं जीत गया। मुझे खुद पर विश्वास नहीं था कि यह कैसे हो गया। सभी लोगों ने तालियाँ बजाई और दंगल कमिटी की तरफ से इनाम के तौर पर मुझे 80-90 रुपये दिए और दर्शकों ने मुझे अपना आशीर्वाद और प्यार दिया जिससे मेरे कुल 170-180 रुपये हो गए थे। फिर इस जीत की खबर मेरे पिता जी को चली जिससे उन्हें मुझ पर बहुत गर्व हुआ। फिर मेरे पिता जी को मेरे उस्ताद जी ने सुझाव दिया कि मेरी खुराक बढ़ा दें ताकि मैं ताकतवर हो जाऊँ। इस दंगल में हिस्सा लेने से मुझमें और उत्साह पैदा हुआ और एक भी छुट्टी के बिना प्रतिदिन अखाड़े पर जाता था। जैसे-जैसे दिन बीतते गए वैसे-वैसे मेरा जोर करना बढ़ता गया। मैं उस समय इतना कमजोर था कि मेरे गुरु जी का बेटा विकास जो मुझसे छोटा और बजन में भी कम होते हुए भी मुझे बहुत धोता था। जो व्यक्ति लगातार वर्जिस और जोर करता है वह आम व्यक्ति से हमेशा दो गुण ताकतवर होता है। एक समय ऐसा भी आ गया था कि मैं अपने गुरु जी के पुत्र विकास से इतना डर गया था कि जब वह अखाड़े पर आता था तो मैं अंदर ही अंदर कॉप्ता था, क्योंकि मेरी पकड़ उसी से ही होती थी। मैं रोज-रोज उससे पिट कर दुखी हो गया था। जिस किसी भी दिन किसी कारणवश वह नहीं आता था तो मैं भगवान को धन्यवाद करता था कि वह आज नहीं आया...। वह रोज मेरे साथ 2-2 घंटे जोर करता था और खूब रगड़ता था, मैं बस बचाव करता था, क्योंकि मेरा एक भी दाव उस पर चलता नहीं था। कुछ महीनों तक मेरे मन में एक ही सबाल था कि उससे कब छुटकारा मिलेगा मुझे...। ऐसा हुआ कि उसके स्कूल की परीक्षा की शुरूआत हो गई, जिसकी वजह से उसने अखाड़े पर आना कुछ समय के लिए बंद कर दिया। फिर मेरा निरंतर अखाड़े पर जाने से शरीर अनथक और मजबूत हो रहा था। उसकी परीक्षा का अंतराल मेरा जोर काला भाजी (दिवंद्र मल्ली) और जस्सा पहलवान के साथ होने लगा। कुछ महीने बीत जाने के बाद विकास की परीक्षा समाप्त हुई और उसने अखाड़े पर आना शुरू किया और जोर मेरे साथ हुआ तब मैं उस पर भारी साबित हुआ और उसका जोर मैंने करवाया फिर मेरा अत्मबल बढ़ा साथ कुछ नए लड़कों का अखाड़े पर आना शुरू हुआ। फिर अलग-अलग पहलवानों से जोर करके मन का डर दूर हुआ। साथ ही पहलवानी से जुड़ी बहुत सी बातों का पता चला जो

जीवन-सार्थक है। अखाड़े में नए एवं पुराने पहलवानों के होने से एक नया माहौल बनता था, जिसमें कुश्ती के प्रति उत्साह और एकता देखने को मिलती थी, साथ ही कुछ-न-कुछ नया दाव-पैंच सीखते थे और जो दाव नहीं आते थे उसका अभ्यास करते थे।

पहलवानी/मल्ली करने वाले खिलाड़ियों को 'पहलवान' एवं 'मल्ल' कहते हैं। समय के साथ-साथ अखाड़े के तौर तरीके और व्यायाम, दंड-बैठक और अनुशासन सीख गया था। हमारा अखाड़ा जिला जालन्धर में मशहूर अखाड़ा है जो अब पूरे पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू अथवा हरियाणा/दिल्ली तक मशहूर है। वहां हर समय नए व पुराने पहलवान पंजाब व हिमाचल प्रदेश व अलग-अलग हिस्सों से हमारे अखाड़े पर अभ्यास करने और सीखने के लिए आते रहते हैं। हमारे अखाड़े में अभ्यास करने वाले कुछ मशहूर पहलवान हैं - काला पहलवान (दिवंद्र सिंह मल्ली), नेकी पहलवान (हरनेक सिंह नेकी), सतवीर पहलवान (सतवीर संघा), जिंदी पहलवान (जिंदर संघा), विक्की पहलवान (विकास जोशी) व अन्य कई सभी पहलवान पूरे साल अखाड़े पर जोर करते हैं। सप्ताह में एक दिन आराम के लिए होता है। कई अखाड़ों पर मंगलवार एवं कई अखाड़ों पर गुरुवार को आराम और पूजा पाठ करते हैं। साथ ही शरीर की थकावट को दूर करने और शरीर की मांसपेशीयों के विकास के लिए सरसों के तेल से मालिश भी करते हैं। पहलवानों के लिए उनका अखाड़ा ही मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और गिरजाघर है। अखाड़े पर अभ्यास करने के लिए दो समय होते हैं-एक दिन में, पहला प्रातःकाल जोर करते और सायंकाल को वर्जिश। हरेक अखाड़े में अपने-अपने नियम और कायदे से अभ्यास करवाया जाता है। गुरु जी कहते हैं कि जितना आप अखाड़े की सेवा करेंगे हमें उतना ही लाभ होगा। अखाड़े की मिट्टी में सरसों का तेल, हल्दी, नीम के पत्ते, लकड़ी का बुरादा एवं दूसरे अखाड़े जो बहुत ही मशहूर हों उस अखाड़े की मिट्टी अपने अखाड़े में लाकर डालते हैं। अखाड़े की मिट्टी में उक्त सामग्रियों को मिलाने से मिट्टी के गुण बढ़ जाते हैं और मिट्टी मुलायम हो जाती है। जो पहलवान अपने अभ्यास के बाद शरीर के विकास के लिए रोजाना बादाम व अन्य सामग्रियों से बने शरदायी पीते हैं। वह नीम की लकड़ी के घोटने से मिट्टी के बने कुंडे में रगड़कर बनाया जाता है और अभ्यास के बाद उसमें चीनी स्वादानुसार मिलाकर पिया जाता है। यह शरदायी पहलवानी के लिए बहुत ही प्रमुख खुराक है।

समय बीता गया फिर मैं एक साल में पूरा तैयार हो गया और मुझे दूर-दूर के दंगलों में लेकर जाना शुरू कर दिया गया। दंगलों में जाकर बहुत सारे पहलवानों से मिलकर मैंने उन सभी से बहुत कुछ सीखा। पहलवानों में एक बहुत ही खास बात यह सीखने को मिली कि हमें बच्चों, नौजवान एवं बुजुर्गों को सदा आदर भाव से मिलना और उनसे मीठे स्वर में बात करना चाहिए। मुझे सभी तौर-तरीकों के सीखने के बाद मेरा दंगलों में जाने का सफर शुरू हो गया। दंगलों में जाने से मैंने लोगों के साथ मेल-मिलाप का भी तरीका सीखा। साथ ही अपना कुश्ती का प्रदर्शन करना सीखा। अखाड़े पर और दंगल में अपना प्रदर्शन दिखाना दोनों में बहुत अंतर है। हमें अखाड़े पर कोई फिक्र एवं चिंता नहीं होती, पर दंगल में हमें थोड़ा सा डर और चिंता होती है, क्योंकि वहां एक बार ही कुश्ती करने का मौका मिलता है और जो भी परिणाम होता है वह अंतिम निर्णय और परिणाम होता है। जैसे-जैसे मैं और भी दंगलों में जाकर भाग लेता गया वैसे-वैसे मन का डर भी

दूर होता गया। कहीं विजय और कहीं हार का सामना करते-करते एक नीडर और हौसलों से भरा पहलवान बना। फिर मेरा नाम पहलवानों की सूची में आया। दंगलों में मेरे अच्छे प्रदर्शन और परिणाम से मुझे सब पहचानने लगे और मैं लोगों की जुबान पर और आँखों में बस गया। मैंने दंगल के अलावा मैट की कुश्ती (राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय शैली) में भाग लिया, पर मैंने ज्यादातर अभ्यास मिट्टी के अखाड़े में किया था, जिसकी वजह से मैं मैट की कुश्ती में ज्यादा सफल नहीं रहा।

दंगलों में और गाँव में मेरा जब नाम बहुत आदर सद्भाव से लिया जाने लगा तो मैं अपने मन में बहुत प्रसन्नता और गर्व महसूस करता था। सभी लोगों का स्नेह और प्यार देख मुझे बहुत अच्छा लगता था। जब मेरे पिता जी से गाँव के कोई व्यक्ति मिलते थे तो मेरा जिक्र कर मेरे पिता जी की सराहना करते थे तो मेरी मैया (माता) जी को भी प्रसन्नता होती थी। मेरे पिता जी ने मेरी खुराक में कोई कमी नहीं रखी, साथ में मेरे साथ के काला पहलवान ने मेरी खुराक का खास ख्याल रखा। दैनिक खुराक और पहलवानों के शरीर के विकास के लिए अगल से जो खुराक चाहिए वह पिता जी पूरी करते थे। काला पहलवान ने मेरे खुराक का खास ख्याल रखा। काला भाजी और मेरे गुरुजी की मेरे पहलवानी जीवन में अहम भूमिका रही है, जो शब्दों से बयान नहीं की जा सकती। आज भी पहलवानी में जो भी मेरी अपनी पहचान है वह उनके दिशा निर्देशों का परिणाम है। मुझे गाँव में कुश्ती की वजह से इज्जत मान और एक प्यारा सा नाम 'पहलवान' मिला। गाँव के मशहूर-से-मशहूर और आम नागरिक मुझे 'पहलवान जी' कह

कर बुलाते हैं। 'अखाड़ा जंडु सिंधा' आज मेरे जहन और दिल में बस कर रह गया है, जो मेरे जीवन का अहम और एक यादगार हिस्सा है। जब भी कभी अखाड़े और पहलवानी की बात चलती है तो वो सात-आठ साल अखाड़े और दंगलों में बिताये लम्हे याद आ जाते हैं, जिन्हें याद कर अभी भी मैं जोश से भर जाता हूँ। दंगलों में जो ढोलक बजते हैं वे जोश बढ़ाने का कार्य करते हैं, वह ध्वनि आज भी मेरे कानों व जहन में गूँजती है। मेरे जीवन का आखिरी दंगल अपने ही गांव जंडु सिंधा में 2014 में देखा जिसमें पहले दिन के दंगल में जेतु रहा व दूसरे दिन निर्णायक खेलपंच (रेफरी) का ध्यान भटक जाने से उन्होंने मेरी कुश्ती को कुछ पल के लिए देखा नहीं जिस पल में मैं कुश्ती जीत गया था और मैं जीतने की अपनी खुशियाँ मनाने लगा तब खेलपंच का ध्यान मेरी कुश्ती पर गया और दुबारा कुश्ती शुरू करने को कहा, वहाँ पर उपस्थित हजारों दर्शक बहुत चिल्लाए और कहा कि आपने ध्यान नहीं दिया, पर रेफरी का फैसला अंतिम फैसला माना जाता है, कह कर कुश्ती दुबारा शुरू करवा दिया। कुश्ती तो बराबर छूट गई पर दर्शकों ने मुझे जीता हुआ ही स्वीकार किया और दर्शकों, उपस्थित लोगों का जो प्यार मिला उस पल को मैं कभी नहीं भूल पाया हूँ, ऐसे पल बहुत बार आए हैं जिस में दर्शकों ने मेरी कुश्ती पर मेरे पक्ष में अपनी सहमति दी है पर जो अपने गाँव में प्यार देखने को मिला वह मेरे दिल में बस कर रह गया। आज भी कोई मेरे कुश्ती प्रेमी बुजुर्ग व साथी मिलते हैं तो दूसरे दिन की कुश्ती का जिक्र जरूर करते हैं।

जी ई एम (GEM) कार्यक्रम 2021, वलियमला



नोदन मुकुर के आठवें अंक का विमोचन, वलियमला



क्रिश्चयन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर की यात्रा



अजय रवानी
तकनीकी सहायक
द्र.नो.प्र.कं., वलियमला

अस्पताल एक ऐसा स्थान है जहाँ सामान्य परिस्थिती में कोई स्वेच्छा से नहीं जाना चाहता। जब तक आप स्वस्थ हैं और सब कुशल मंगल हो आप वहाँ नहीं जाएंगे। मुझे भी CMC (Christian Medical College), Vellore की यात्रा असामान्य परिस्थिती में करनी पड़ी। मेरे पैतृक निवास स्थान जो झारखण्ड राज्य के धनबाद नामक जिले में है, पर मेरी माँ का इलाज चल रहा था। वहाँ के एक प्रतिष्ठित अस्पताल के चिकित्सक ने कुछ टेस्ट कराने के उपरांत अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी थी तथा अति शीघ्र ही उन्हें किसी बड़े अस्पताल में ले जाने की सलाह दी। मेरी बहन, मेरी माँ तथा मैं अपने घर से 3 बजे अपराह्न को घर से निकले तथा एम्बुलेंस और हवाई जहाज से लगातार यात्रा कर सुबह 3 बजे CMC पहुंचे। इस तरह हमें लगभग 12 घंटों का समय वहाँ पहुंचने में लगा। यद्यपि यहाँ मरीजों को एक लम्बी प्रतीक्षा के उपरांत ही प्रवेश मिल पाता है परंतु मेरी माँ की स्थिति को देखते हुए तुरंत उन्हें भर्ती कर लिया गया।

चूँकी वेल्लोर तमिलनाडु राज्य का एक जिला है, हमारे मन में यह संशय था कि वहाँ लोगों से कैसे बात-चीत कर पाएंगे? परन्तु इसके विपरित, वहाँ लगभग सभी लोग हिंदी, बंगाली - जैसी भाषाओं का प्रयोग बहुत सहजता से कर रहे थे। हमारे मन में भोजन आदि को लेकर भी संशय था, परन्तु वहाँ उत्तर पूर्वी तथा दक्षिण भारतीय दोनों प्रकार

के भोजन आसानी से उपलब्ध थे। वहाँ ऐसी स्थिति का बड़ा कारण यह है कि उत्तर तथा पूर्वी भारत से एक बड़ी संख्या में लोग यहाँ इलाज के लिए आते हैं।

माँ के इलाज में मुझे 1 माह तक वेल्लोर में रुकना पड़ा। इस लम्बे समय अंतराल में बाहर भोजन करना थोड़ा महंगा और स्वास्थ्य की दृष्टि से बिल्कुल ठिक नहीं था और यही समस्या यहाँ इलाज के लिए आए हुए सभी लोगों को रहती है। क्योंकि इलाज में कितना समय लगेगा यह निश्चित नहीं हो पाता है। फलत: यहाँ एक तंत्र का विकास हो गया है जो आपको रसोई के सारे उपकरण भाड़े पर उपलब्ध करा देता है। एक महीने में मैंने अस्पताल में बहुत सारे मरीजों को बहुत ही दर्दनाक स्थिति में पास से देखा और मेरे मन में एक ही बात आई जो इस यात्रा की सबसे बड़ी सीख थी, वो यह कि मनुष्य का सबसे बड़ा धन स्वास्थ्य-धन है और हमें अपनी प्राथमिकताओं में अपने स्वास्थ को सर्वोच्च स्थान देना चाहिए।

इस तरह हमने 30 दिन गुजारे तथा अब मेरी माँ की स्थिति में थोड़ा सुधार आ गया था। वहाँ से वापसी की एक अलग ही खुशी थी, क्योंकि माँ वहाँ से स्वास्थ्य-लाभ लेकर आ रही थी। हम वापस तो आ रहे थे परन्तु साथ में अपने-आप को स्वस्थ रखने का संकल्प भी साथ लेकर आ रहे थे और इस तरह हमारी CMC वेल्लोर की यात्रा पूरी हुई।

बचपन



रविंद्र कुमार
पति-कुमारी शालू
हिंदी टंकक
द्र.नो.प्र.कं., बैंगलूरु

बचपन के वो लम्हे, बचपन की वो बातें
काश लौट के आ पाते, बचपन की वो यादें।

माँ के आँचल की छाँव, पिता का साया,
ऐसा लगता था, सारा संसार इसी में समाया।

भाई का प्यार, बहन का दुलार,
ऐसा लगता था मैं ही राजकुमार

ना पढ़ाई की चिंता, ना जॉब की
हर फरमाइश होती थी एक पल में पूरी।

फिर बड़े हो गए, छूट गया बचपन,
यादें रह गई, उन्हें संजोया हुआ है मन

आज जब अपने बच्चे को गोद में खिलाया,
ऐसा लगा फिर वही बचपन लौट के आया।

तब पुत्र बनके लुफ्त उठाया, अब पिता बनके फ़र्ज निभाउँगा,
जो खुशियाँ मैंने पाई, वही तुम्हें भी दिलाउँगा।



शिवराम के. जी.
वरि. परि. सहायक
द्र.नो.प्र.के., बैंगलूरु

मेरी चिकमगलूर यात्रा

मैं अपने-आप को बहुत खुशनसीब मानता हूँ कि मुझे दक्षिण भारत व उत्तर भारत के कुछ राज्यों के साथ ही कर्नाटक के कई स्थलों की यात्रा करने का अवसर मिला। जब सभी लोग यात्रा करते हैं तो इसमें भाग्यशाली होने की कौन-सी बात है? मैंने अपनी अधिकांश यात्रा अपने मित्रों के साथ व एलपीएससी, बैंगलूरु के सहकर्मियों के साथ की है, जिसके कारण ये सभी यात्राएँ यादगार बन गई हैं। वस्तुतः इस लेख का शीर्षक चिकमगलूर की हमारी यात्रा होनी चाहिए।

चिकमगलूर उन सभी चीजों से परिपूर्ण धरती का वह हिस्सा है जिसकी उम्मीद, कोई भी पर्यटक अपने पर्यटन स्थल से करता है। अपनी पूरी प्रतिष्ठा में धरती माँ - हरे-भरे पहाड़ों से परिपूर्ण, दोपहर में भी ठंडा तापमान, सर्द रातें, सुनहरी सुबह और गोधूल बेला जिन्हें शब्दों में बयान करना मुश्किल है, अच्छे एवं स्वादिष्ट भोजन, जो सभी आय वर्गों के व्यक्तियों को संतुष्ट करता है-आदि कुछ उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। अवकाश का समय व्यतीत करने तथा इसके विपरित ट्रैकिंग, साइकिलिंग, ड्राइविंग या किसी रिक्लाइनर में आराम से समय बिताकर धरती माँ के असीम सौंदर्य का आनंद उठाना हो तो यह जगह उत्तम है। ऐसी जगहों की यात्रा के दौरान समझदार व्यक्ति के मन में ऐसे विचार उत्पन्न होते हैं।

चिकमगलूर शब्द (प्रायः कुछ के द्वारा गलत उच्चारित होता है जैसे चिकमंगलूर) कन्नड़ के दो शब्दों से उत्पन्न हुआ है - चिकमगल ऊरु जिसका मतलब है कनिष्ठ बेटी का शहर। दक्षिण पश्चिम कर्नाटक में स्थित चिकमगलूर अपने कॉफी बागानों के लिए भी जाना जाता है। चित्रोपम परिदृश्य, प्रवाही झरनों, वन्यजीव अभ्यारण्यों, तीर्थ-स्थानों और आकर्षक कॉफी बागानों के लिए भी जाना जाता है। चित्रोपम परिदृश्य, प्रवाही झरनों, वन्यजीव अभ्यारण्यों, तीर्थ-स्थानों और आकर्षक कॉफी बागानों के कारण हजारों की संख्या में यात्री यहां आते हैं। पश्चिमी घाट की भौगोलिक स्थिति के कारण इस अनोखे शहर की जलवायु समशीतोष्ण है।

मैं इस शहर के भूगोल के बारे में वर्णन करता हूँ। यह कर्नाटक राज्य में जिला मुख्यालय के रूप में इसी नाम के जिले में स्थित है जो राजधानी बैंगलूरु से 251 किलोमीटर की दूरी पर है और यह चंद्र द्रोणा पहाड़ियों से धिरा हुआ है तथा जिले का लगभग 30 प्रतिशत हिस्सा घने जंगलों से आच्छादित है। बैंगलूरु से चिकमगलूर की यात्रा के दौरान होयसाला मंदिर है जो 11वीं और 13वीं शताब्दी में बनाई गई थी खासकर बेलूर, हलेबीडु और सोमनाथपुरा।

यहाँ कॉफी पहली बार उगाई गई थी। ये कॉफी बागाने ऐसे स्थान पर स्थित हैं जहाँ हम बिना कुछ किए अपने शरीर और मन को यथेष्ट आराम प्रदान कर सकते हैं। प्रकृति के बीच शरीर और मन को तरोताजा करने वाली ऑक्सीजन युक्त हवा, उन लोगों को भा जाती है जो अपने नीरस और विश्रांत जीवन को आनंदित करना चाहते हैं। यह स्थान ऐतिहासिक विरासतों, प्राकृतिक दृश्यों, जलप्रपातों, झरनों, नदियों, तालाबों आदि से स्मृद्ध है और साथ ही यह वन्य जीवों को आश्रय प्रदान करता है। चिकमगलूर एक ऐसा स्थल है जहाँ बच्चे, बूढ़े और नौजवान सभी आनंद की अनुभूति कर सकते हैं।

हमारी यात्रा में सहभागी न होने के कारण, हमारे समूह के कुछ

साहसी प्रेमियों और प्रकृति प्रेमियों को भद्रा नदी में राफिंग न करने का पछतावा था। यहाँ आने के बाद हमें पता चला की राफिंग साल में जून से अक्तूबर में खुला रहता है, जब नदी के पानी का स्तर काफी ऊँचा रहता है। राफिंग की जगह मुल्लयानगिरि से थोड़ा दूर है, जहाँ जाने के लिए पूरी तैयारी करनी पड़ती है।

पर्वत परिभ्रण चिकमगलूर का मुख्य आकर्षण केंद्र है। यह तीन मुख्य पर्वत शिखरों सीतालयनगिरि, बाबाबुडनगिरि और मुल्लयनगिरि से धिरा हुआ है। यह यात्रा सीतालयनगिरि से शुरू होती है, जहाँ प्राचीन शिव मंदिर देखने को मिलता है, जिसका इतिहास 1000 साल से भी पुराना है और यहाँ के मंदिर का पानी ना तो बढ़ता है और ना ही घटता है।

आगला दर्शनीय स्थल बाबाबुडनगिरि है जो दद्दन्हु पीठ के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ समुद्र तल से लगभग 1965 मीटर की ऊँचाई पर संत इनाम दत्तात्रेया पीठ का मस्जिद स्थित है। इस घाटी से नीचे का दृश्य देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि दिल थम जाएगा। इस पहाड़ का नाम एक प्रसिद्ध मौलवी के नाम पर पड़ा, जो 150 साल पहले यहाँ रहते थे और इस स्थान पर सभी धर्मों के अनुयायी आते थे। इसके शीर्ष का नाम मौलवी बाबा बुड़न से लिया गया और इसका मस्जिद सूफी संत हजरत दादा हयात खालिंदार के नाम से भी जाना जाता है जिन्होंने इस क्षेत्र में पहली बार कॉफी का बीज बोया था।

माणिक्यधारा झरना जो शोला जंगलों के बीच स्थित है, अपने स्थिर ठंडे पानी के लिए प्रसिद्ध है। गर्मी के मौसम में इसके पानी में गोते लगाना, स्वर्ग की अनुभूति प्रदान करता है। यह झरना पवित्र जलप्रपात माना जाता है और कई लोगों द्वारा इसकी पूजा की जाती है। इस झरने के पास शिवर-वास और ट्रैकिंग काफी लोग पसंद करते हैं।

आगला दर्शनीय स्थल मुल्लयनगिरि है, जो चंद्र द्रोणा पर्वत के नाम से भी जाना जाता है। समुद्रतल से लगभग 1930 मीटर की ऊँचाई के साथ, यह कर्नाटक राज्य की सबसे ऊँची चोटी है। इसकी ऊँचाई से सूर्योस्त दर्शन बेहद आह्वादाकारी है। यह चिकमगलूर शहर से 16 किमी की दूरी पर है। इसकी पहाड़ी के संकीर्ण रास्ते और दुर्लभ नजारे, ट्रैकिंग करने वालों को खूब आकर्षित करते हैं। शिखर की ओर वाहन चालन संभव नहीं है, अतः आधे रास्ते से पर्वत की ओर पैदल ट्रैक करना पड़ता है। पहाड़ी की चोटी पर एक मंदिर है। पहाड़ के सबसे ऊँचे स्थान से मौसम साफ रहने पर अरब सागर दिखाई देता है। मंदिर परिसर की छोटी पहाड़ी, कर्नाटक की सबसे ऊँची जगह है।

कुद्रेमुख, एक अन्य अनोखा पर्वत शिखर है। कन्नड़ में कुद्रेमुख का मतलब ‘घोड़े का मुख’ है। हालाँकि यह चोटी सूची में दिए गए अन्य स्थानों के मुकाबले उतना रमणीय नहीं है, फिर भी यहाँ जलप्रपात, कुद्रेमुख राष्ट्रीय पार्क आदि का आनंद उठाया जा सकता है। भारत सरकार ने इस जंगल को बायों के लिए संरक्षित स्थान भी घोषित किया है। कुद्रेमुख हनुमान गुंडी जलप्रपात के लिए भी प्रसिद्ध है। कादम्बी झरना कुद्रेमुख पर्वत शिखर से उत्पन्न हुई है। यह वही जगह है जहाँ तीन नदियाँ-नेत्रावती, भद्रा और तुंगा उत्पन्न हुई हैं। इस झरने में और इसके चारों तरफ आँखिकट की विविधता देख यात्री मोहित हो जाते हैं। जलप्रपात के चारों ओर जंगल परिसर में अनेक जंगली जानवर पाए जाते हैं।



भविष्य की नींव



संजना सिंह चौहान

पत्नी-आदित्य प्रताप सिंह चंदेल
तकनीकी सहायक
द्र.नो.प्र.कॉ., वलियमला

हमारे नैनिहाल ही हमारे देश के भविष्य हैं, किसी भी देश का भविष्य उसके युवा निर्धारित करते हैं। किसी प्रजातान्त्रिक देश में शिक्षित नागरिकों का बड़ा महत्व होता है। वास्तव में शिक्षा के द्वारा ही आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हर स्तर पर जनशक्ति का विकास होता है। शिक्षा वर्तमान ही नहीं, अपितु भविष्य के निर्माण का भी अनुपम साधन है।

प्राथमिक स्तर तक सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करवाना अभी भारत में एक चुनौती बना हुआ है। भारत सरकार निरंतर प्राथमिक शिक्षा में सुधार और बच्चों का प्रवेश प्रतिशत बढ़ाने की तरफ ध्यान दे रही है, भारत संसार की दूसरी सबसे बड़ी जन आबादी वाला देश है। साथ ही बहुत चिंताजनक तथ्य यह भी है कि भारत में दुनिया की सर्वाधिक निरक्षर आबादी वास करती है। सरकार ने समय-समय पर शिक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए प्रयास जारी रखा है। शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न परियोजनाएं व कार्यक्रम चलाए गए हैं - सर्व शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, मिड डे मील, शिक्षा का अधिकार, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा आदि।

शिक्षा के संबंध में स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। सबसे पहले 'शिक्षा' क्या है? - इस पर गौर करना आवश्यक है। शिक्षा का शाब्दिक अर्थ होता है सीखने एवं सीखाने की क्रिया, परंतु अगर इसके व्यापक अर्थ को देखें तो शिक्षा किसी

चिकमगलूर से केम्पणगुंडी शहर बस 55 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। लिंगडहल्ली, केम्पणगुंडी जाने के लिए एक संगम स्थल है, जो बाबाबुडनगिरी पर्वत शिखर पर एक बहुत ही सुंदर पहाड़ी पर्यटन स्थल है। केम्पणगुंडी को महाराजा कृष्णराज ओडेयार के नाम से के.आर. हिल्स भी कहा जाता है, जिन्होंने उसे अपना पसंदीदा ग्रीष्म अवकाश केंप बनाया था। यहां कई ऐसी जगहें भी हैं जो घाटी के नीचे बादलों से घिरी रहती हैं, जो न केवल आपके आंखों को बल्कि आपकी अनतरात्मा को भी ठंडक पहुँचाती हैं। पर्वत शिखर का सबसे प्रसिद्ध पॉइन्ट राज भवन है। लगभग 1434 मीटर की ऊँचाई पर स्थित केम्पणगुंडी के चारों ओर घने जंगल हैं एवं वर्ष भर वहां स्वास्थ्यवर्धक मौसम बना रहता है। यह बाबाबुडनगिरी पर्वत शिखरों से घिरा है तथा चाँदी जैसे पर्वतीय जलप्रपातों एवं वनस्पतियों से प्रकृलित है। इसकी सुंदरता में चार चाँद लगाते सुंदर बगीचे, मनोरम पर्वत शिखरें, घाटी के मनोहारी दृश्य अंत्यंत मनमोहक हैं। जिले के विभिन्न जगहों के दिव्य सूर्यास्त का दर्शन आनंदप्रद होता है। इस स्थान पर बहुत ही सुंदर गुलाब के बाग (रोज़ गार्डेन) एवं अन्य आकर्षण केंद्र भी हैं। यहां जैड-पॉइन्ट नामक एक स्थान भी है, जो मुख्य स्थान से 10 मिनट की दूरी पर है। यह स्थान पश्चिमी घाटी के शोला घासस्थल का विहंगम दृश्य प्रस्तुत करता है।

सुंदर पर्वतीय शिखरों के अतिरिक्त, चिकमगलूर में घने जंगलों के साथ कई छोटे-बड़े जलप्रपात भी हैं। हेवे जलप्रपात केम्पणगुंडी से पास है। सगिर अहमद/दबदबे जलप्रपात बाबाबुडनगिरि के रास्ते पर स्थित है।

भी समाज में निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है जिसका कोई उद्देश्य होता है और जिससे मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास होता है तथा व्यवहार को परिष्कृत किया जाता है। शिक्षा द्वारा ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य नागरिक बनाया जाता है।

किसी भी बच्चे में अनुशासन, मित्रता, सच्चाई, ईमानदारी, आध्यात्मिकता आदि गुणों के विकास में शिक्षा का प्रभाव अत्यधिक रहता है। ये सभी ज्ञान उस शिक्षा से ही प्राप्त होते हैं। बच्चों में शिक्षा का प्रभाव उनके अच्छे चरित्र का निर्माण करने में सहायक सिद्ध होता है।

भारत सरकार निरंतर प्राथमिक शिक्षा में सुधार और बच्चों का स्कूलों में प्रवेश प्रतिशत बढ़ाने की तरफ ध्यान दे रही है, भारत संसार का दूसरा सबसे बड़ा जन आबादी वाला देश है। सरकार ने समय पर शिक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने के प्रयास जारी रखे हैं एवं शिक्षा के क्षेत्र में योजनाएं व कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जैसे सर्व शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, मिड डे मील, शिक्षा का अधिकार, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा, के इन सभी प्रयासों के फलस्वरूप शिक्षा भारत के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसारित हो परहीन है। आशा करते हैं, हम जल्द से जल्द भारत में 100% साक्षरता दर हासिल करेंगे। केवल प्राथमिक शिक्षा के वृद्ध अभियान के कारण, अब लड़की या लड़का बिना किसी भेदभाव के स्कूल जा रहे हैं।

हैब्बे जलप्रपात, केम्पणगुंडी पर्वत शिखर से 8 कि.मी. की दूरी पर है। ट्रैक के माध्यम से इस स्थान पर पहुँचा जा सकता है। यह यात्रा सही मायनों में थोड़ी श्रमसाध्य है पर यह श्रमसाधना इस यात्रा के योग्य है। चौंक, जल 168 मीटर की ऊँचाई से गिरता है, यह दो भागों में बंट जाता है - दोडु हैब्बे एवं चिक्का हैब्बे। सिरिमने जलप्रपात, एक छोटे से शहर किंग के पास स्थित है जो ट्रैकिंग के लिए उपयुक्त है।

कल्लतिगिरि जलप्रपात केम्पणगुंडी से सिर्फ़ 10 कि.मी. पर स्थित है। मनमोहक एवं भव्य प्राकृतिक सौंदर्य के बीच चंद्रा द्रोणा पर्वत शिखर से जलप्रपात 122 मीटर की ऊँचाई से गिरता है। यहां पुरातन वीरभद्र मंदिर है जो महादेव को समर्पित है और चट्टानों के बीच निर्मित है। इस मंदिर में जलप्रपात को पार करके ही पहुँचा जा सकता है।

नीलाकुरुंजि फूल बारह वर्षों में एक ही बार खिलते हैं और अगर आप सौभाग्यशाली हैं तो इन सम्मोहक नीललोहित फूलों को निहारने का मौका मिल सकता है, जहां एक समय आदिवासियों की ही पहुँच थी। ये फूल पूरे पर्वत शिखर को ढूँके हुए हैं। जब यह खिलता है तो ऐसा प्रतीत होता है मानों प्रकृति ने पूरे पर्वत शिखर को बैंगनी रंग के गलीचे से ढँक दिया हो। अप्रैल एवं मई के महीनों में ये फूल खिलते हैं।

चिकमगलूर पृथ्वी पर स्वर्ग है। यह प्रकृति प्रेमियों, धार्मिक व्यक्तियों और जोखिम भरे खेलों में रुचि रखने वालों लिए एक परिपूर्ण स्थान है। अतः अपने अवकाश के लिए इस स्थान की यात्रा पर अवश्य विचार करें।



मो. हमजा अंसारी
वैज्ञा./इंजी. एसई
द्र.नो.प्र.कॉ., बैंगलूरु

कशमकश



रोज़ मरना है रोज़ जीना है
दर्द व शम को ही रोज़ पीना है
मेरी मुश्किल को ही बयाँ करता
मेरे माथे पे जो पसीना है
चार दिन चांदनी में गुज़री थी
अब अमावस्या का महीना है
साहिलों की उम्मीद क्या रखूँ
बीच भंवरों में जब सफीना है
आइना देखूँ तो ख्याल आए
क्या ये जीना भी कोई जीना है
कुछ तो हिम्मत करो 'समर' अब भी
चाक जर्खाँ को फिर से सिना है

25.03.2021 को निदेशक महोदय द्वारा विद्युत नोदन प्रणाली के
केथोड, फीड प्रणाली एवं परीक्षण प्रयोगशाला का निरीक्षण



यंत्रीकृत रासायणिक उपचार सुविधा का उद्घाटन



25 वर्ष की सेवा पूरी होने पर बधाई



हिंदी कार्यशाला प्रमाण पत्र वितरण



हिंदी कार्यशाला प्रमाण पत्र वितरण



महामारी, 3D प्रिंटिंग और हम!

श्री राजीव वर्मा
वैज्ञा./इंजी. एसडी
द.नो.प्र.कॉ., वलियमला



बात 2015 की है जब काफी हर्षोल्लास और उम्मीद की नई किरण के साथ एलपीएससी का हिस्सा बना। दिल में कुछ नया करने की चाह और इस अनजानी सी राह में मैं अकेला अपने पॉकेट में कॉलेज वाले दिनों के कुछ तकनीक और तरकीब लेकर निकल पड़ा था। कुछ दूर चलने पर ही पता चला कि यहां मेरे जैसे तमाम हैं और सभी तकनीकी विकास परियोजना के तहत कुछ ना कुछ उधेड़बुन के साथ नित नए प्रयोग में लगे हैं। इसी में एक में भी शामिल हुआ और योगात्मक विनिर्माण (3D प्रिंटिंग) के विचार के साथ अपना प्रस्ताव लेकर महाप्रबंधक श्री ए. अलेक्स के समक्ष हाजिर हुआ और उनको देखकर ऐसा महसूस हुआ, मानो वह कर रहे हों कि कुआं खुद प्यासे के पास चल कर आया है, जैसा कि श्री ए. अलेक्स एक होनहार, जिज्ञासु और तजुर्बेदार समझ के साथ नई तरकीब और तकनीक को 4 गुना बढ़ा दे, ऐसे त्वरक के समान हैं और ऐसा ही त्वरक मेरे अलग तकनीक को मुकाम तक उड़ान भरने के लिए अतिअवश्यक था। जब उनके सामने मैंने अपने विचार प्रकट किए तब उन्होंने बहुत ही सहजतापूर्वक मुझे यह समझाया कि इस पथरीली जमीन को समतल करके राह कैसे बनानी है। फिर क्या था! मैं भी उनके निर्देशानुसार चल पड़ा।

कहते हैं ना कि हर रात के बाद दिन और असफलताओं के बाद सफलता जरूर हासिल होती है। ऐसे ही कुछ प्रमुख यंत्रों के विशेष भाग के बार-बार असफलताओं के कारण पूरे एलपीएससी में गहमागहमी का माहौल था और सभी की उम्मीद भरी निगाहें हमारे टीम की तरफ थीं। ऐसे समय में हमारी टीम ने दो-तीन संभावित प्रस्ताव रखे और हमारे प्रस्ताव को प्रमुख समिति द्वारा मंजूरी हासिल हुई। इसी मंजूरी का एक हिस्सा 3D प्रिंटिंग था और मंजूरी का इंतजार खत्म होते ही, हम सब कारवां लेकर निकल पड़े।

इसी बीच विश्व में महामारी फैल गई और चारों तरफ मौत का खेल शुरू हो गया था। यातायात के सभी साधन बंद कर दिए गए थे और इंसान इंसान से डरने लगा था। जो जिस जगह थे वहां फंस चुके थे और ऐसे में फंसा हुआ था, हमारा विशेष यंत्र डाकघर में। जिसके पहुंचाने की जिम्मेदारी से सभी कतरा रहे थे। लाख कोशिशों के बावजूद भी कई सूरज ढल चुके थे पर जो नहीं ढल रहा था, वह थी हमारी

व्याकुलता, यंत्र को लेकर जो 3D प्रिंटिंग द्वारा बनाया गया था।

इसी भयानक महामारी के बीच एक और ढलते सूरज के बक्त मैं और एलेक्स महोदय डाक घर पहुंच चुके थे। अपनी व्याकुलता को मंजिल से मिलाने, मानो जमाने बाद किसी अपने की जमानत करवाने। आखिरकार वो दिन आ ही गया था जिसका सपना हम कभी मिलकर देखा करते थे। आज वह दो बड़े-बड़े डिङ्गों के साथ हकीकत स्वरूप महाप्रबंधक के (BREEZA) ब्रिजा में था।

बात यहीं खत्म नहीं हुई। समस्याओं का सिलसिला लगातार बना हुआ था और इसे सुलझाने के दरम्यान एक नई समस्या जो कि यंत्र के विशेष भाग की योग्यता की आई जिसका समाधान श्री ए. एलेक्स के तजुर्बे और एलपीएससी के वरिष्ठ लैब असिस्टेंट (सहायक प्रयोगशाला) के हुनर द्वारा किया गया।

सभी योग्यताओं की पूर्ण पुष्टि करते हुए हमारे यंत्र के विशेष भाग को यंत्र में एकीकरण के लिए मंजूरी प्रदान की गई। जहां एक ओर व्यापक महामारी में लोगों की रीढ़ टूटने लगी थी। हम मिलकर बहुत बड़े तकनीकी रीढ़ को मजबूती प्रदान करने में सफल हुए और इसी के साथ एलपीएससी में खुशी की लहर दौड़ गई।



निदेशक द्वारा एम टी ई जी स्वच्छ कक्ष का निरीक्षण



उच्च शुद्धता उपकरण लेथ का उद्घाटन





राकेश कुमार
वरि. तकनीकी सहायक
द्र.नो.प्र.कै., बंगलूरु

समर्पण

नन्दी गाय के चेहरे पर खुशी साफ झलक रही थी, भला क्यों नहीं? सामने जो, हरी-भरी व लम्बी-ताजी घास लहलहा रही थी। ऊँची गर्दन कर नन्दी दूर तक निहारती है- दूर-दूर तक घास-ही-घास घने जंगल, जहाँ पीपल की ठण्डी छाँव मन को लुभा रही थी। इस दूर्शय को देख, नन्दी खुद को एक क्षण भी रोक नहीं पाती, किंतु वहाँ पहुँचने के लिए उसे नदी पार करना होगा। नदी की गहराई व तेज जल की धारा डरावनी साबित हो रही थी। नन्दी की हिम्मत डग-मगा रही थी।

दूर बैठे दिनू, नन्दी के मालिक, स्थिति भाँपने की कोशिश में लगा था। उसे भी समझ में नहीं आ रहा था, कि आखिर कैसे नदी पार की जाए। हालाँकि, दिनू अपने नन्दी का केवल देख-भाल ही नहीं, बल्कि हर इच्छा पूरी करने की भरपूर कोशिश करता। घास-भूसा व अनाज की पर्याप्त उपलब्धता एवं दिनू के कठिन परिश्रम व लगाव के कारण, नन्दी काफी हष्ट-पुष्ट व सुन्दर दिखती थी। गाँव में नन्दी आकर्षण का केंद्र बनी हुई थी। लोग दिनू के नन्दी की खूब प्रशंसा करते। दिनू भी उससे अपने परिवार के सदस्य के समान पेश आते। एक दूसरे के प्रति असीम प्रेम व लगाव, उन्हें कुछ क्षण के लिए भी एक दूसरे से अलग नहीं होने देते।

नन्दी के नदी के दूसरे पार जाने व हरी घास का आनंद लेने की चाहत और भी बढ़ गयी थी। दिनू ने कुछ बांस के तने आपस में जोड़,

नदी पार करने की युक्ति बनाई, किंतु तेज बहाव में टिक न सकी। फिर उसने नाव का इंतजाम किया, पर वह भी विफल रहा। इसी प्रकार उसने कई तरकीबें अपनाई, पर कोई फायदा नहीं हुआ, पर दिनू हिम्मत नहीं हारा। वह मन ही मन नये तरीके सोच ही रहा था कि तभी अचानक एक खूंखार बाघ सामने आ खड़ा होता है। बाघ को देखते ही, मानों दोनों की सांसें ही रुक गई हों। बाघ नन्दी की ओर आगे बढ़ता है, और अगले ही पल, नन्दी के ऊपर हमला कर देता है। दिनू अपने जान की परवाह किये बगैर, नन्दी की रक्षा के लिए बाघ से लड़ने लगता है।

दिनू की हिम्मत व समर्पण को देख, बाघ रूपी ईश्वर का दिल पिघल उठता है और ईश्वर अपने वास्तविक रूप में प्रकट होते हैं। दिनू के नन्दी के प्रति प्रगाढ़ प्रेम व समर्पण को देख ईश्वर प्रसन्न होते हैं, और कहते हैं-

दिनू तुमने अग्नि-परीक्षा पास कर ली है।

अगले ही पल, ईश्वर की दिव्य शक्ति से नदी के ऊपर पुल बन जाती है। दिनू ईश्वर को हाथ जोरकर धन्यवाद कहता है और दोनों नदी के दूसरे ओर चले जाते हैं।

निष्कर्ष: सच्चे प्रेम, ईमानदारी एवं समर्पण से किया गया प्रयास कभी विफल नहीं होता।





अभिनव उपाध्याय
वैज्ञा./इंजी. एससी
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

आवाज़ का जादू

वह चला जा रहा देखो, हाथी-सी मस्ती में
न रहा ये प्रचंड साहस, किसी को बस्ती में
जीवन की पगडण्डी पे सुर-पहिया चलाये जा रहा
पराशक्ति का रसपूर्ण ध्यान नाद गाये जा रहा
हो स्तब्ध देख ले जो, यह ऊर्जा स्वर्णिम रेखा
मातृशक्ति धरा की गोद में यह मनचाहा लेखा।
सहर्ष भावों की अविरल धारा बहती जाती है
भाईचारे की शीतल लौ समस्त द्वेष जलाती है
हुए वशीकृत अनुपम दृश्य से मर्त्य नर नारी
सांसारिक मोह माया पर प्रेम तेज पड़ा भारी॥

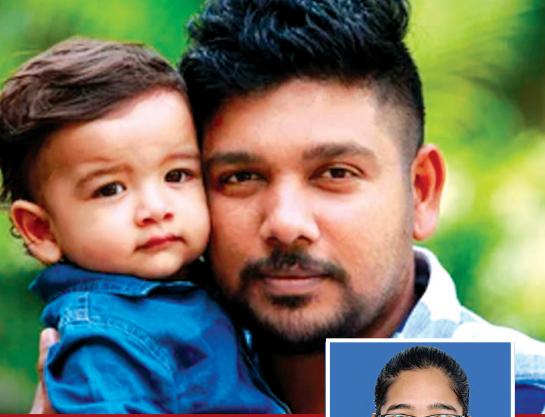
निस्संदेह ही भविष्य पर सदा रहा विश्वास
परन्तु न रखी कभी तनिक भर भी आस
भोले-भाले चेहरे पर उदासीनता खिली है
हँसकर कष्ट उठाने की सदा दीक्षा मिली है।
देवों को भी अपेक्षित नहीं यह मनुष्य-राम
करी मंत्रणा लगाएँ अंकुश, इस यात्रा परमधाम
जीवन में आ गयी है महाप्रलय की बेला
प्रभु ने आत्मा की कठपुतली से खेल खेला
परमपिता के सौजन्य से धरा पे आई मीनाक्षी
चहुँओर अनेक मनुष्य होंगे इस वृतांत के साक्षी॥

एक दिवस बुला लिया दूरभाषा की तरंगों ने
कुटिल योजना बनायी थी इंद्रधनुष के रंगों ने
अविस्मरणीय ध्वनि उसके कानों में गूँजी
जैसे लुटा रहे हों विष्णु तीनों लोकों की पूँजी।
अकस्मात् श्रवण हुई आवाज़ ने किया मोहित

मृदु स्वर के मधु से मदमस्त हुआ शोणित
कर्णों के रास्ते मीठा अमृत टपकता जा रहा
सागर समान हृदय कलश भी भरता जा रहा
अब डगमगाते कदमों से बेखुदी में खो रहा है
बसंत की पहली फुहार में बंदगी बो रहा है॥

वाणी जैसे घुटी हुई हो सूरदास की भक्ति
आभा जैसे चमक रही मीरा की प्रेम-शक्ति,
लज्जा छुपी शरारत करते बिहारी लाल के दोहे
नयनों के चपलता से राधिका श्याम मन मोहे,
वृन्दावन में मल्हार गा रहे हरिदास का सुख
कबीर की अक्षय महाचेतना की ओर उन्मुख,
व्यवहार से प्रत्याशित होता रहीम सरीखा ज्ञान
ब्रज गोकुल उद्देश्य रहे ज्यों रसखान के ध्यान,
शुकदेव दिए परीक्षित को भागवत का उपदेश
असंघ्य रूप में बतला रहे कृष्ण गीता का सन्देश॥

सुना है कि वो स्वयं आँगी आँगन में मिलने
फैली हवा में खुशबू, कलियाँ लगीं खिलने
शुभ अवसर मनाने हेतु मिष्ठान बाँट रही हैं
आखिर क्यों उसके भवसागर को पाट रही हैं
व्याकुलता से बढ़ी धड़कन कुछ कहना चाहती है
उनके आने पे थम कर, क्यों संकुचाई जाती है
शब्द नहीं निकले, केवल सोम सुरापान किया
उनकी पवित्र सच्चाई का, क्षण-क्षण मान किया
न जाने इस स्वरपाश से कभी मुक्त हो पायेगा...
या निश्छल प्रेम की पराकाष्ठा पार कर जायेगा?



पिता

कुमारी शाल
हिंदी टंकक,
द्र.नो.प्र.के., बैगलूरु

माँ तो माँ होती है पिता भी कम नहीं,
जिसके छाँव के नीचे कोई गम नहीं...

सारी मुसीबतें अपने ऊपर लेते
बच्चों को एहसास भी न होने देते
ओवर टाइम कर-कर के
सबके लिए नये तोहफे लेते...

माँ तो माँ होती है पिता भी कम नहीं
जिसके छाँव के नीचे कोई गम नहीं

खुद दो जोड़े कपड़े में
सारा साल निकाल लें
लेकिन हर त्योहार में बच्चों को
नये नये कपड़े दिलाए

माँ तो माँ होती है पिता भी कम नहीं
जिसके छाँव के नीचे कोई गम नहीं

ना आँसू दिखा सके ना प्यार
हर मुसीबत में बन जाए दीवार
एक तरफ बेटा बन के कर्तव्य निभाए
दूसरी तरफ पिता का फ़र्ज निभाए

माँ तो माँ होती है पिता भी कम नहीं
जिसके छाँव के नीचे कोई गम नहीं

हमें माँ का प्यार दिखता है, पिता का त्याग नहीं
जरूरत है उन्हें भी गले लगाकर ये कहने की
माँ तो माँ होती है पिता भी कम नहीं
जिसके छाँव के नीचे कोई गम नहीं...

सर्दी दस्तक दे रही



राकेश कुमार
वरि. तकनीकी सहायक
द्र.नो.प्र.के., बैगलूरु

पूस माह की शुरुआत हुई,
मौसम ने करवट बदली,
सर्द भरी सी हवा चली,
मीठी-मीठी सी सूई चुभी,
सर्दी दस्तक दे रही।

ओस की बूँदें छोटी-छोटी सी,
टप-टप, टप-टप धास को चूमती,
सुबह की किरणें छटा बिखरती,
मोती-मोती सी बिखड़ी पड़ी,
सर्दी दस्तक दे रही।

धूप हमें आकर्षित करती,
चाय की प्याली खूब लुभाती,
तिल-तिलकूट हमें ललचाती,
मूँगफली भी खूब है भाती,
सर्दी दस्तक दे रही।

रातें लम्बी, होते दिन छोटे,
सूरज दादा भी देर से जगते,
गर्म रजाइ मन को भाये,
आलस घर-घर पैर पसारे,
सर्दी दस्तक दे रही।

सर पे टोपी, पैर में जूते,
फिर भी कांपते पांव हमारे,
पूस की रातें डरा रही,
सर्दी दस्तक दे रही।



कर्नाटक की दिलचस्प जगहें



सरस्वती के एन
नियंत्रक, डॉ. नो. प्र. कैं.



चित्र 1: कर्नाटक

अरब सागर के तट पर स्थित कर्नाटक राज्य भारत के दक्षिण पश्चिम में है। प्रारंभ में यह मैसूर के नाम से प्रसिद्ध था, जिसे 1973 में कर्नाटक नाम से पुकारा गया। शॉपिंग एवं नाइट-लाइफ के लिए मशहूर इसकी राजधानी बैंगलूरु एक हाईटेक-हब है। पूर्ववर्ती राजाओं के सिंहासन दक्षिण-पश्चिम में स्थित मैसूर में भव्य मंदिरों के साथ-साथ मैसूर राजमहल भी है। हंपी, पूर्व काल में विजय नगर साम्राज्य की राजधानी थी, जहाँ आज भी हिंदू मंदिर, हस्ती-शाला एवं पत्थरों के रथ के खंडहर देखने को मिलते हैं। उत्कृष्ट शिक्षण संस्थान/कॉलेज/आईटी कंपनियां, उद्योग आदि में विभिन्न श्रेणी की नौकरियों के अवसर लोगों को कर्नाटक में प्रवास करने हेतु विवश करते हैं।

सर्वोत्कृष्ट ऐतिहासिक राज्य कर्नाटक, भारत के पर्यटन नक्शे पर महत्वपूर्ण स्थान रखता है। कन्नड़ तट, पश्चिमी घाट एवं दक्षिण के पठारों से घिरा यह राज्य अपने जंगलों, पर्वतों, मंदिरों, गुफाओं समुद्र-तटों, नदी के किनारों, सरोवरों, कॉफी बागानों, जल प्रपातों से सुशोभित है। अपने परिजनों के साथ विस्मयकारी दुनिया का द्वार खोलने के लिए आप कर्नाटक की यात्रा कर सकते हैं। कर्नाटक के कुछ दर्शनीय स्थल निम्न प्रकार हैं।



चित्र 2: बैंगलूरु

बैंगलूरु एवं नंदी हिल्स

बैंगलूरु एक सांस्कृतिक शहर है और पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल भी। यह देश का आईटी हब है जो सर्वदेशीय परिवेश प्रदान करता है और लोग देश के विभिन्न भागों से नौकरी के लिए आते हैं और यहाँ का होकर रह जाते हैं। बैंगलूरु का मौसम बेहद खास है। यहाँ पूरे वर्ष मौसम खुशनुमा और सुखद बना रहता है। बैंगलूरु में स्थित वन्यजीव उद्यान-बन्नेरघट्टा राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, प्राकृतिक दृश्य, ऐतिहासिक महत्व के खंडहर, संग्रहालय, गिरजाघर, वास्तुशिल्प आदि अत्यंत विस्मयकारी और मनोहारी दृश्य प्रस्तुत करते हैं। और इससे बढ़कर यहाँ स्थित सुखप्रद और आरामदायक विल्लों में कौन छुट्टी बिताना नहीं चाहेगा !

नंदी हिल्स बैंगलूरु के पूर्व में स्थित है तथा यात्रियों को आनंदप्रद यात्रा करने का अवसर प्रदान करता है। यहाँ शांत सरोवर, आलिशान किले, पुरातन देवालय आदि विस्मयकारी परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं तथा यह ग्रीष्म काल में सप्ताहांत बिताने के लिए कर्नाटक के महत्वपूर्ण स्थलों में से एक है। पहाड़ियों के शिखर से बादलों, कोहरों और कुहासों के बीच-बीच, सूर्योदय का दीदार आत्मा को तृप्त करता है। इस जगह का ऐतिहासिक महत्व भी है। इटू सुलतान एवं उनकी शाही सेना ने पलायन के दौरान नंदी हिल्स में आश्रय लिया था।



चित्र 3: नंदी हिल्स

कूर्ग

एक अनोखा, किंतु उतना प्रसिद्ध न होने वाले कूर्ग को सही मायने में “भारत का स्कॉल्टलैंड” कहा जा सकता है। इसका असीम सौंदर्य, इसे सबसे अलग और मंत्रमुग्धकारी पर्यटक स्थल बनाता है। कॉफी बागानों से सुरक्षित, संपन्न तथा अत्यलंकृत हरी-भरी पहाड़ियाँ, हरी-भरी पहाड़ियों के बीच से नीचे गिरने वाले जलप्रपात, कूर्ग में आने वाले प्रत्येक पर्यटक को सम्मोहित करते हैं। कॉफी एवं मसाले के बागानों के घुमावदार रास्तों पर रोमांचक ट्रैक, हाथी कैप, नदियों में नौका विहार, वन्य जीव अभ्यारण्य, मठ, स्थानीय मेडिगिरि बाजार आदि कुल मिलाकर छुट्टियों को और सरस तथा आनंदप्रद बनाते हैं।



चित्र 4 - कूर्ग

जोग जलप्रपात

जोग जलप्रपात, जो गेरसोपा जलप्रपात (Gersoppa Falls) तथा जोगड़ा गुंडी के नाम से भी प्रसिद्ध है, देश का दूसरा उच्चतम जलप्रपात है। शरावती जलप्रपात के 253 मी.(830 फीट) से उत्पन्न यह जलप्रपात मुख्यतः चार हिस्सों में विभाजित है - राजा, रॉकेट, रानी एवं रोअर। यह कहना गलत नहीं होगा कि यह बहुत ही मोहक एवं विस्मयकारी, सुंदर पिकनिक स्पॉट है। राज्य पर्यटन विभाग ने प्रेक्षणस्थल से निम्नतल तक 1500 सोपानों के साथ सीढ़ी का निर्माण किया है। यह वही स्थान है जहां से जलप्रपात का अनुपम सौंदर्य नज़दीक से देखने को मिलता है।



चित्र 5 – जोग जलप्रपात

शिमोगा

शिमोगा, कर्नाटक की सांस्कृतिक राजधानी होने के साथ-साथ एक सतरंगी दृश्यों से परिपूर्ण स्थान है, जो उर्वर भूमि, मोहक जलप्रपातों तथा हरे-भरे बनों से संपन्न है। चारों तरफ हरियाली तथा शांत परिवेश इसे और अधिक स्मरणीय बनाते हैं। तुंगभद्रा, शरावती, वरदा, कुमदवती नदियों ने यहां नदी की चित्रोपम घाटी बना दी है। ऐतिहासिक तौर पर इसका यह महत्व है कि यहाँ कंदब, गंगा, चालुक्य, राष्ट्रकूट तथा विजयनगर के शासकों ने शासन किया था।



चित्र 6 – शिमोगा

मंगलूर तथा उडुपी

शहर की व्यस्तता एवं नीरसता से बचने के लिए, छोटे साप्ताहिक यात्राओं के लिए मंगलूर एक अनुपम पर्यटक स्थल है। यह शहर अरब सागर तट से मिलने वाली नदियों - नेत्रावती तथा गुरुपुरा के नदीमुख संगम पर स्थित है।

मंगलूर में समुद्रतट पर टहलना, धूप-स्नान करना, कुछ चटपटा खाना, स्वादिष्ट सीफूड का आस्वादन करना, सूर्योदय एवं सूर्यास्त देखना तथा पोत-कारखाने का दौरा करना आदि - पर्यटकों को बहुत भाते हैं। सेंट सेबास्टियन चर्च तथा चमत्कारी महिला का चर्च देखने योग्य कुछ महत्वपूर्ण स्थल हैं।



चित्र 7 - मंगलूर

स्वर्ग-तुल्य, हरी-भरी, आनंदमयी उडुपी, धुंधले पश्चिमी घाट एवं प्राचीन अरब सागर के बीचो-बीच स्थित है। उडुपी को स्थानीय भाषा में ओडुपी भी कहा जाता है। यह अपने मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है जहाँ मुख्यतः श्री कृष्ण मंदिर की भव्यता अतुलनीय है। यह अपनी वास्तुकला, लकड़ियों पर की गई कारीगरी, समुद्र तट, पत्थर पर नक्काशी, यक्षगान आदि के लिए जाना जाता है।



चित्र 8 - उडुपी

कारवार

यह बिल्कुल ही अनुचित होगा अगर हम चित्रोपम शहर कारवार का उल्लेख न करें। यह कर्नाटक-गोवा सीमा पर समुद्र के बीच स्थित एक गंतव्य है। यह शहर उतना प्रख्यात न होते हुए भी उत्तिके पथ पर अग्रसर है तथा यहाँ एक बार सफर करना तो बनता है। समुद्र तट का चुम्बन करती हुई सूर्य-किरणों, दिव्य और भव्य मंदिरें, आलिशान किले आदि पर्यटकों को मंत्र-मुग्ध कर देते हैं।

स्थानीय ग्रामीण लोगों के बीच यह शहर 'कोण' के नाम से प्रसिद्ध है, जो काली नदी के आसपास के स्थान के कोने को सूचित करता है। कारवार का अपना आनंदकारी सौंदर्य है। पश्चिमीघाट को चारों तरफ से घेरने वाले हरे-भरे पहाड़ इस जगह के सौंदर्य में चार चाँद लगा देते हैं।



चित्र 9 – कारवार

हंपी

हंपी एक छोटा-सा कबड़ि गाँव है जो तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित है तथा अब यूनिस्को ने इसे विश्व की धरोहर के रूप में मान्यता दी है। यह गाँव विजयनगर राज्य के ऐतिहासिक अवशेषों को संजोये हुए है। पत्थरों से भरा प्रदेश तथा इसकी प्राकृतिक विरान सुंदरता इस शहर को एक उचित पर्यटक स्थल बनाती है।

इतिहास-प्रेमी तथा वास्तुकला विद्वान, हजारों की संख्या में पूरे वर्ष यहां आते रहते हैं। अन्य उत्सुक यात्री, उस युग के कुशल कारीगरों के शिल्पकौशल पर मंत्र-मुग्ध एवं विस्मित हो जाते हैं। हंपी के वास्तु की संरचना में लगभग 500 अवशेष हैं जो देखने योग्य हैं।

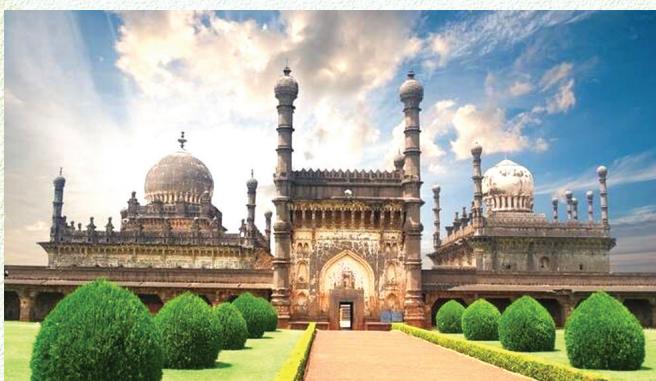


चित्र 10 - हंपी

बिजापुर

मनमोहक एवं प्रख्यात ऐतिहासिक शहर, बिजापुर डेक्कन के इस्लामी युग का गौरव गान करता है और यही गौरवशाली इतिहास इसे बहुत ही सुंदर पर्यटन स्थल बनाता है। बिजापुर का 2021 में विजापुर के नाम से पुनः नामकरण किया गया। विजापुर वह सांस्कृतिक हब है जहां कई मस्जिदें, मकबरे, महल किले आदि देखने को मिलते हैं।

बिजापुर, कर्नाटक एवं शैविसम में प्रख्यात पर्यटक स्थल है।

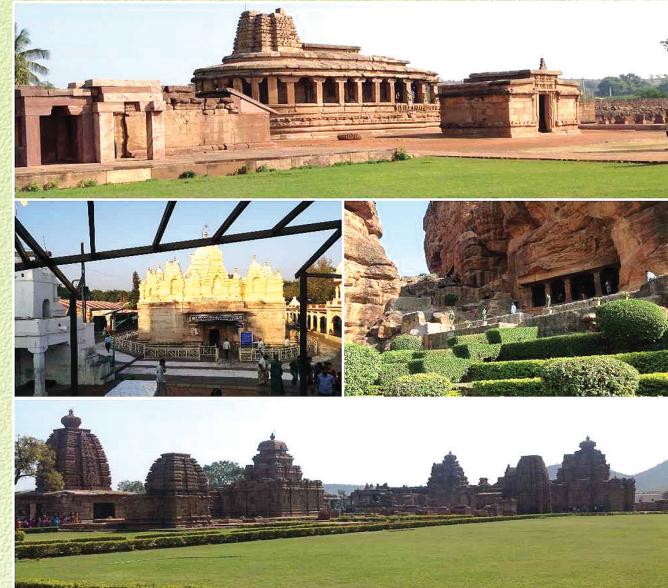


चित्र 11 - बिजापुर

बादामी, ऐहोल और पट्टाडकल

धूल से लिपटे रास्ते, बंजर स्थलाकृतियाँ, लाल पत्थर की वास्तुकलाएँ, खड़ी चट्ठनें आदि बादामी, ऐहोल और पट्टाडकल, कर्नाटक के उत्तर में स्थित सबसे बेहतरीन जगहों को चारों ओर से खूबसूरत बनाती हैं। यह यूनेस्को द्वारा घोषित ऐतिहासिक विरासत स्थल है।

बादामी के सदियों पुराने मंदिरों, गुफाओं एवं किलों का भ्रमण करते हुए आप चालुक्य काल के मलबे एवं खंडहर पाएंगे। ऐहोल का ऐतिहासिक महत्व है तथा यह हिंदू रॉक वास्तुकला क्रेडल के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा पट्टाडकल में विशिष्ट रूप से डिजाइन किए गए मंदिर हैं।



चित्र 12- बादामी, ऐहोल और पट्टाडकल

चित्रदुर्ग किला

चित्रदुर्ग शहर में स्थित स्मारक का पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक महत्व है। यह किला, चालुक्य साम्राज्य से ओनाके ओबावा के प्रसिद्ध काल के अनुश्रूत इतिहास तक का साक्षी बना है। इस किले का उल्लेख महाभारत महाकाव्य में भी है।

चित्रदुर्ग किला या चीतलदुर्ग किला जैसा कि स्थानीय रूप से जाना जाता है, एक मज़बूत ढाँचा है जो कई पहाड़ियों तथा लगभग समतल घाटी को निहार रहे शिखर को जोड़ता है।



चित्र 13 - चित्रदुर्ग किला

मैसूर एवं श्रीरंगा पट्टना

मैसूर सबसे बड़ा शाही राज्य है जहाँ कई पर्यटन स्थल हैं जिससे आप इस स्थान के शाही इतिहास को जान सकते हैं। यह न केवल विश्व

के यशस्वी महलों और इतिहास की नगरी है, बल्कि मंदिरों, गिरजाघरों, मैसूर के बगीचों की नगरी है, जो पर्यटकों को अवश्य आश्चर्य चकित कर देगी।

मैसूर अपनी रेशम साड़ियों, जटिल वास्तुकला, चंदन, शाही विरासत एवं योग के लिए विख्यात है। जहां तक शहर का सबसे मुख्य आकर्षण मैसूर महल है, यह शाही शहर के सौंदर्य एवं मनोरमता की झलक देता है। व्यापक वास्तुकला, जटिल नक्काशी तथा रंगीन काँच की खिड़कियाँ अपने-आप में चमत्कार से कम नहीं हैं। यह शहर आपको कभी भी निराश नहीं करेगा। विख्यात मैसूर महल, मैसूर चिड़िया-घर, श्री चामुंडेश्वरी मंदिर, वृदावन गार्डन, जगन मोहन महल आदि प्रख्यात पर्यटन स्थल हैं।

कभी टीपू सुलतान के अधीन रही श्रीरंगा पटना, मैसूर की राजधानी थी तथा यहाँ उनकी कई महत्वपूर्ण पैतृक संपत्तियाँ स्थित थीं। यह स्थान मनमोहक झरनों और हरे-भरे प्राकृतिक दृश्यों से घिरा हुआ है। श्री रंगानाथ स्वामी मंदिर, दरिया दौलत महल आदि देखने लायक स्थान हैं।



चित्र 14 - मैसूर महल



चित्र 15 - श्रीरंगा पटना

नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान

समृद्ध बनस्पतियों और जीवों के भंडार में वन्य जीवन का अन्वेषण करें, नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान जंगल के शानदार वन्य जीवों को देखने का एक आदर्श स्थान है। एशियाई हाथी, पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों और इंडियन बाइसन जैसे जंगली जानवरों को उनके प्राकृतिक आवास में देखें या बस अपने आस-पास की प्रकृति को अपने में समेट लें।

वन्य जीवन के अलावा, पार्क में बहुत सारे सांस्कृतिक और विरासत स्थल भी हैं। आप मंदिरों में शांति की तालाश कर सकते और शांति एवं सकारात्मकता में डूब सकते हैं। जब आप हलचल से दूर राहत चाहते हैं तो रास्ते में लुभावने झरनों को देखें।



चित्र 16 - नागरहोल

हासन, बेलूर हलेबिडू और श्रवणबेलगोला

हासन बैंगलूरु से 187 कि. मी. की दूरी पर मलनाड और मैदानी जिले में स्थित है। द्रविड़ शैली में बने मंदिरों की प्राचीन वास्तुकला और होयसल शैली की वास्तुकला अचंभित करने वाली है, जहाँ जटिल नक्काशी की गई है। इन मंदिरों को पूरा करने में लगभग 103 वर्ष लगे थे।

बेलूर, जो कभी होयसल साम्राज्य की प्राचीन राजधानी थी, यह प्राचीन शहर कर्नाटक का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है जहाँ भगवान विष्णु को समर्पित प्रसिद्ध चेत्राकेशव मंदिर स्थित है। कई मंदिरों की इस नगरी में कई भक्तगण देवताओं की पूजा-अर्चना के लिए तीर्थाटन करते हैं।

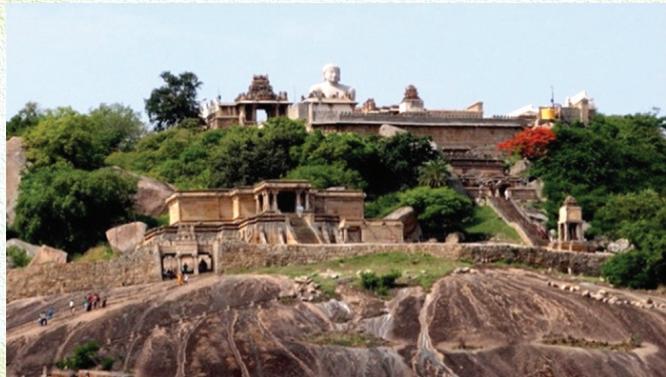
हलेबिडू, आपको शहर के बारे में बेहतर तरीके से जानने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेगा। हलेबिडू शहर में मूर्तियों और मंदिरों का अद्भुत संगम है। अपने आश्चर्यजनक जैन स्थलों और मंदिर परिसरों के कारण इस शहर को भारतीय वास्तुकला का रत्न भी माना जाता है। श्रवणबेलगोला, जैनों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल के रूप में जाना जाता है, इस मंदिर की ऊंचाई 57 मीटर है। यहाँ भगवान गोमतेश्वर की एक अखंड मूर्ति है, जिसे आमतौर पर बाहुबली की मूर्ति के रूप में जाना जाता है। हासन जिले में बैंगलूरु से लगभग 144 किमी दूर स्थित, यह मंदिर हर साल बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को आकर्षित करता है।



चित्र 17 - हासन



चित्र 18 - बेलूर हलेबिडू



चित्र 19 - श्रवणबेलगोला

तालकाडु

तालकाडु सबसे आश्चर्यजनक स्थानों में से एक है। यह स्थान अपने समृद्ध अतीत और सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। इसने चोल राजवंश, होयसला राजवंश, पल्लव राजवंश और विजयनगर राजवंश जैसे विभिन्न महान साम्राज्यों का उत्थान और पतन देखा है। भगवान शिव को समर्पित, यहां एक प्रसिद्ध वैद्यनाथेश्वर मंदिर है जहां साल भर बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं पर्यटक आते हैं। इसके अलावा, आप नदी पर कोरल राइड का भी आनंद ले सकते हैं या पिकनिक का आनंद ले सकते हैं।

अगुम्बे

अगुम्बे, दक्षिण के चिरापूंजी के रूप में भी जाना जाता है। अगुम्बे अपनी प्राकृतिक सुंदरता और बारिश के लिए मशहूर है। इस हिल स्टेशन पर मिरिस्टिका, लिस्टसिया जैसे कई दुर्लभ औषधीय पौधे पाए जाते हैं और यह वर्षावन संरक्षण के लिए भी जाना जाता है। यदि आप एक



चित्र 21- अगुम्बे



चित्र 20- तालकाडु

स्वास्थ्यवर्धक छुट्टी की तालाश में हैं तो शहरों की भीड़-भाड़ से दूर, यह एक आदर्श स्थान है। यहां के पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षणों में सोमेश्वर वन्यजीव अभ्यारण्य का ट्रैकिंग, रिवर राफिंग, हाइकिंग और बाइक राइडिंग आदि शामिल हैं।

मुरुदेश्वर, शृंगेरी, कोल्लूर, गोकर्ण आदि जैसे कई अन्य दर्शनीय स्थल हैं तथा इनकी सूची जारी रहेगी....

- गोकर्ण - शांत तटरेखा, दिलचस्प नाइटलाइफ, स्वादिष्ट सीफूड
- चिकमगलूर- कर्नाटक की कॉफी लैंड की यात्रा
- मुरुदेश्वर - आशीर्वाद मांगे।
- शृंगेरी - प्राचीन वास्तुकला में चमत्कार
- कुद्रेमुख - धूमने के लिए एक आदर्श स्थान।
- केम्मनगुंडी - शानदार नजारों वाला एक हिल-स्टेशन
- सकलेशपुर - एक खूबसूरत हिल स्टेशन
- मदिकेरी - प्रकृति की गोद में रहें

कर्नाटक के पर्यटन स्थल आकर्षक और मनमोहक हैं। इनमें से कुछ अत्यधिक प्रसिद्ध हैं, जबकि अन्य की सराहना नहीं की जाती है। राज्य की भौगोलिक स्थिति कर्नाटक में विविध पर्यटन स्थलों को सुनिश्चित करती है जो आपको अभिभूत करने के लिए पर्याप्त रूप से मनोरम हैं। इन जगहों पर आने वाला कोई भी पर्यटक जीवन भर अपनी यात्रा के मधुर क्षणों को संजो कर अवश्य रखेगा।



चित्र 22- नोंदन मुकुर



नरेन्द्र कुमार
वैज्ञा./इंजी. एसडी
द.नो.प्र.कै., बैंगलूरु



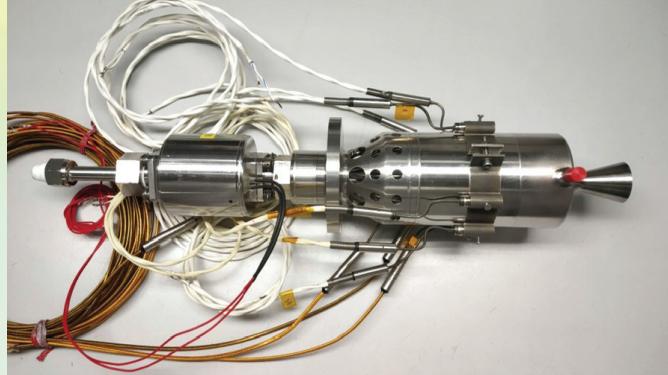
गगनयान के कर्मांदल मॉड्यूल के लिए हाइड्रोजन परॉक्साइड आधारित ग्रीन नोदन प्रणाली का विकास

भू-कक्षा में उपग्रह की अभिक्रिया नियंत्रण प्रणाली (आरसीएस), हाइड्रोजीन आधारित एकल नोदक प्रणाली का उपयोग करता है। हाइड्रोजीन नोदक, स्वभाव से खतरनाक, जहरीला एवं कार्सिनोजनिक होने के कारण इसके संचालन तथा परीक्षण के लिए अत्यधिक सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है। ग्रीन नोदक से उत्पादन लागत, भंडारण और रख-रखाव में अत्यधिक कमी आई है तथा इससे जहरीले नोदकों के प्रतिस्थापन का मंच तैयार हो चुका है। ग्रीन एकल नोदकों में से एक नोदक जो काफी रुचिकर है वह H_2O_2 नोदक है, जिसके अत्यधिक महत्व को परखा जा सकता है।

गगनयान अभियान के आरसीएस के कर्मांदल मॉड्यूल के लिए हाइड्रोजन परॉक्साइड आधारित एकल नोदन प्रणाली प्रस्तावित है। नोदन प्रणाली में 17 विभिन्न प्रकार के घटक शामिल हैं, जिनमें से 5 नये घटक विकसित हैं तथा 2 घटकों के डिजाइन में परिवर्तन और पुनः परीक्षण की आवश्यकता है।

एकल नोदक प्रणोदक पर आधारित हाइड्रोजन परॉक्साइड का विकास, TDP कार्यक्रम के भाग के रूप में शुरू किया गया था। 10N H_2O_2 आधारित एकल नोदक प्रणोदक की अभिकल्पना तथा विकास किया गया तथा 10N H_2O_2 प्रणोदकों के छह विभिन्न विन्यासों की प्राप्ति की गई तथा 90% हाइड्रोजन परॉक्साइड के साथ 89 संख्या में हॉट फायरिंग प्रयोग किए गए। प्रणोदक में, दो विभिन्न प्रकार के उत्प्रेरकों-सिल्वर एवं प्लैटिनम उत्प्रेरकों के प्रयोग किये गये हैं। प्लैटिनम जाल उत्प्रेरक ने अनुकूलतम 10N प्रणोदक विन्यास के साथ अनुकूल वियोजन दर्शाया है और आगे के परीक्षण तथा अंतरिक्ष अनुप्रयोग के प्रयोग के लिए आशाजनक निष्पादन दर्शाया है। 50s. के स्थायी ज्वालन के दौरान प्राप्त प्रणोद 9.4N तथा 1sp 150s है।

10N H_2O_2 प्रणोदक के सफल विकास से प्राप्त अनुभव के आधार पर 100N प्रणोदन की अभिकल्पना की गई। प्रणोदक चैम्बर, अंतःक्षेपित्र तथा नोजल की अभिकल्पना 75g/s के नोदक प्रवाह दर के लिए की गई। अंतःक्षेपित्र की अभिकल्पना उत्प्रेरक संस्तर पर नोदक के 34 सं. में अंतःक्षेपित्र के समान वितरण को प्रदान करने के लिए किया गया, 10w के 6 उत्प्रेरक संस्तर तापकों का विकास किया गया है तथा ज्वालन शुरू करने से पहले प्रणोदक उत्प्रेरक संस्तर तापमान को 150 डिग्री सेल्सियस पर बनाए रखने हेतु उपयोग किया जाता है। प्रणोदक ज्वालन के दौरान उत्प्रेरक संस्तर कक्ष को मापने के लिए K-टाइप तापयुग्म का उपयोग किया जाता है। 100N प्रणोदक का अनुप्रस्थ काट चित्र-1 में दर्शाया गया है।



चित्र-1 100N H_2O_2 प्रणोदक का अनुप्रस्थ काट

100N प्रणोदक का प्रथम विकासात्मक हार्डवेयर, सिल्वर उत्प्रेरक के साथ बनाया गया है। 34 अंतःक्षेपित्रों का, प्रणोदक स्थापक संरचना के साथ निर्वात ब्रेंजिंग की गई है। द्रनोप्रकें(बै.) में ग्रीन नोदन प्रणोदकों के ज्वालन के लिए एक विशिष्ट समुद्र-तल प्रणोदक ज्वालन सुविधा स्थापित की गई है। 100N प्रणोदक के विन्यास-1 का 90% हाइड्रोजन परॉक्साइड के साथ तप्त ज्वालन परीक्षण किया गया। नोदक का वियोजन प्रथम हार्डवेयर में सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया गया तथापि, प्रणोदक कार्यक्षमता 05s के उपरांत घट गई। प्लस मोड के दौरान कार्यक्षमता संतोषजनक है, तथापि पुनरावृत्त ज्वालन के साथ चैम्बर दाब में घटाव पाया गया।

दूसरे विकासोन्मुख हार्डवेयर में, प्लैटिनम जाल उत्प्रेरक का उपयोग किया गया है।

90% H_2O_2 प्रणोदक के साथ 100N H_2O_2 प्रणोदक का तप्त ज्वालन परीक्षण किया गया। ज्वालन के दौरान प्रणोदक निष्पादन मानदंडों, जैसे-अंतःक्षेपण दाब, कक्ष दाब, नोदक प्रवाह दर तथा कक्ष तापमान की निगरानी की जाती है। कुल 8 स्थायी अवस्था ज्वालन (एसएसएफ) तथा 2 प्लस मोड ज्वालन (पीएमएफ) किये गए। लगातार एकल ज्वालन की अधिकतम अवधि 15s है तथा पीएमएफ में प्लस ज्वालित, प्लसों की अधिकतम संख्या 50 है। 107.5N प्रणोद तथा 149 sec. के विशिष्ट आवेग के साथ अभिलक्षित विनिर्देशों को पूरा कर सभी ज्वालनों में प्रणोदक कार्यक्षमता संतोषजनक है।

निष्पादन की पुनरावृत्ति को दर्शाने के लिए 100N प्रणोदक का तीसरा हार्डवेयर, वर्तमान में समुच्चयन के अधीन है।

दिशानिर्देश (साहित्य) के अनुसार कर्मांदल मॉड्यूल नोदन प्रणाली के लिए आधारित संरूपण तैयार किया गया। प्रस्तावित हाइड्रोजन

परॉक्साइड आधारित नोदन प्रणाली के लिए घटकों का विकास शुरू किया गया। मुख्य नये विकास में ब्लैडर की नोदक टंकी, $100\text{N H}_2\text{O}_2$ प्रणोदक H_2O_2 नोदकों के लिए प्रवाह नियंत्रण वाल्व, 15W उत्प्रेरक संस्तर तापक, प्रणोदक कक्ष तापमान मापन के लिए तापयुग्म एवं गैस फिल्टर शामिल हैं।

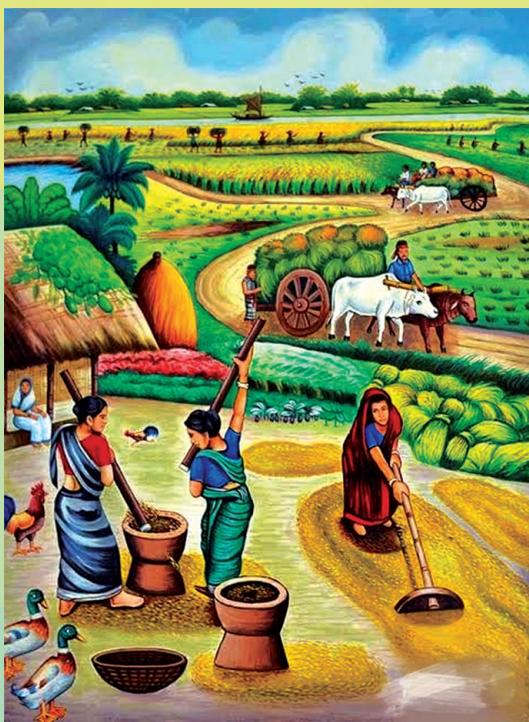
हाइड्रोजन परॉक्साइड आधारित प्रणाली का एक अन्य मुख्य विकास ब्लैडर नोदक टैंक है। धातु जाल के साथ नोदक के संपर्क से उत्पन्न स्वतः वियोजन के कारण परम्परागत पीएमडी टाइप टंकी विन्यास, हाइड्रोजन परॉक्साइड भंडार के लिए उपयुक्त नहीं हैं। नोदक टंकी का अभिकल्प तैयार है तथा वीएसएससी में ब्लैडर का विकास कार्य प्रगति पर है।

उच्च प्रवाह अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए 100N प्रणोदक हेतु एक नये प्रवाह नियंत्रक वाल्व की अभिकल्पना एवं विकास किया गया। तप्त ज्वालन परीक्षण में 100N प्रणोदक के साथ पीटीएफई साप्ट सीट के रूप में परिनालिका वाल्व युक्त प्रथम हार्डवेयर के साथ प्राप्त एवं परीक्षण किया गया। निर्दिष्ट दाब हास में वाल्व सभी विनिर्देश लक्ष्यों

जैसे लीक दर, प्रतिक्रिया समय एवं प्रवाह अपेक्षाओं को पूरा करता है।

हाइड्रोजन परॉक्साइड आधारित नोदन प्रणाली के लिए 15W उत्प्रेरक संस्तर तापक का विकास किया जा रहा है। ज्वालन से पूर्व प्रणोदक कक्ष को पूर्व-ताप करने हेतु उत्प्रेरक संस्तर तापक की आवश्यकता है। यह प्रणोदक निष्पादन, प्रतिक्रिया में सुधार लाता है तथा उत्प्रेरक काल को बढ़ाता है। 15W उत्प्रेरक संस्तर तापक का विकास हाइड्रोजीन नोदन प्रणाली के लिए विकसित 1W और 3W उत्प्रेरक संस्तर तापक से प्राप्त अनुभव के आधार पर किया गया है।

कर्मांदल मॉड्यूल के लिए ग्रीन नोदन प्रणाली हेतु 100N प्रणोदक, प्रवाह नियंत्रण वाल्व, उत्प्रेरक संस्तर तापक तथा नोदक टैंक के नए विकास के साथ संपूर्ण प्रणाली की प्राप्ति हेतु अनुसरण किया जा रहा है। संपूर्ण प्रणाली के निरूपण की योजना प्रणाली निरूपण मॉड्यूल (एसडीएम) में की गई है। हाइड्रोजन परॉक्साइड आधारित ग्रीन नोदन प्रणाली के प्रौद्योगिकी को साबित करने हेतु मानवरहित उड़ान में शामिल करने की योजना है।



जितेन्द्र कुमार ठाकुर

तकनीकी सहायक
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

भारत का हृदय

अमावश की रात में,
अंधियारा छाया है धना।

पूस की सर्दी में,
कोई ठिठुर रहा है जहाँ।
खेतों की रखवाली में,
वो झेल रहा प्रलय है।
वह गाँव नहीं है केवल
भारत का हृदय है।।

सच्ची, सरल, सीधी भाषा
छल कपट की तनिक न अभिलाषा।

रेल-विमानों के युग में भी
वे करते बस साइकिल की आशा।
नासमझ विकसित नगर को
जो अतीत का बोध कराता है
वह गाँव नहीं है केवल
भारत का हृदय है।।

मेहनत कर वे अन्न उपजाते,
समस्त विश्व का भूख मिटाते।
पर उनकी पीड़ा रब ही जाने,
जग वाले तो ठहरा मतलबी सयाने।
चकाचौथ होती जहाँ शहर
वे बिन बिजली सो जाते हैं,
वह गाँव नहीं है केवल
भारत का हृदय है।।

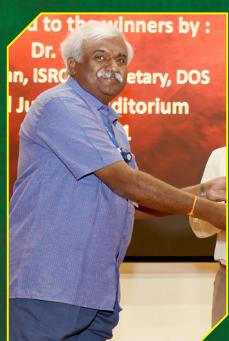
सुख-सुविधा से वे वंचित,
फिर भी रोष नहीं किंचित।

क्यों करेगा वो वैर-भाव,
जब मिल-जुल रहे पूरा गाँव।
जहाँ हर शाम मंडली जमाकर
भजन-कीर्तन में मन रमाते हैं,
वह गाँव नहीं है केवल
भारत का हृदय है।।

इसरो गुणवत्ता पुरस्कार 2021, वलियमला



सेवा उत्कृष्टता पुरस्कार, वलियमला





अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2021, वलियमला





एक वक्त ऐसा भी आएगा
जब हम हकीकत बनकर
लोगों के सामने आएँगे

तब उनकी फितरत कुछ और होगी
तकाज़ा कुछ और होगा
मेरे सपनों को जनाज़े पर रखने वालों
तुम्हारा लिहाज़ा कुछ और होगा



सूरज अग्रवाल
बैज्ञा./इंजी. एससी
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला



हकीकत

निकल पड़ा मैं हकीकत से दूर, कुछ कर गुजरने की चाहत में।
निकल पड़ा मैं हकीकत से दूर, नई मंज़िल पाने की चाहत में।

गहराइयों में गोता लगाता, सपनों के आशियाने बनाता,
क्षितिज को पाने की होड़ में अपना सब कुछ दांव पर लगाता,
निकल पड़ा मैं हकीकत से दूर, कुछ कर गुजरने की चाहत में,
निकल पड़ा मैं हकीकत से दूर, नई मंज़िल पाने की चाहत में।

खाहिशों को पूरा करते-करते हम हकीकत भुलाये बैठे हैं,
ना जाने वो किसी और पर अपनी दुनिया लुटाये बैठे हैं,
क्षितिज के आशियानों को अब हम श्मशान बनाये बैठे हैं,
मुर्दों की कब्रों के सामने अपनी महफिल जमाये बैठे हैं।

निकल पड़ा मैं हकीकत से दूर, कुछ कर गुजरने की चाहत में,
निकल पड़ा मैं हकीकत से दूर, नई मंज़िल पाने की चाहत में।

कुछ पाने की चाह में अनमोल नगीने खोए बैठा हूँ,
यादों की अलमारी में खट्टे मीठे पल संजोये बैठा हूँ,
ठाना है क्षितिज के आशियानों को अब चिड़ियाघर बनाने का,
कबूतर कबूतरियों के साथ अपनी महफिल जमाने का।

निकल पड़ा मैं हकीकत से दूर, कुछ कर गुजरने की चाहत में,
निकल पड़ा मैं हकीकत से दूर, नई मंज़िल पाने की चाहत में।

ग्रीष्मा पी राजन
वरि. सहायक
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला



पोन्मुडी: सुनहरा शिरकर

हवा के मृदुल स्पर्श, बर्फ की शीतलता एवं ऊँचाई की सतता का मिश्रण ही है तिरुवनंतपुरम का प्रमुख पर्यटक स्थान पोन्मुडी। मैंने 3 बार भ्रमण किया है। क्योंकि तीनों बार अलग-अलग तरीके का वातावरण मैंने महसूस किया है। पहली दोनों बार पोन्मुडी जाने के पहले हम मीनमुट्ठी जल प्रपात भी देखने गए थे जो इसके पास था। एलपीएससी, वलियमला के पास से गुजरते हुए एक घंटे की यात्रा है। मीनमुट्ठी भी एक सुंदर जगह है जो हमें वन सौंदर्य की याद दिलाती है, शहर के अशांत वातावरण से नीरवता की चोटी पर ले जाती है। वह स्थान झरने के कल-कल निनाद, पक्षियों की चहचहाहट, सिकाड़ा (cicadas) की सिकुड़ने की आवाज से मुखरित है। वन सौंदर्य का आनंद लेते हुए हम पैदल चलते रहते हैं। झरने, पक्षी, साँप, बड़ी-बड़ी गुफाएँ, पत्थर, वनवीथि आदि हमें एक नई अनुभूति प्रदान करती हैं। जल प्रपात तक पहुँचने के लिए लगभग एक घंटे पैदल पड़ता चलना है। कभी-कभी हमें पानी में उतरने का मौका भी मिलता है। पानी की ठंडक हमें फ्रिड्ज में रखे पानी की याद दिलाती है हालांकि यह उससे कहीं अधिक ताजा है। ग्लास की तरह साफ पानी में सूर्य की किरणों का स्पर्श सुनहरा है। झरने के तल को इस तरह देख सकते हैं कि मानों वहाँ पानी न हो। यात्रा करते-करते हम थक जाएँगे लेकिन वहाँ के सौंदर्य के आकर्षण से हमारी थकावट दूर हो जाती है। जल प्रपात पहुँचने से पहले हमें झरने को पार करना पड़ता है। झरना कहने पर भी वह उतना छोटा नहीं है। बारिश के मौसम में पानी बहुत हो जाता है। उस समय वहाँ की यात्रा उतनी सुरक्षित नहीं लगती। झरना पार करना होता है पत्थरों के ऊपर से चलकर जो चिकनी हो गई होती हैं। जल प्रपात बहुत सुंदर है जिससे हम काफी समय वहाँ बिताना चाहेंगे। पर वह जगह भी बहुत खतरनाक है क्योंकि वहाँ कई युवा अपनी जान गँवा चुके हैं। इसलिए वहाँ पानी में उतरने से पहले सावधानी बरतें।

पहली बार मैं गई थी - अपने रिश्तदारों के साथ। दूसरी बार एलपीएससी के अपने सहकर्मियों के साथ। तीसरी बार बहन और भाइयों के साथ। यात्रा करते वक्त मेरे साथ एक कैमरा हमेशा रहता है। फोटोग्राफी का मेरा शौक है। पर जब मैं सहकर्मियों के साथ गई, उस दौरान मेरा कैमरा

पानी में गिर पड़ा और कैमरा खराब हो गया। इसलिए उस यात्रा के पूर्ण आनंद का आस्वदन मैं कर नहीं सकी।

पोन्मुडी जाने का रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा है। 22 हेयर पिन मोड़े हैं। उस रास्ते से लेकर ऊपर जाते वक्त दोनों तरफ की खूबसूरती का एहसास होने लगा। उस रास्ते पर जाते वक्त हमें समय का कोई आभास नहीं हो रहा था। क्योंकि दोपहर में कभी-कभी रात जैसा लगता है। हमेशा बारिश वाला मौसम बना रहता है। पहली बार जाते वक्त वातावरण तो बहुत अच्छा था। ठंडक महसूस हुई थी। हवा की शुद्धता ने माहौल को मोहक बना दिया। हर समय वहाँ पर्यटकों की उपस्थिति बड़ी संख्या में होती है। पहले जाते वक्त पहाड़ के उच्च स्तर में घंटाघर जैसा एक जगह था। उसके ऊपर चढ़ने से ऐसा लगता है कि चारों ओर के पहाड़ों से भी हम ऊँचे हो गए हैं। ऊँचाई की चोटी पर खड़े होकर उड़ने का जी चाहता है। कभी-कभी बारिश भी आती है। हल्की बारिश के बाद मैंने पहली बार इंद्रधनुष देखा और मंत्रमुग्ध हो गई। थोड़ी देर ही उस मनमोहक दृश्य का दर्शन कर पाई।

एक बार दोस्तों के साथ इसरो आधुनिक स्पेस कॉम्प्लेक्स में जाने का मौका मिला। उस दौरान भी बारिश हुई। बर्फ के कारण वहाँ का दृश्य हर क्षण बदलता रहता है।

जब हम वहाँ पहुँचे तब ऐसा लगा कि यात्रा ही व्यर्थ हो जाएगी। क्योंकि चारों ओर कोहरा के सिवा कुछ नहीं था। कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। पर क्षण भर में पूरा वातावरण बदल गया। कोहरा हवा के साथ चला गया और वहाँ का सुंदर दृश्य दिखाई पड़ने लगा। ठंड में भी कमी आ गई। अच्छा मौसम था।

चार बजे के बाद वहाँ हम रह नहीं सकते, क्योंकि रास्ते फिर से कोहरे से ढँक जाते हैं। रास्ता देखने में मुश्किल होगी। पूरे एक दिन वहाँ रहने पर भी हम ऊब नहीं सकते। चारों तरफ की हरियाली का मोहक दृश्य सबके मन को शांति देता है।

इस तरह पोन्मुडी एक ऐसा जगह है जो वहाँ आने वालों के मन को खुशियों से भर देती है। एक बार आप भी जाइए, पहाड़ी वातावरण की खूबसूरती, हवा का स्पर्श, बारिश, इंद्रधनुष सबका साक्षी बनने के लिए।



डॉ. अशवती एस
वैज्ञा./इंजी एसडी,
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

हिमाचल की वादियों से: शिमला, कुल्लू, मनाली की यात्रा



सफर सभी को पसन्द है। “The Impulse to travel is one of the hopeful symptom of life.” दक्षिण भारत में नदियाँ, पहाड़, हरियाली सब मौजूद हैं, पर बर्फिली चट्टानें, हिमपात नहीं हैं। सेंट अगस्टीन की राय में “The world is a book and those who do not travel, read only one page.” हिमाचल, श्रीकुमार सिद्धार्थ के शब्दों में सच कहूँ तो किसी मोहब्बत से कम नहीं है। ये हिमाचल भी किसी जन्मत से कम नहीं है। मैं 2018 में परिवार समेत हिमाचल की यात्रा करने निकली। तिरुवनंतपुरम से दिल्ली तक हवाई जहाज और वहाँ से बाकी यात्रा सड़क मार्ग से हमने पूरी की।

हिमाचल प्रदेश शब्द का अर्थ बर्फिला पहाड़ी इलाका है। जिसे देव भूमि कहा जाता है। यह शिवालिक श्रेणी का हिस्सा है। ब्यास, चेनाब, रावी जैसी प्रमुख नदियों वाले इस प्रदेश में डलहौजी, कुफ्री, मनाली, कुल्लू जैसे मुख्य पर्यटक स्थल हैं। हिमपात वाली जगह है, इसलिए हमने शीत के कपड़े भी लिये थे।

सोनीपत:

हमने गाड़ी में दिल्ली से शिमला की ओर यात्रा शुरू की और रास्ते में खान-पान के लिए सोनीपत के एक ढाबे में पहुँचे। इन ढाबों में यात्रियों को तरों ताज़ा करने के लिए सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। दिल्ली-शिमला की दूरी 342 किमी की थी जो लगभग सात घण्टे में तय किया जा सकता था। यात्रा दिलचस्प थी। हरियाणा से होकर हम चलना शुरू किए तो रास्ते के दोनों तरफ गेंहूँ की लहलहाती खेती दिखाई पड़ी और बीच-बीच में सरसों की खेती भी। होटल तक पहुँचने में रात के नौ बज चुके थे। हमलोग रात्रिभोजन के बाद सीधे सो गये। सबेरे बाहर का दृश्य अत्यंत सुन्दर था। हरियाली समेत पहाड़ों के बीच कालका-शिमला “टोम ट्रेन” दिखाई पड़ी।

शिमला का सुहाना सफर:

पहले हम कुफ्री के लिए निकल पड़े। होली का दिन होने के कारण सभी जगह उत्सव का माहौल था। कुफ्री समुद्र तट से 2622 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। यह बर्फिला इलाका एक समय नेपाल का था। इस चट्टान के ऊपर पहुँचने के लिए घोड़े पर चढ़ना था। डर तो था पर घोड़े पर सवार होकर ऊपर पहुँचते ही हिमपात शुरू हो गया। सँकरी सड़क और घोड़े के आने-जाने का ट्राफिक जाम थोड़ा डरावना था। हिमाचली पारंपरिक कपड़े किराये पर मिलते थे। वह पहनकर हम सभी ने चित्र खींचवाये। याक के ऊपर भी चढ़े। वहाँ टेलिस्कोप स्थापित था जिससे सेब की खेती, स्वरण पालस इत्यादि निकटम मिल सकते थे।

दोपहर को “माल रोड” पर हम सभी एक चक्कर लगाए। माल रोड पर पहुँचने के लिए दो स्तर के लिफ्ट थे। यहाँ मार्केट वाले स्ट्रीट को रिड्स कहते थे। इसे “Social hub of the city” कहते हैं। यहाँ रोड के ऊपरी हिस्से पर “क्राइस्ट चर्च” स्थित है जो उत्तर भारत का दूसरा बड़ा गिरिजाघर है। इसके सामने “शिमला स्टेट पुस्तकालय” भी था। बैठने के लिए कुर्सियों वाले पार्क, घुड़-सवारी के लिए घोड़े... सब मिलाकर वहाँ की शाम, अच्छी थी। निकलते वक्त हम “जोन वैक्स म्यूजियम” देखने गये जिसमें “आयरन मैन”, “मेस्सी”, “चाचा नेहरू”, हमारे प्रधान मंत्री “श्री नरेन्द्र मोदी” जैसे मशहूर लोगों की मूर्तियाँ देखने को मिली।

देवताओं की घाटी-कुल्लू

शिमला से मनाली की यात्रा 247 किमी की थी जिस के लिए साढ़े छः घंटे लगने थे। रास्ता मज़ेदार और रोचक था। हमारी यात्रा बिलासपुर, मण्डी से होकर कुल्लू से मनाली की थी। बीच-बीच में सतलज और ब्यास नदी देखने को मिली। ब्यास नदी में हम “रिवर राफिंग” भी किए। पानी बहुत ठंडा था-बर्फिला पानी जो है, ठंडा ही रहेगा। इस “राइड” के बीच में बारिश होने के कारण हम गीले हो गए। कुछ ही दूर पर वैष्णों देवी मंदिर था, हमने जिसका भी दर्शन किया। ब्यास नदी के किनारे स्थित यह मंदिर “महादेवी तीर्थ” नाम से भी पुकारा जाता है। मंदिर की प्रतिष्ठा और मूर्तियाँ गुफा में स्थित हैं जिसमें प्रवेश झुकके ही संभव था। इस बहुमंजिली मंदिर के ऊपर श्री आदि शंकराचार्य की भी मूर्ति स्थापित थी। मनाली होते होते यहाँ के “शॉल फैक्ट्री” को हमने देखा और वहाँ से कुछ हमने ऊनी कपड़े भी खरीदा।





बर्फीली घाटियों वाली मनाली

रात तक हम होटल में पहुँचे और थकावट के कारण ज़ल्दी सो गए। मनाली शहर का नाम मनु के नाम पर पड़ा है। “मनाली” मतलब-“मनु का निवास स्थान”। “मनाली” देवताओं की घाटी के रूप में भी जाना जाता है। होटल की बालकनी से ही हमने बर्फीले सफेद चट्ठानों वाला दृश्य देखा। वहाँ के मकानों और सड़कों पर भी बर्फ गिरे थे। कल की बारिश की वजह से पहाड़ पर भी नया बर्फ गिरा है। मन उत्सुकता से भरा था। यह सुखद अवसर प्रदान करने वाले भगवान को हमने शुक्रिया अदा किया।

सबेरे पहले हम हिंडिंबा मंदिर देखने गए। यह मंदिर 1553 में स्थापित पुराना मंदिर है। जो पाण्डव राजकुमार भीम की पत्नी हिंडिंबा, जो स्थानीय देवी है, के नाम पर है। देवदारु पेड़ों से घिरा हुआ यह मंदिर देखने लायक था। मणि रत्नम की सिनेमा “रोजा” के कुछ भाग इस मंदिर के आसपास चित्रित हुए थे। मंदिर के बाहर हस्तशिल्प बेचने वाली छोटी-छोटी दुकानें थीं। वहाँ सफेद खरगोशों को लेकर लोग खड़े थे, जो देखने में बड़े हल्के थे। इन खरगोशों के साथ फोटो खिचवाने के लिए फीस देना पड़ता था।

वहाँ से हम वशिष्ठ तीर्थ देखने चले जो 3 किमी की दूरी पर एक राम मंदिर है। वहाँ ऋषि वशिष्ठ ने तपस्या किया था - ऐसा कहा जाता है। वहाँ गरम पानी का स्रोत है जो औषधीय गुणों से पूर्ण है। कहते हैं कि श्री लक्ष्मण ने महर्षि वशिष्ठ को ठंड के समय नहाने के लिए “अग्निबाण” का प्रयोग कर यह स्रोत बनाया था। यादगार वस्तुओं वाली दुकानों से घिरे उस जगह का चक्कर लगाकर हम मनाली टाउन के लिए वापस प्रस्थान हुए। होटल पहुँचने के पहले हम एक बोद्ध मंदिर भी देखने गये जिसे “निंगूमाजा बुद्धिस्ट मंदिर” कहते हैं। तिब्बतन मार्केट में भी चक्कर चलाकर हम होटल वापस पहुँचे।

“मनाली की बात क्या कहें गालिब
ऐसे धूमे, ऐसे धूमे कि हम खुद धूम गए॥”
-सिद्धार्थ कुमार

सोलांग घाटी

सोलांग घाटी कुल्लू घाटी के शीर्ष पर स्थित एक बर्फीली घाटी है, और मनाली से 14 किमी की दूरी पर है। व्यास कुण्ड और सोलांग गाँव के बीच रोतांग दर्रे के रास्ते में यह जगह “एडवेंचर” पसंदों की पसंदीदा जगह है। यहाँ पैरा ग्लाइंडिंग, पैराशूटिंग, स्नो स्कींग, घुड़सवारी, बाइक

और जीप वाली स्नो-राइंडिंग इत्यादि “विन्टर स्पोर्ट्स्” मौजूद हैं। हम लोग “स्नोप्रूफ” जैकेट वगैरह पहनकर स्कींग के लिए निकले। चारों तरफ बर्फ ही बर्फ। तभी हिमपात भी हुआ जो एक नया अनुभव था। हमने विडियो चैट से रिश्तेदारों को यह दृश्य दिखलाये॥।

स्कींग करते करते हम गिर भी पड़े। जिप लाइनिंग के लिए लंबी लाइन दिखाई पड़ी। परिवार वाले डर से मना किए, पर मैंने साहस के साथ जिप राइड की। ऊपर से नीचे की तरफ तार से फिसल फिसल कर जाना एक नया पर अच्छा अनुभव था। हमने वहाँ गोंडोला राइड के लिए कुछ दूरी पर टिकट काउंटर देखा - गोंडोला के लिए सभी उत्सुक थे। गोंडोला केबिन में बैठकर चट्ठान के ऊपरी हिस्से की ओर बढ़ने लगे। सफेद रंग के बर्फ के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। मेरी इच्छा पैरा ग्लाइंडिंग करने की भी थी, पर मौसम खराब होने के कारण यह सुविधा बन्द कर दी गयी थी। सब भूखे थे और गाड़ी की ओर चल पड़े। वहाँ हर जगह मैग्नी ही मिल रहा था। तो हम सभी कुछ दूर चलकर एक होटल में पराठे खाए। शाम को होटल में फोटो ग्राफर ने आकर बर्फ में लिए गए सभी चित्रों के प्रिंट और डिजिटल कॉपी दे दिया।

अगले दिन हमारी मनाली से वापसी तय थी। रास्ते में मणिकर्ण जाने का अवसर मिला। यह गुरुद्वारा पार्वती घाटी में व्यास और पार्वती घाटी के मध्य स्थित है। यहाँ के गन्धक-युक्त पानी में स्नान करने से बीमारियाँ दूर होती हैं - ऐसा विश्वास है। वहाँ हमने लंगर खाया। लंगर का यह खाना भगवान का प्रसाद माना जाता है जिसकी जानकारी मुझे ट्रैवल एक्सपी (Travel XP) नामक टी वी चैनल से मिला था। भक्तों के श्रमदान से तैयार लंगर का खाना बहुत अच्छा था। वहाँ एक गरम गुफा भी थी जिस



का दृश्य देखकर हम वापस - दिल्ली की ओर निकले। चंडीगढ़ से होकर हम अगले दिन शाम तक दिल्ली पहुँचे।

दिल्ली का मशहूर लोटस टैंपल देखने के बाद अगले दिन हम तिरुवनंतपुरम के लिए प्रस्थान किए।

मनाली आना इतना रोचक था कि इसका वर्णन करते मैं नहीं थकती। नए अनुभव प्रदान करने वाली यह यात्रा काफी रोचक थी। बर्फीले पहाड़, बर्फ से ढूबे मकान के छत और सड़कें सब चित्ताकर्षक ही थे।

“जब कोई करता है बात हिमाचल की।
याद आने लगा है मेरा सफल,
वहाँ का बिताया हुआ हर पल॥”

रास्ता

रंजु चंद्रन

वैज्ञा./इंजी. एसएफ
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

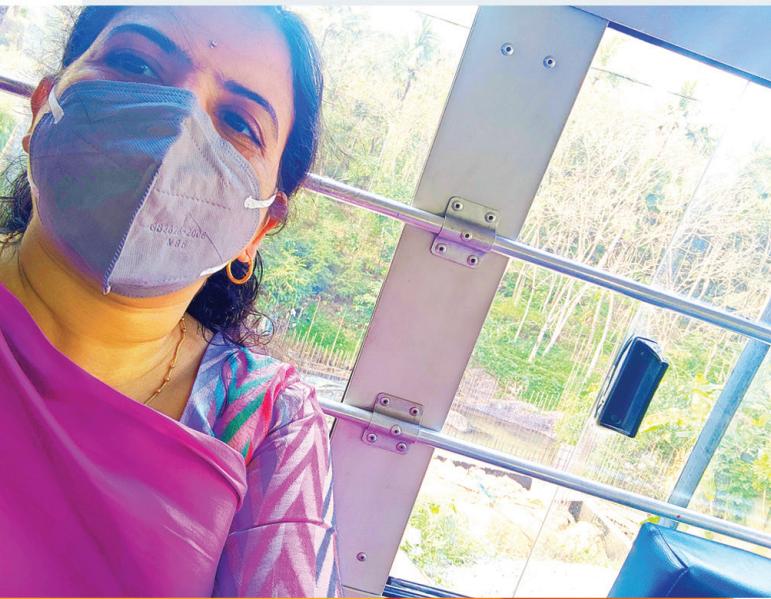


अनगिनत घुमावों और मोड़ों के साथ सँकरा रास्ता मनोरम पोनमुडी पहाड़ी से गुजरते वलियमला की ओर एक तीक्ष्ण मोड़ लेता है, जहां मैं इसरो के गौरवान्वित वैज्ञानिक के रूप में कार्य करती हूँ। इस नाम का प्रभावी अर्थ, 'एक विशाल पर्वत' है, और यह अनंतपुरी शहर से एक घंटे की दूरी पर स्थित एक शांत जगह है।

वलियमला के लिए कार्यालय बस से मेरा सफर करीब दो दशक पहले शुरू हुआ था, परंतु आज तक मैंने इस सफर में एक क्षण भी सुस्ती महसूस नहीं किया है।

यह निर्बाध रास्ता दोनों तरफ निर्जीव एवं सजीव-दोनों दृश्यों से पूरी तरह आच्छादित है। यदि रास्ते के एक तरफ पूर्ण हरियाली है तो रास्ते के दूसरी तरफ किल्लियार (किल्ली नदी) का मस्त बहाव अनंत काल से इस रास्ते के सौंदर्य में चार चाँद लगा रहा है।

यह घुमावदार रास्ता स्पष्ट रूप से एक- एक मील के टुकड़ों में विभाजित है, जिन्हें स्थानीय तौर पर 'कुट्टी' कहा जाता है। पहली कुट्टी के बाद दूसरी कुट्टी आती है और उसी प्रकार क्रम चलता रहता है। इस रास्ते के नियमित पथिक के रूप में मुझे खेद है कि इन कुट्टियों की शृंखला कहाँ समाप्त होती है-यह जानने में लापरवाही रही है। बस में इतना जानती हूँ कि मेरा कार्यालय 11वीं कुट्टी या मीलस्तंभ के समीप स्थित है।



इस रास्ते में बार-बार आने वाले तीखे मोड़ व्यक्ति को सकुशल आराम से बस में नहीं बैठने देते। हमें चौकत्रा और सक्रिय रहने के लिए बाध्य होना पड़ता है (सोना वर्जित है), क्योंकि यात्रा के दौरान किसी भी वक्त ब्रेक का झटका लग जाता है। मैं एक बाकया याद करती हूँ जब मेरी सहयात्री चंद्रिका मैडम का वक्षस्थल चालक केबिन को पृथक करने वाले मोटे काँच से जा लगा, जब वे किसी बारिश के दिन यात्रा के दरम्यान अपने रजोनिवृत्ति के बाद की परेशानियों का विवरण करने में मग्न थीं।

इस पथ पर की गई अनंत यात्राओं के दौरान मैं किल्लियार के विभिन्न भावों की साक्षी रही हूँ। हाल के बाढ़ के दौरान इसका पानी सड़क के स्तर को स्पर्श कर रहा था और स्थानीय निवासियों और हम जैसे यात्रियों के लिए समस्याएं उत्पन्न कर रहा था और इसके झाग मटमेले हो गए थे। कुछ वर्ष पूर्व स्वशासी सरकारी संस्थाओं ने किल्लियार को साफ करने का अभियान चलाया, जहाँ लोगों ने भी नदी के किनारे एकत्रित करके उसको साफ करने में अपना योगदान दिया।

यहाँ की खूबसूरत हरियाली की अनोखी बात यह है कि वर्षों पूर्व जब से मैं इसे जानती हूँ, यह वैसी की वैसी ही है। वृक्षों को बचाने के लिए किसी पर्यावरणविद् द्वारा शोर मचाये बिना विभिन्न प्रकार के वृक्ष जैसे अंजिली, कटहल, बड़ी झाड़ियाँ, मेहंदी के पेड़, बेल, फूल और विशाल बरगद आदि ने अपनी सांसों को जीवंत रखा है। कुछ नए शामिल होने वाले बबूल के पेड़ बड़ी तेज़ी से अपना पीलापन बिखर रहे हैं और कभी कभी एलर्जी कारक पराग भी। कहीं-कहीं चरागाहों में उगी हुई नरम धासे दिख जाती हैं। मेरा मन कभी उन्हें तोड़कर उस खुशबू में खो जाने को करता है, परंतु सड़क सुरक्षा का ख्याल ऐसा करने नहीं देता।

कोरोना विस्फोट के बाद मैंने इस टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर अपने चौपहिया वाहन में सफर करना शुरू कर दिया। हालांकि मैं वाहन चलाने में माहिर नहीं थी, समय के साथ मेरे कौशल में काफी सुधार हुआ है। अब मैं बस स्टॉप पर समय से पहुँचने की चिंताओं से भी मुक्त हो गई हूँ।

अपने नकाबपोश चेहरे को गाड़ी की खिड़की से निकालकर रास्ते के किनारे आजू-बाजू शाक-सब्जी भी खरीद लेती हूँ। आप घर में या खेत में उगाए गए विभिन्न प्रकार की ताजी सब्जियों जैसे, ताजे मटर, करेले, टैपिओका, अंडे आदि खरीदने से स्वंयं को रोक नहीं सकते। शहर के शॉपिंग मॉल में मिलने वाले खाद्य पदार्थों की अपेक्षा ये कहीं ज्याद स्वादिष्ट होते हैं।



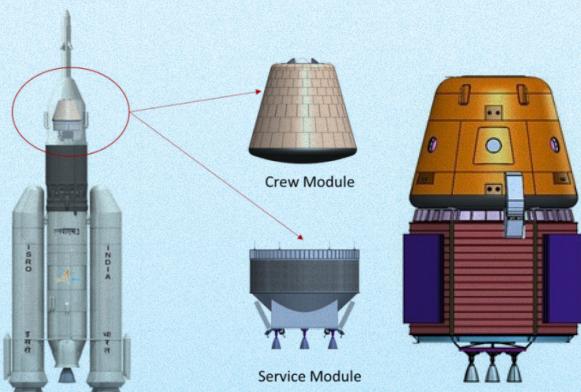
बैजु ए पी

वैज्ञा/इंजी-एसजी, समूह प्रधान
द्र.नो.प्र.कं., वलियमला

72वें स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा गगनयान परियोजना की घोषणा की गई। इस परिप्रेक्ष्य में इसरो ने मानव अंतरिक्ष उड़ान को निम्न भूकक्षा (400कि.मी. x 400कि.मी.) में प्रदर्शित करने हेतु गगनयान कार्यक्रम का श्रीगणेश किया है। गगनयान कार्यक्रम भविष्य में दीर्घकालिक भारतीय अंतरिक्ष अन्वेषण कार्यक्रम हेतु नींव स्थापित करेगा। इसका उद्देश्य, 3 अंतरिक्ष यात्रियों को 3 दिन के लिए पृथ्वी की निचली कक्षा (Low Earth Orbit) में अंतरिक्ष उड़ान का प्रदर्शन करना तथा उन्हें भारतीय क्षेत्र के एक पूर्व-निर्धारित स्थान पर सुरक्षित वापस भी लाना है।

इसरो, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जैसे अंतरिक्ष परिवहन प्रणालियों, उपग्रह प्रणाली व अंतरिक्ष अनुप्रयोगों-यथा, चंद्रयान एवं मंगलयान जैसे अंतरग्रहीय मिशनों में अपनी क्षमता साबित कर चुका है तथा मानव सहित मिशन की महत्वपूर्ण तकनीकी का उद्देश्य मानवानुकूल प्लेटफॉर्मों की अभिकल्पना और विकास, मानव जीवन रक्षक तकनीकों तथा अंतरिक्ष यात्रियों के प्रशिक्षण एवं सुविधाएं प्रदान करना है।

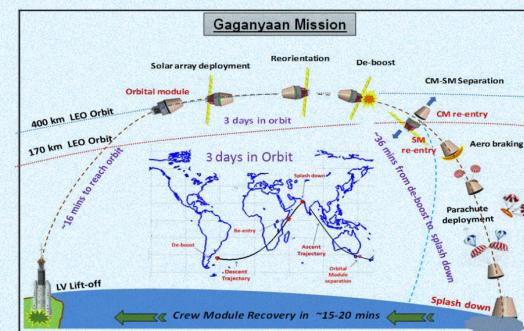
मानवानुकूलन को पूरा करने के लिए आवश्यक परिवर्तनों के साथ, इसरो द्वारा विकसित सबसे भारी प्रमोचन यान जी एस एल वी मार्क-III से गगनयान को प्रक्षेपित करने की योजना है। यान के आगे का हिस्सा कक्षीय मॉड्यूल के साथ संरूपित है, जो कर्मांदल मॉड्यूल एवं सेवा मॉड्यूल से निर्मित एक द्विभाग संरचना है, जिसे नीतभार के रूप में चित्र 1 में प्रदर्शित प्रमोचन यान का प्रयोग कर अंतरिक्ष में ले जाया जाएगा।



चित्र 1

प्रमोचन यान 400 किमी की वृत्तीय कक्षा में कक्षीय मॉड्यूल को अंतर्क्षेपित करेगा। कक्षीय मॉड्यूल वह मॉड्यूल है जो तीन दिनों तक पृथ्वी की परिक्रमा करता रहेगा। मिशन अवधि के बाद कक्षीय

मॉड्यूल को ऑन-बोर्ड सर्विस मॉड्यूल नोदन प्रणाली का प्रयोग करके कक्षा से बाहर किया जाएगा और कर्मांदल मॉड्यूल को सेवा मॉड्यूल से अलग कर दिया जाएगा तथा इसे 3 अक्षीय स्थिर अवस्था में पृथ्वी के वातावरण में पुनः प्रवेश करवाया जाएगा। कर्मांदल मॉड्यूल को समुद्र में आराम से अवतरित करवाने के लिए 7 कि.मी. की ऊचाई पर अतिरिक्त द्विस्तरीय पैराशट तैनात किए जाएंगे। कर्मांदल प्लावित कर्मांदल मॉड्यूल से उतर जाएंगे और तत्पश्चात नौसेना सेवा/भारतीय तटरक्षक बल की सहायता से कर्मांदल मॉड्यूल को समुद्र से वापस लाया जाएगा।



चित्र 2

गगनयान मिशन में द्रव नोदन प्रणाली केंद्र से आपूर्ति की जाने वाली

गगनयान कार्यक्रम के लिए, संवर्धित सुरक्षा सीमाओं और अतिरिक्त आवश्यकताओं के साथ विभिन्न मानवानुकूल उड़ान प्रणालियों की अभिकल्पना, विकास एवं निर्माण के लिए एलपीएससी उत्तरदायी है। गगनयान कार्यक्रम के लिए एलपीएससी से आपूर्ति की जाने वाली प्रणालियां निम्नांकित हैं।

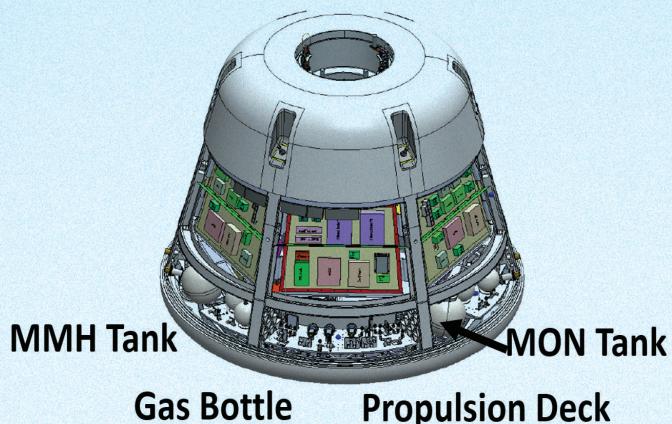
- मानवयुक्त L110 चरण, सी 25 चरण, कर्मांदल मॉड्यूल नोदन प्रणाली, सेवा मॉड्यूल प्रणाली, केबिन दबाव नियंत्रण प्रणाली (ईसीएलएस के भाग में), नोदन संवेदक, तापीय आर्द्रता व नियंत्रण प्रणाली के लिए प्रवाह नियंत्रण घटक तथा मानव उपापचय अनुकारक (एचएमएस)
- ईसीएलएसएस उप प्रणालियों का समाकलन एवं आपूर्ति
- कर्मांदल बचाव प्रणाली परीक्षण यान के उड़ानों के लिए नोदन प्रणालियों का विकास एवं निर्माण

1. कर्मांदल मॉड्यूल नोदन प्रणाली

कर्मांदल मॉड्यूल दाबीकृत केबिन है जो 3 कर्मांदल सदस्यों के

लिए आवासीय स्थान प्रदान करता है तथा इसमें, ऐवियॉनिकी पैकेजों के साथ कर्मीदल मॉड्यूल नोदन प्रणाली (सी एम पी एस), पर्यावरणीय नियंत्रण एवं जीवन रक्षा प्रणाली (ईसीएलएसएस) भी है।

कर्मीदल मॉड्यूल नोदन प्रणाली एक प्रतिक्रिया नियंत्रण प्रणाली है। इसका उद्देश्य पुनर्प्रवेश के दौरान सर्विस मॉड्यूल के बिलगन के उपरांत कर्मीदल की त्रिअक्षीय नियंत्रण (पिच, यॉ तथा रोल) प्रदान करने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए सी पी एम एस एक प्रतिक्रिया नियंत्रण प्रणाली है तथा 3 कि.मी. से 70 किमी के बीच किसी विफलता के समय अभिवृत्ति नियंत्रण प्रदान करता है।



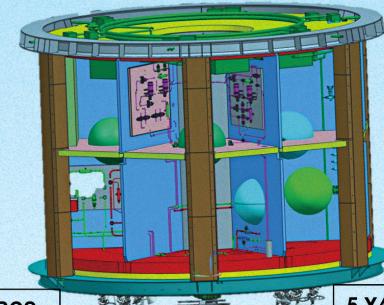
चित्र 3

मानव रहित अभियान जी₁ के लिए चयनित नोदन प्रणाली स्थिरांक नियंत्रित दाब विधि है जिसे एमएमएच एवं एमओएन₃ संयोजन के परंपरागत द्वि-प्रणोदकों के साथ प्रचालित किया जाता है। क्रांतिक सुरक्षा आवश्यकताओं के कारण इन प्रणोदकों के साथ नोदन प्रणाली के लिए अतिरिक्त सावधानियाँ बरतने की आवश्यकता है। इससे SOYUZ RCS एवं वैज्ञानिक मिशनों में प्रयोग किए जा रहे हाइड्रोजेन परॉक्साइड एकल नोदक प्रणाली के संबंध में अध्ययन की आवश्यकता पड़ी। इस पृष्ठभूमि के साथ, पीटी उत्प्रेरक के साथ एक हाइड्रोजेन परॉक्साइड आधारित एकल नोदक प्रणाली मानव रहित जी₂ से गगनयान मिशन के क्रू-मॉड्यूल के लिए प्रस्तावित है।

प्रणाली के अवयवों-जैसे, विभिन्न अंतरिक्षयानों एवं प्रमोचनयानों के कार्यक्रमों में प्रयुक्त गैस बोतल, पाइरोस, फिल एवं ड्रेन वाल्व, चेक वाल्व, फिल्टर आदि का चयन किया जाता है और ये सभी अवयव सुरक्षा सीमाओं के कारक का प्रदर्शन करने के लिए गहन योग्यता परीक्षण से गुजर रहे हैं। फिर भी प्रणाली आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए, नए डिजाइन तत्व-जैसे, दाब नियामक, नोदक टैंक, 100N प्रणोदक (12 सं) व प्रवाह नियंत्रण एवं पृथक्कारी लैच वाल्व विकसित एवं परीक्षित किए गए हैं। समेकित मोड में नोदन प्रणाली कार्यक्षमता के सत्यापन के लिए गगनयान प्रणाली प्रदर्शन प्रारूप का परीक्षण प्लान किया गया है।

2. सेवा मॉड्यूल नोदन प्रणाली

सेवा मॉड्यूल, कक्षीय मॉड्यूल का मानवरहित एवं अदाबीकृत भाग है, जिसमे ईसीएलएसएस के मुख्य भाग, उड्यानिकी व ऊर्जा प्रणाली एवं नोदन प्रणाली शामिल हैं, जो कक्षा उत्थान, ऑन ऑर्बिट संशोधन एवं पुनः प्रवेश से पहले डी-बूस्टिंग के लिए अपेक्षित हैं।



16 x 100N RCS

5 X 440N Engines

चित्र 4

सेवा मॉड्यूल नोदन प्रणाली, ऑन ऑर्बिट के दौरान ऑर्बिट वृत्तीकरण, अभिवृत्ति नियंत्रण आदि निष्पादित करने के लिए कक्षीय मॉड्यूल की आवश्यकताओं को पूरा करता है, डिबूस्ट के लिए पर्याप्त ΔV व 3 अक्षीय अभिवृत्ति नियंत्रण एवं उत्थान चरण के दौरान एसएम आधारित विफलता (यदि कोई हो) प्रदान करता है।

प्रमोचन यान प्रदायथार व्यरोधों के अंदर अपेक्षित आवेग प्रदान करने के लिए उच्च विशिष्ट आवेग अपेक्षाओं पर विचार करते हुए इस अनुप्रयोग के लिए एक एकीकृत द्वि-प्रणोदक नोदन प्रणाली चयनित किया गया है। उपर्युक्त लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए उप प्रणाली एवं घटकों के स्तर पर डिजाइन की एक आधार रेखा तैयार की गई है। प्रस्तावित संरूपण अतिरेकता के तल पर अध्ययन किया गया है तथा अधिकांश घटकों के लिए पर्याप्त अतिरेकता सुनिश्चित किया है। जियोसैट अंतरिक्ष यान के उड़ान परंपरा के साथ नोदन प्रणालियों के विभिन्न अवयव अर्हता प्राप्त कर लिया है। एसएमपीएस में 16 प्रकार के प्रणाली अवयव शामिल हैं जैसे 5एक्सएलएस, 16एक्स, 100N RCS, पृथक्करण पाइरो वाल्व, चेक वाल्व, सीओपीवी गैस बोतल व 345 L नोदन टंकियाँ आदि। एसएमपीएस के द्रव्यमान 184 kg है।

पांच 440N प्रणोद द्वि-नोदक द्रव इंजनों तथा आठ 100N प्रणोदकों के साथ विभिन्न उड़ान मिशन प्रोफाइल परीक्षणों को अनुकरित करने के लिए एलपीएससी द्वारा एक प्रणाली प्रदर्शन मॉडल विकसित किया है।



चित्र 5

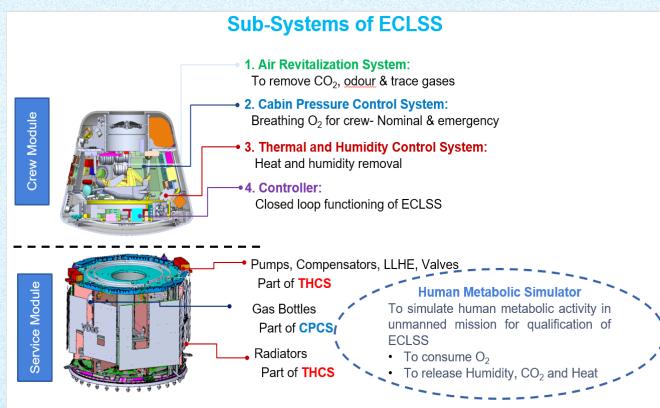
3. पर्यावरणीय एवं जीवन सुरक्षा प्रणालियाँ

ईसीएलएसएस का मुख्य कार्य कर्मीदल की जीवन रक्षा के लिए साँस लेने योग्य वायु, वातावरण, आहार एवं जल प्रदान करना है। ईसीएलएसएस, प्रणालियों की एक उपप्रणाली है तथा इसे इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी प्रणालियों एवं मानव केंद्रित प्रणाली में विभाजित किया गया है।

मानव केंद्रित प्रणाली में स्वच्छ जल, पौष्टिक तत्त्वों एवं आहार, अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली, आपातकालीन बचाव सामग्रियों, अग्निसंसूचन एवं दमन प्रणालियों आदि की सुविधाएँ हैं। इसरो ने विनिर्माण के लिए डीआरडीओ के विभिन्न प्रयोगशालाओं के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है। इंजीनियरिंग प्रणाली में केबिन दाब नियंत्रण प्रणालियां, तापीय एवं आर्द्रता नियंत्रण प्रणाली तथा संवेदक आदि शामिल हैं तथा ये विभिन्न इसरो केंद्रों में विकसित एवं निर्मित हैं। ये प्रणालियां कर्मांदल के स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं सुविधा बरकरार रखने के लिए आवश्यक हैं।



चित्र 6



चित्र 7

3.1 केबिन दाब नियंत्रण प्रणाली

इसका मुख्य कार्य है-कर्मांदल द्वारा संचित O_2 टैंक से उपभुक्त ऑक्सीजन को पुनः पूरा करके कुल दाब और आंशिक दाब को 19-23kPa में कायम रखना। आपातकाल में जब केबिन का दाब 53kpa तक नीचे आ जाता है तो सीपीसीएस स्यूट को भी ऑक्सीजन प्रदान करता है।

सीपीसीएस में 18 प्रकार के नव-निर्मित घटकों से बना है जो O_2 संगतता एवं मैनुअल ओवरराइड विशेषताओं के लिए एक तकनीकी चुनौती है। सीओपीवी गैस बोतल के लिए चयनित सामग्री इनकोनल 718 है, क्योंकि इसमें O_2 संगतता, अति ज्वलनशीलता प्रतिरोध, विशिष्ट दृढ़ता के गुणधर्म तथा अच्छी संविरचनीयता के गुण पाए जाते हैं। सभी नियंत्रण घटकों के लिए, जहाँ उच्च दाब O_2 के साथ सीधे संपर्क है, निरंतर दहन के लिए उच्च पीवी प्रतिरोध एवं उच्च देहली दाब

के कारण मॉनल 400 एवं मॉनल K500 को चयनित किया गया है।

तापीय एवं आर्द्रता नियंत्रण प्रणाली

कम समय के लिए आर्द्रता की अधिकता/कमी कर्मांदल के स्वास्थ्य के लिए तुरंत खतरा उत्पन्न नहीं करती है। लेकिन आर्द्रता के संघनन को रोकने या क्रांतिक घटकों/प्रणाली-सुरक्षा को बरकरार रखने के लिए, ताप एवं आर्द्रता के समकाल नियंत्रण से प्राप्त अपेक्षित टीएचसीएस 07 है।

इसका मुख्य कार्य ताप एवं आर्द्रता 233C एवं 30-70% की विनिर्दिष्ट सीमाओं के भीतर बनाए रखना है। ऊष्मा एक्सचेंजरों से ऊष्मा संग्रहित करके इसे पंपों के जरिए कूलेंटों के भीतर से भेजकर और परावर्तकों से ऊष्मा निष्काशित कर ये कार्य निष्पादित किए जाते हैं।

इस प्रणाली में प्लेट टाइप संहत ऊष्मा एक्सचेंजर, पंप, प्रवाह को समानुपातिक करनेवाला वाल्व, परिनालिका वाल्व, चेक वाल्व, अनार्द्रकारक आदि शामिल हैं।

मानव उपापचय अनुकारक

यह कर्मांदल द्वारा ईसीएलएसएस मिशन पर लोडों को बैधीकृत करने के लिए मानव उपापचय गतिविधियों का नकल करने के उद्देश्य से किया गया है। इस प्रणाली में ऑक्सीजन निष्काशन प्रणाली, (दाब प्रदोल अवशोषण के द्वारा), CO_2 गैस का वहन करके CO_2 संयोजन प्रणाली तथा डायाफ्राम ब्लाडर टैंक द्वारा वाहित जल संयोजन प्रणाली एवं एक नियंत्रण एकाई शामिल हैं।

संसाधनों के अभाव के कारण जी2 मिशन के लिए, यह प्रणाली केवल एक दिन के लिए कर्मांदल उपापचय का नकल करने के लिए बनाई गई है।

वायु शुद्धिकरण प्रणाली

यह प्रणाली केबिन वायु से CO_2 एवं अल्प संदूषणों को हटाने के लिए है। इस प्रणाली में अल्प संदूषणों को हटाने के लिए एक्टिवेटेड चार्कोल बेड, CO_2 को हटाने के लिए एलआईओएच बेड तथा वायु परिसंचरण के लिए ब्लोअर तथा CO_2 के PPO₂ के मापन हेतु संवेदक आदि शामिल हैं।

CO_2 के एलआईओएच का निष्काशन एक ऊष्माक्षेपी अभिक्रिया है तथा इससे ऊष्मा एवं जलवाष्य उत्पन्न होते हैं, जिससे टीएचसीसीएस के लोड में बढ़ोतारी होती है।

ईसीएलएसएस नियंत्रक

यह ताप, दाब, एवं आर्द्रता मापता है तथा कर्मांदल के आवासीय वातावरण के नियंत्रण के लिए वाल्वों, पंखों, पंपों को चालू करने के लिए निर्देश देता है।

यह कर्मांदल को वास्तविक समय पर चेतावनी देता है। यह ऑनबोर्ड कंप्यूटर के साथ दूरमिति के लिए अंतरापृष्ठ प्रदान करता है।

ईसीएलएसएस संवेदक: इसमें आईडीपीटी एवं मेम्स जैसे दाब संवेदक तथा ऑक्सीजन, कार्बन डाइऑक्साइड के मापन के लिए आंशिक संवेदक होते हैं।

उपसंहार

समानव अभियानों में सैदैव बड़े खतरे होते हैं। जोखिमों को

कम करने के उद्देश्य से और विश्वसनीयता में सुधार के लिए प्रणाली अभिकल्पना एवं पात्रता प्रक्रिया में विभिन्न प्रस्तावों को शामिल किया गया है। एकल बिन्दु विफलताओं का ख्याल रखने के लिए प्रणालियों अंतः निर्मित अतिरिक्त उपकरणों से सुसज्जित हैं। महत्वपूर्ण स्थलों पर द्वितीय छूट सीमाओं को शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त समानव अभियान की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दिशा-निर्देश जारी करने हेतु निम्नलिखित विनिर्दिष्ट (समर्पित समितियाँ) गठित की गई हैं।

1. सभी सामग्रियों (धात्तिक एवं अधात्तिक) तथा वांछित मानवानुकूल मानदंडों को पूरा करने के लिए उडायनिकी अवयवों के क्रय हेतु दिशा निर्देश तैयार करने के लिए सामग्री विशिष्टिकरण समिति।
2. गगनयान प्रणालियों के डिजाइन की समीक्षा करने के लिए विशिष्ट डिजाइन समीक्षा दल-गगनयान (डीआरटी-जी) गठित हैं। विशिष्ट

डिजाइन समीक्षा दल-गगनयान - वांछित मानदंडों तथा उनके अनुपालन, प्रणाली अभिविन्यास, संवर्धन योजना, विश्वसनीयता तथा गुणवत्ता आश्वाशन पहलुओं, सुरक्षा पहलुओं, विभिन्न विकास परीक्षणों के लिए सामग्रियों एवं पुर्जे के चयन, योग्यता परीक्षणों तथा प्रणलियों के मानवानुकूलन प्रमाणन हेतु स्वीकृती योजना को तैयार करेंगे।

3. सभी गगनयान प्रणालियों का उडान में शामिल होने से पहले मानव प्रमाणन प्रक्रिया से गुजरना आवश्यक है। इस संदर्भ में मानवानुकूलन प्रमाणन बोर्ड (एचआरसीबी) गठित है। एचआरसीबी राष्ट्रीय स्तर की समिति है जिसमें स्वास्थ्य एवं चिकित्सा, कर्मादल सुरक्षा, मिशन आश्वाशन तथा अभियांत्रिकी प्रणालियों जैसे क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल हैं।



हरिलाल आर

वरि. तकनीकी सहायक
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला



मेरे पहले शिक्षक

लगभग 50 साल पहले एक घर में पैदा हुई एक बच्ची। वह अपने परिवार में तीसरी संतान थी और दूसरी लड़की थी। परिवार में सब चौंक गए, क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि वह विकलांग है। समस्त उसके पैर के साथ हैं। साल बीत गए।

जब मैं 4 साल का हुआ, तो मेरे माता-पिता ने मुझे नर्सरी में दाखिला कराने का फैसला किया। हाँ, मैं अपने पहले शिक्षक से मिलने जा रहा हूँ। नर्सरी मेरे घर के पास थी, मैं अपने पिता के साथ वहाँ गया था। पिता ने कहा कि ये तुम्हारी शिक्षक हैं। वे एक कुर्सी पर बैठी थीं और अपने छात्रों को पढ़ा रही थीं। मैं भी शामिल हुआ। वास्तव में नर्सरी शिक्षक का अपना घर था। बीच-बीच में मैंने देखा कि वे हाथ-पैर जोड़कर इधर-उधर घूम रही हैं। मैं कक्षा के बाद घर वापस चला गया।

एक बार मैंने अपनी माँ से पूछा कि शिक्षक को क्या हुआ? फिर माँ ने बताया कि वे जन्म से ऐसी ही हैं। उन्होंने स्कूलों में नहीं पढ़ा, उनके भाई ने उन्हें पढ़ाया सब कुछ। ऐसा है क्या? मैंने सरलता से कहा। हम उनके लिए तीसरे बैच के छात्र थे।

“20 साल बाद वह विकलांग लड़की बनी 20-30 छात्रों की शिक्षिका”

मैंने उनसे 7वीं तक पढ़ाई की। मैंने स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त

किया। वहाँ की अंतिम कक्षा में मुझे 500 की बैलेंस फीस देनी थी। वह पैसा दिए बिना मैंने हाई स्कूल में दाखिला ले लिया।

हम किराए के मकान में रहते थे इसलिए हमने अपना घर अपनी मां के गांव के पास शिफ्ट कर दिया। वहाँ से मैंने अपने पहले शिक्षक को “Graduation” (स्नातक) तक नहीं देखा, 500 रुपये के कारण। मेरा सपना था कि एक बार मैं वह पैसा ब्याज सहित वापस कर दूँ।

शिक्षक के माता-पिता की मृत्यु के बाद उनके भाई, बहन, रिश्तेदार और पिछले छात्र आज तक उनकी देखभाल कर रहे थे।

हाँ उनके पास छात्रों का एक अच्छा समूह है या उन्होंने लोगों का एक अच्छा समूह बनाया है या वे अपने जीवन में एक अच्छे समाज का विकास कर रही हैं-पैरों के बिना। नौकरी मिलने के बाद मैं हर खास दिन अपने पहले शिक्षक से मिलने जाता था।

मैंने अपने जीवन में सबसे अच्छी बात यह की कि मेरे ऊपर मेरे शिक्षक के साथ 500 रुपये की देनदारी थी। वो मैं उनको पूरी तरह से वापस नहीं दे सकता। इसके कारण मैं अपने शिक्षक से बार-बार मिल पाता हूँ।

इसलिए हमेशा अपने सबसे अच्छे लोगों के साथ दायित्व निभाएं।

एस बी एफ योग्यता पुरस्कार वितरण समारोह 2021



प्रणली सिमुलेशन प्रयोगशाला का उद्घाटन



विश्व अंतरिक्ष
समाह समापन
समारोह
2021





सरस्वती के एन
नियंत्रक, ड्रॉ.प्र.कें.



समझौता ज्ञापन

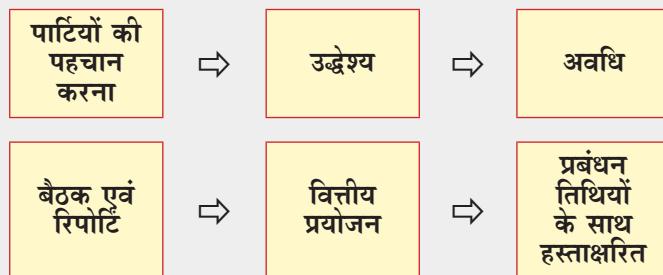
समझौता ज्ञापन दो या दो से अधिक पार्टियों के बीच हुए समझौते का औपचारिक दस्तावेज है। यह कानूनन बाध्यकारी नहीं है, लेकिन अनुबंध के साथ आगे बढ़ने के लिए पार्टियों की सहमति को दर्शाता है।

समझौता ज्ञापन प्रायः अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में देखे जाते हैं।

समझौता ज्ञापन

संविदा/आदेश

समझौता ज्ञापन की निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिए।



पार्टियों की पहचान करना : इसमें उन पार्टियों का नाम निर्दिष्ट होना चाहिए जिनके बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जा रहे हैं।

उद्देश्य : इसमें स्पष्ट रूप से उद्देश्य और लक्ष्य विनिर्दिष्ट होने चाहिए, जिनके लिए समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया जा रहा है।

अवधि : इसमें पार्टियों के बीच इस तरह के समझौते की अवधि यानी ज्ञापन के प्रारंभ और समाप्ति तिथियां विनिर्दिष्ट होनी चाहिए। साथ ही, इसमें उन परिस्थितियों का भी प्रावधान होना चाहिए जिनमें इस तरह के ज्ञापन को समाप्त कर दिया जाएगा।

बैठक एवं रिपोर्टिंग : पार्टियों के बीच बैठकें नियमित रूप से आयोजित करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए पार्टियां, हर तिमाही में एक बार बैठक आयोजित करने के संबंध में निर्णय ले सकती हैं।

वित्तीय प्रयोजन : ज्ञापन में पार्टियों द्वारा की जानेवाली पूँजी अंशदान की राशि विनिर्दिष्ट होनी चाहिए। इसमें महत्वपूर्ण वित्तीय निर्णयों के लिए प्राधिकृत व्यक्ति का भी उल्लेख होना चाहिए। निष्पादित किये जा रहे सभी कार्यों/कार्यक्रमों का वित्तीय लेखा-जोखा भी रखा जाना चाहिए।

प्रबंधन : ज्ञापन, कार्यक्रम प्राप्ति के दिन-प्रतिदिन के कार्यों के संचालन

के लिए व्यक्तियों या फोकल पोइंट की नियुक्ति का प्रावधान करता है। भूमिका, जिम्मेदारी तथा पारिश्रमिक (यदि कोई हो तो) का भी उल्लेख किया जाना चाहिए।

तारीखों के साथ हस्ताक्षरित : एक बार जब समझौता ज्ञापन तैयार हो जाता है और इसमें शामिल पार्टियों द्वारा सहमति व्यक्त कर दी जाती है तो इसे प्रत्येक पार्टी या संगठन/देश का प्रतिनिधित्व करनेवाले प्राधिकृत व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षरित और दिनांकित किया जाना चाहिए।

एमओयू स्पष्ट रूप से समझौते के विशिष्ट बिंदुओं की रूपरेखा तैयार करता है। यह पार्टियों का नाम बतलाता है, उस परियोजना का वर्णन करता है जिसपर वे सहमत हो रहे हैं, इसके दायरे को परिभाषित करता है, और प्रत्येक पार्टी की भूमिका और जिम्मेदारियों का विवरण देता है।

प्रक्रिया, प्रायः प्रत्येक पार्टी द्वारा प्रभावी रूप से अपना उत्कृष्ट समझौता ज्ञापन का मसौदा तैयार करने के साथ शुरू होती है। यह अपने आदर्श एवं वांछित परिणाम अपनी मान्यतानुसार अन्य पार्टियों को पेश की जानेवाली चीज़ों और अपने पार्टी में अप्रवर्तनीय बिंदुओं पर विचार करता है, यह प्रत्येक पार्टी के समझौता की प्रारंभिक स्थिति होती है।

समझौता ज्ञापन, उसमें शामिल लोगों, संगठनों या सरकारों की पारस्परिक रूप से स्वीकृत अपेक्षाओं का आदान-प्रदान करता है।

समझौता ज्ञापन का उपयोग आमतौर पर पार्टियों के बीच निर्दिष्ट व्यवसायिक लेन देन के लिए बातचीत के प्रारंभिक चरण में किया जाता है। इस स्थिति में, पार्टियों को आमतौर पर अपने लेन देन के सभी महत्वपूर्ण शर्तों पर सहमत होना होता है। लेकिन फिर भी वे इसके व्यापक ढांचे को निर्धारित करना चाहते हैं।

अनुबंध के समान समझौता ज्ञापन दो या दो से अधिक पार्टियों के बीच एक समझौता है। संविदा के विपरीत, एमओयू में कानूनन बाध्यकारी प्रतिज्ञा की आवश्यकता नहीं होती। संयुक्त उपयोग समझौते के संदर्भ में, प्रत्येक पार्टी की अपेक्षाओं और जिम्मेदारियों को परिभाषित करने के लिए समझौता ज्ञापन का उपयोग किया जाता है।

समझौता एक कानूनी दस्तावेज है जो सौदे को अंतिम रूप देने के

बाद तैयार होता है और यह एमओयू वास्तव में दो पार्टीयों के निर्णय पर पहुँचने का साधन है। एमओयू औपचारिक रूप से हाथ मिलाने से ज्यादा कुछ नहीं है।

यदि यह कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं है तो, कोई भी पार्टी दूसरी पार्टी को सूचित करके समझौता समाप्त कर सकती है। सामान्यतया इस स्थिति में कोई भी पार्टी किन्हीं कानूनी दायित्वों या बाध्यताओं के अधीन नहीं होगी।

भारतीय अनुबंध अधिनियम 1872 के अनुसार, प्रत्येक समझौता एक अनुबंध नहीं है, केवल वे समझौते जो कानूनी रूप से बाध्यकारी हैं, अनुबंध हैं जो कानून की अदालत द्वारा लागू करने योग्य हैं।

भारतीय अनुबंध अधिनियम, 1872 की धारा 10 कानूनी रूप से बाध्यकारी समझौते या अनुबंध की अपेक्षित आवश्यकताओं को निर्धारित करती है।

- ▶ इसमें एक पार्टी द्वारा प्रस्ताव दिया जाना चाहिए और दूसरे द्वारा स्वीकृत किया जाना चाहिए।
- ▶ इसमें पार्टीयों की सहमति स्वतंत्र होनी चाहिए और यह धोखाधड़ी, जबरदस्ती या अनुचित प्रभाव से प्रभावित नहीं होना चाहिए।
- ▶ इसमें पार्टी अनुबंध के लिए सक्षम हानी चाहिए। इसका मतलब यह

- है कि उनकी आयु 18 वर्ष से अधिक होनी चाहिए, उन्हें मानसिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए, और उन्हें दिवालिया नहीं माना गया हो।
- ▶ इसमें विधिसम्मत विचार होने चाहिए।
 - ▶ विधिसम्मत लक्ष्य होने चाहिए।
 - ▶ इसमें विधिसम्मत संबंध बनाने का उद्देश्य होना चाहिए।

भारत में समझौता ज्ञापन की वैधता ऊपर उल्लिखित पहली पांच आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है। हालांकि, यदि इसमें विधिसम्मत संबंध बनाने का उद्देश्य नहीं है तो यह अनुबंध नहीं है और इसका विशेष कार्यान्वयन नहीं किया जा सकता।

समझौता ज्ञापन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रत्येक पार्टी को अपना उद्देश्य बताने का अवसर देता है कि वे एक दूसरे से क्या अपेक्षा रखते हैं। समझौता ज्ञापन के प्रारूपण से किन्हीं झगड़ों को सुलझाने के प्रारूपण से विधिसम्मत बाध्यकारी अनुबंध करने से पूर्व किन्हीं झगड़ों को सुलझाने में सहायता मिल सकती है।

हालांकि समझौता ज्ञापन कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं है, अपने समझौते की विस्तृत संकल्पनाओं एवं अपेक्षाओं को स्पष्ट करते हुए, पक्षों को अनुबंध हस्ताक्षरित करने की तैयारी का अवसर देता है।

हिंदी पर्यावाड़ा आयोजन 2021, विश्व हिंदी दिवस आयोजन 2021 और हिंदी कार्यशाला का पुरस्कार वितरण, बैंगलूरु



कर्नाटक राज्योत्सव 2021, बैंगलूरु





अभिनव उपाध्याय

वैज्ञा. /इंजी. एससी

द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

गीतों के राजकुँवरः डॉ. कुँवर बेचैन



“अपनी उलझन में ही अपनी मुश्किलों के हल मिले
जैसे टेढ़ी-मेढ़ी शाखों पर रसीले फल मिले
उसके खारेपन में भी कोई कशिश होगी ज़रूर
वरना क्यूँ, सागर से यूँ, जा जा के गंगाजल मिले”

इन पंक्तियों का रचयिता होना जिस विराट व्यक्तित्व का परिचालक है, वह हैं डॉ. कुँवर बेचैन। समकालीन हिंदी साहित्यकारों में सर्वोच्च श्रेणी में माने जाने वाले डॉ. बेचैन से राबता होने की मेरी अनोखी कहानी है। सन् 2012 में, चौदह वर्ष का मैं सब टीवी पर ‘वाह वाह! क्या बात है’ नामक कविता और शायरी का कार्यक्रम देखा करता था। इसी की एक कड़ी में बेचैन जी भी आमंत्रित थे और उनके द्वारा सुनाया गया उनका प्रतिनिधि गीत, ‘नदी बोली समंदर से’ मेरे सीने के आर-पार हो गया। उसके आधिरी बन्द की आधिरी पंक्ति तो जैसे आत्मा को छूकर उसमें विलीन हो गई। मंत्रमुग्ध हो चुका मैं कुँवर जी के बारे में और जानने की कोशिश करने लगा।

डॉ. कुँवर बेचैन का वास्तविक नाम डॉ. कुँवर बहादुर सक्सेना है। उनका जन्म 1 जुलाई 1942 को मुरादाबाद जिले के उमरी गाँव में हुआ था। उनका परिवार संपन्न था और पिताजी पटवारी थे, परंतु भाग्य ने करवट ली और संकटों का आवागमन शुरू हो गया। जब ये दो महीने के थे तब इनके पिताजी का देहांत हो गया। घर डकैती पड़ी तो माँ ने गाँव छोड़ दिया और डेढ़ वर्ष की आयु तक अपनी नानी के घर पर रहे। सात वर्ष की उम्र में माँ का देहांत हो गया, नौ वर्ष की उम्र में बड़ी बहन का भी देहांत हो गया। दुनिया में अपने बहनोंई के सिवा इनका कोई न रहा, उनके साथ मुफलिसी के दिन जीते थे। अपने अथाह संकटों में मेहनत की अलख जगाकर डॉ. बेचैन ने जो अनुपम साहित्य - सूजन किया, वह निश्चित तौर पर सराहनीय है। वे एम-कॉम, एम ए (हिंदी) व पी-एचडी हैं। वे गाज़ियाबाद में एमएमएच महाविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में अध्यापन करते रहे तथा रीडर भी रहे। अनेक अध्ययनशील विद्यार्थीयों ने डॉ. बेचैन पर पी-एचडी की।

यूँ तो बेचैन जी के कई काव्य गुरु रहे हैं, परंतु वे अपने जीवन के दुखों, कष्टों एवं कठिनाइयों को सबसे बड़ा गुरु मानते हैं। बचपन में उन्होंने माता के वियोग ने और भूख से जो सामना किया उसी को दर्शित करती उनकी ये पंक्तियाँ हैं,

“तेरी हर बात चलकर यूँही मेरे जी से आती है
कि जैसे याद की खुशबू किसी हिचकी से आती है
बदन से तेरे ऐ माँ मुझको आती है वही खुशबू
जो एक पूजा के दीपक में पिघलते धी से आती है
हजारों खुशबूएँ दुनिया में हैं पर उससे छोटी हैं
किसी भूखे को जो सिकती हुई रोटी से आती है..”

डॉ. बेचैन ने अनेक विधाओं में सूजन किया है। अपने गीतों व ग़ज़लों के लिए मशहूर हुए परंतु उनके काव्य, उपन्यास और महाकाव्य भी अद्वितीय हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की गंगा-जमुनी तहजीब को अपने भीतर समाविष्ट किए हुए उनका साहित्य हृदय को झकझोर कर रख देता है। जन मानस की भाषा में कविता का असली सौंदर्य बोध लिए वे गहरी बात कहने में माहिर हैं। उदाहरण के तौर पर उनके ये शेर प्रस्तुत हैं, जो युगों-युगों से चले आ रहे भाग्य-कर्म के विवाद पर प्रकाश डालते हैं:-

“उसने मेरे छोटेपन की इस तरह इज्जत रखी
मैंने दीवारे उठाई, उसने उन पर छत रखी
क्यों हथेली की लकीरों से हैं आगे उँगलियाँ
बब ने भी किस्मत से आगे आपकी मेहनत रखी”

मेरे व्यक्तिगत जीवन पर बेचैन जी का अत्यधिक गहरा प्रभाव रहा है। उनकी ग़ज़लों के एक-एक शेर मेरे दुख-सुख के साथी बनकर एक परममित्र की भाँति सदैव साथ रहते हैं। कॉलेज में एक काव्य गोष्ठी के आयोजन के उपरांत उनसे रूबरू होने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस दिन की खुशी लफ्ज़ों में बयान करना मेरे लिए अंसभव रहेगा। उनके सरल, सहज और दयालु स्वभाव ने मेरे भीतर उनका सबसे ऊँचा स्थान सदा के लिए निश्चित कर दिया। मेरी कविता और शायरी पर उनका कितना असर है, इसका फैसला समय और श्रोता करेंगे, परंतु मेरी निजी जिंदगी का लगभग हरेक पहलू कहीं न कहीं उनके किसी शेर या किसी पंक्ति में प्रतिबिंबित होता है। मिसाल के तौर पर ये मतलाँ और शेर:-

“कोई रास्ता है, न मंज़िल, न तो घर है कोई
आप कहिएगा सफ़र ये भी सफ़र है कोई
रात दिन अपने इशारों पे नचाता है मुझे
मैंने देखा तो नहीं मुझमें मगर है कोई”

कुँवर जी ने हिंदी साहित्य को अनेक नई उपमाएँ, नई ऊँचाइयाँ प्रदान की हैं। उनकी प्रमुख गजल एवं गीत संग्रह :- ‘यिन बहुत सारे’, ‘धीर सॉकल: बाहर सॉकल’, ‘उर्वशी हो तुम’, ‘झुलसो मत मोरपंख’, ‘शामियाने कॉच के’ आदि हैं। उन्होंने एक हाइकु संग्रह की भी रचना की है। पैंतीलीस वर्षों की तपस्या से लिखा गया उनका महाकाव्य ‘प्रतीक पाँचाली’ आधुनिक युग की श्रेष्ठ रचनाओं में से एक है। मेरे महाविद्यालय आने पर आई आई टी, दिल्ली के केंद्रीय पुस्तकालय में प्रतीक पाँचाली की एक प्रति वे उपहार स्वरूप भेंट कर गए थे। जिसे मैंने कुछ समय पश्चात् पढ़ा और इस महाज्ञान के प्रकाश से आत्म विभोर हो गया। उन्होंने पुरानी बॉलीवुड फिल्मों में भी गीत लिखे जिनमें हेमलता जी द्वारा गाया गया, ‘जितनी दूर नयन से सपना’ प्रमुख है।

उन्होंने अपनी रचनाओं से, अपने कहन से, अपने जीवन से संसार को प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया। बदलती संस्कृतियों और उनसे पैदा होने वाली असमंजस की घडियों में जिस सहजता से उन्होंने हल निकाले और समाज के समक्ष रखा वह उल्लेखनीय है। कई बार विदेशों में काव्य यात्रा करके उन्होंने माँ हिंदी के लिये सम्मान अर्जित किया। कोरोना से ग्रस्त होकर उन्होंने 29 अप्रैल, 2021 को संसार को अलविदा कह दिया। उनके द्वारा जलाई गई मुहब्बत की मशाल सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेगी। अंत में उन्हों की गजल का मकाँ जो उनके जीवन को परिभाषित करता है:-

“सारी दुनिया में लुटाता ही रहा प्यार अपना
कौन है, सुनते हैं, “बेचैन-कुँवर” है कोई”



हरिलाल आर
वरि. तकनीकी सहायक
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

जीवन की कहानी

बच्चे का निरीक्षण करें। वह सोने के लिए ज्यादातर समय लेगा। जब भी नींद पूरी होती है वह बिना थके अगली नींद तक कुछ गतिविधियाँ करना शुरू कर देगा। जब भी भोजन की आवश्यकता होगी वह रोना शुरू कर देगा और तुरंत दूध पियेगा। वह स्नान करने और भोजन के दौरान भी खेलेगा। एचबी को खूबसूरती से सांस लेते हुए देखें। फुल टैंक पेट्रोल की तरह फेफड़े पूरी तरह भर जाएंगे। हर बार खुश रहे, कैसी जिदंगी।

एक बार जब हम बच्चे थे तो हम सब खुश थे। जब हम बड़े हो रहे हैं तो हमारी खुशी कम हो सकती है। इसका कारण है कि हम बहुत सारी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। “अगर हम खुशी चाहते हैं तो हमें बच्चे की तरह रहना चाहिए”।

अगर किसी बाइक के पेट्रोल टैंक को पूरा टैंक पेट्रोल नहीं मिल रहा है, तो उसे जंग लगा जाएगी। इसीलिए फेफड़ों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए कभी-कभी दिन में पूरी सांस लें। गर्म पानी धीरे-धीरे पियें। 90 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट लेने के बजाय पर्याप्त मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, सब्जियाँ और फल लें। भारत में अधिक कार्बोहाइड्रेट के कारण वसा के मामले में फेफड़ों में जमा वसा ग्लूकोज का कारण बनता है। जो फैटी लिवर, कोलेस्ट्रॉल, शुगर आदि का कारण बनेगा। अन्यथा

किसी भी तरह के व्यायाम या खेल गतिविधियों से हमें अतिरिक्त वसा को पिघलाना चाहिए। क्योंकि स्वस्थ शरीर से कुछ खुशी मिलती है।

आइये हम एक अमीर आदमी की तुलना नारियल के पेड़ पर ढाने वाले से करें। जीवन के प्रत्येक चरण में वह ऊँचा होता जा रहा है। एक विशेष ऊँचाई पर उसे नारियल को नीचे काटने की आवश्यकता होती है। तब हम एक गरीब आदमी की तुलना एक अच्छे से जमीन खोदने वाले से करते हैं। जीवन के प्रत्येक चरण में वह बहुत संघर्ष के साथ नीचे की ओर जा रहा है। लेकिन कुछ बिंदु, पर वहाँ पानी मिलेगा। लेकिन एक बात याद रखें कि पहले व्यक्ति को धरती पर आना पड़ता है और दूसरे को अपनी उपलब्धियों को महसूस करने के लिए धरती पर आना पड़ता है। इसका मतलब है कि जीवन को पृथ्वी से ही सामना करना है। प्रत्येक व्यक्ति का एक अलग जीवन है और वह भगवान द्वारा दिया गया है।

दूसरों के जीवन की तुलना या नकल करने की कोशिश न करें क्योंकि भगवान ने हर किसी को अलग प्रश्न पत्र दिया है तो बस खुशी के साथ जीवन का सामना करने की कोशिश करें।



जितेन्द्र कुमार ठाकुर

तकनीकी सहायक
द्र.नो.प्र.कै., वलयमला

पिता-पुत्री संवाद

21वीं सदी में भी लड़के-लड़कियों में भेद किया जाता है। यह एक विडंबना ही है कि जहाँ लड़कों को पूर्ण मौका दिया जाता है तो वहाँ लड़कियों को मौका दिए बिना ही व्याह दिया जाता है। मेरी यह कविता एक ऐसे लड़की की कहानी है जो अपने घर-समाज से लड़कर लक्ष्य को हासिल करती है। यह महज एक कविता ही नहीं, अपितु समाज की सच्चाई है।

एक सुबह यूँ ही घर में
छिड़ गया बात-विवाद।
रिश्ता लेके आया पिता से
पुत्री कहने लगी मन की बात।

पढ़ना चाहती हूँ मैं, बढ़ना चाहती हूँ।
जीवन का मूल्य समझना चाहती हूँ।
घर-गृहस्थी अम्मा नहीं समझ में आती
है इश्क मुझे किताबों से,
तुम चौके-चूल्हे में उलझाती।
बाबा कुछ दिन और
मुझे संघर्ष करने दो।
शादी-व्याह की बात छोड़ो,
अभी मुझको पढ़ने दो।

सुनकर बातें बिटिया की, पिता सहम गया
कुछ पल थमा, फिर गरजकर बोला।
जैसे समाज चलता है, वैसे ही चलना है
उम्र इक्कीस हो चुकी, अब शादी करना है।
अब भी व्याह न किया तो समाज हँसेगा।
विष व्यंग्य छोड़ेगा, मुझ पर थूकेगा।

सच है, समाज के डर से
कितनी बच्चियाँ बली चढ़ीं।
झूठी मान-मर्यादा के चलते
कलम छोड़ झाड़ पकड़ीं।
पर मैं न अपना सपना व्याहूँगी
पहुँगी-लिखुँगी खुद अपना भाग्य लिखूँगी।
पढ़ा-लिखाकर बचपन से
मुझको पंख लगाया
अब उड़ने की बारी आई
तो खुद पंख कुतरने को आया।

अबकी बार पिता झल्लाया
गुस्से में अम्मा पर चिल्लाया।
देखो कैसे जुबान चलाती है
तेरा लाड़-प्यार ही, इसे बहकाता है।
इतना अच्छा रिश्ता है
फिर हाथ से चला जाएगा।
समझाओ अपनी लाड़ली को
नहीं तो पीछे पछताएगी।
पर बिटिया को कहाँ समझ में आनी थी
उन्हें तो अपनी किस्मत खुद ही लिखनी थी।
पढ़ने को आतुर वो घर से निकल आई,
अपना भविष्य बनाने को कर ली सबसे लड़ाई।



बेटी के जिह के आगे, पिता भी झुक गया
मन में शेष भरा था, फिर भी आशीर्वाद दिया।
समाज का ताना-बाना, हर रोज सहता गया
बेटी हाथ से निकल गयी है,
अपमान का धूँ पीता गया।

फिर एक दिन अचानक
फोटो अखबार में छपती है
बिटिया कलक्टर बन गई
खबर चारों ओर फैलती है।

कल तक जो व्यंग्य बरसाते
आज कदमों में पड़े हुए थे।
मीडिया पुलिस हर कोई
द्वार पर खड़े हुए थे।

इतना सम्मान गाँव में,
कभी किसी को मिला न था।
पिता के नेत्र में आँसू

और चेहरे पे उजाला था।
एक रिपोर्टर ने पूछ लिया,
बिटिया कलक्टर बन चुकी है,
कुछ तो कहिये...
कैसा महसूस कर रहे...
अपना हाल बयान करिये।

सच कहता हूँ
कल तक था जिस पर रोष मुझे
उसने ही मेरा नाम किया।
बेटा जो कर न सका,
बेटी ने वो काम किया।

फर्क न समझो बच्चों में
मौका सबको समान दो।
बस इतनी ही विनती है मेरी,
बेटियों को पढ़ने दो,
जीवन में आगे बढ़ने दो।



ए एस आई
पुरस्कार

विदेशक द्वारा सी ए ई एफ का उद्घाटन



Handing Over of Mask to Director LPSC by SBF Members 16-09-2021





कृष्ण चंद्र जोशी
वैज्ञा./इंजी. एसके.
द्र.नो.प्र.के., वलियमला

दो मैराथन जो मेरे बचपन का सपना था

मैराथन ! मुहावरों में मैराथन से गुजरना कई बार हुआ है, या फिर उन तस्वीरों या विडियोज़ जो कि मैराथन के माहिर खिलाड़ियों की, हम बचपन से देखते आए हैं, पर अचानक जब आप भरपूर रोमांच के साथ उन साहसी धावकों के बीच खुद खड़े हों जिन्हें पूरी बयालीस किमी की दौड़ लगानी है तो यह एहसास बिल्कुल अलग होता है। बचपन का एक ऐसा गोलू-मोलू लड़का, जिसके लिए 1 किलोमीटर भागना भी मुश्किल रहा हो, वह एक साथ इतना भागेगा !

मैराथन असल में 42.167 किमी की रेस होती है। बेशक ये बहुत लम्बी दूरी है और इसके लिए काफ़ी प्रैक्टिस की ज़रूरत होती है। प्रैक्टिस की शुरुआत अपनी कुल क्षमता में धीमे-धीमे, कुछ-कुछ किलोमीटर जोड़ते जाने से होती है और इसकी तैयारी का आधा पड़ाव है, हाफ़ मैराथन। हाफ़ यानि आधा, यानि 21.0975 किलोमीटर की दौड़ जो कि 42.167 किमी की मैराथन से स्वभाविक रूप कम ही है।

तो कुछ एस साल की तैयारी के बाद मैंने भी कोलकाता में आयोजित एक मैराथन में अपना नाम दाखिल करवाया। मेरी क्रद काठी को बचपन में जिसने देखा होगा वे जानते हैं कि यह कितना बड़ा अवसर होने वाला था मेरे लिए।

एक राज बताऊं ! इसकी शुरुआत बचपन में एक सपने से हुई। लेकिन खुली आंखों से देखे एक ऐसे सपने से जो फिर नज़रों से हटा ही नहीं। जाने कौन सा साल रहा होगा, टीवी पर मुंबई मैराथन का सीधा प्रसारण चल रहा था। बहुत सारे लोग, जिसमें नेता, अभिनेता, बच्चे जवान, अधेड़, बूढ़े ये सारे लोग सुबह-सुबह सड़कों पर निकल पड़े थे दौड़ने के लिए। अद्भुत नज़ारा था।

लेकिन कुछ घंटों में देखा तो बस कुछ ही लोग इस दौड़ में शेष रह गए थे। प्रतिशत में कहें तो शुरुआत करने वाली भीड़ का अंदाजन 10 प्रतिशत लोग ही पूरा खत्म कर पाए थे, इस मैराथन को। इसकी तकनीकी गुत्थी मेरे सामने बाद में खुली। ऐसा असल में इसलिए हुआ था क्योंकि एक मैराथन के इवेंट में, 4 किस्म के सब-इवेंट्स होते हैं। मैराथन, हाफ़ मैराथन, 10 किलोमीटर और 5 किलोमीटर के फ़न रन। इसमें प्रतिभागियों की सँख्या आम तौर पर दूरी के विपरीत अनुपात में होती है।

उस दिन इस मुंबई मैराथन को टीवी पर देखने के बाद मेरे ज़ेहन में एक सपने ने दस्तक दी। एक खुली आंखों से देखा ऐसा सपना जो कभी ढलता नहीं, जब तक उसे जी ना लें। खुद को ललकारते हुए मेरे भीतर एक गूंज पैदा हुई, “एक दिन मैं भी ज़रूर मैराथन दौड़ूँगा !” इसकी शास्वत अनुगूंज ने मुझे यहां ला खड़ा किया था, भरपूर रोमांच के साथ उन साहसी धावकों के बीच जिन्हें पूरी बयालीस किमी की दौड़ लगानी थी।

यह सन् दो हज़ार बीस में फरवरी महीने की बीसवीं तारीख थी। इसे अंकों में लिखा जाए तो 20/02/2020। दो और शून्य का शानदार संगम। रविवार की सुबह कोलकाता में रेंजर मैदान के सामने सुबह 6 बजे यह हाफ़ मैराथन शुरू होने वाली थी।

हालांकि, हरदीप जी और मैं सुबह 5 बजे ही वेन्यू की ओर निकल गए थे, पर कोलकाता की सड़कों को मैराथन के लिए जगह-जगह बंद कर दिया गया था। तो हम गाड़ी से इवेंट तक नहीं पहुंच सकते थे। इसलिए हमने सोचा कि क्यों ना भाग कर ही पहुंचा जाये स्टार्टिंग पॉइंट तक, जो कि तीन किलोमीटर की दूरी पर था। पहले ही बहुत समय बीत चुका था और लेट हो जाने की आशंका थी, तो ये दौड़ यहीं से शुरू हो गयी। जब तक हम इवेंट में पहुंचते काउंट डाउन स्टार्ट हो चुका था लोग स्ट्रॉचिंग करके स्टार्ट लाइन पर पहुंचने लगे थे।

क्रिश्माई क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने फ्लैग दिखा कर इवेंट को स्टार्ट किया। मेरे लिए यह भावनाओं से भर जाने वाला क्षण था। मैं उस स्टार्ट पॉइंट पर था जिसका सपना सैकड़ों किलोमीटर दूर पहाड़ों में, कई साल पहले मैंने टीवी पर देखा था। जो सपना मुझे हरदम बेकरार करता रहा और इतने सालों में मेरे ज़ेहन से एकपल भी नहीं उतरा।

तो यहां से शुरू होती है, मेरी हाफ़ मैराथन। लगभग 700 लोग होंगे, जब दौड़ शुरू हुई। इस भीड़ में भी बहुत कुछ था देखने को जो आपको विस्मय से भर दे। मैंने देखा एक छील चेयर पर एक लड़का है, जिसकी आखें ऊर्जा से भरी हुई हैं। एक क्रीब 50 साल की ‘जवान’ महिला है, जो बिना जूतों के रेस में कूद रही हैं, कुछ विदेशी चेहरे हैं, कुछ बच्चे, कुछ लोग पीठ पर स्लोगन ओढ़े, जागरूकता फैलाना चाहते हैं। और भी, ऐसे ही कई लोग। सब दौड़ पड़ते हैं। यह दौड़ असल में पहला स्थान पा जाने की नहीं है। अधिकतर लोगों को बस दौड़ पूरी करनी है, और कुछ को अपनी पिछली दौड़ से बेहतर करना है।

लोग एक दूसरे को प्रेरित करते हुए आगे बढ़ते रहते हैं। एक पेस को बरकरार रखते हुए। क्योंकि दूरी बहुत ज्यादा है, तो इसके लिए शरीर की शक्ति के साथ ही दिमाग़ का भी पूरा इन्हिंहान होता है।

मैं भी कुछ लोगों को पीछे छोड़ता हुआ आगे बढ़ता गया। शुरू के 10 किलोमीटर कुछ आसान थे। इतना मैं प्रैक्टिस के दौरान भागता रहा था। कुछ 58 मिनट में यह दूरी मैंने पूरी कर ली। इतने उत्साही लोगों के बीच शायद कोई भी भाग सकता है, 10 किलोमीटर। लेकिन इससे आगे लोग काफ़ी कम होते गए। कुछ मुझसे आगे निकल जाते तो कुछ पीछे रह जाते और अचानक इतनी भीड़ के बाद आप अकेले हो जाते हैं। हालांकि, लगातार चढ़ती हुई सांसों की आवाज़ के बीच इस मैराथन में आपके साथ निरंतर कोई दौड़ रहा है। उसके पश्चात आप रुक सकते हैं, जो लगातार आपके साथ बरकरार हैं। वह है, अंतहीन विचारों का एक ऐसा अनवरत सिलसिला, जो आपसे संवाद करता है, आपकी थकान के बीच आपको हरदम प्रेरित करता है।

कुछ दूर मेरे ही पेस से दौड़ने वाले एक लड़के से मुलाक़ात हुई। आशुतोष नाम था उसका और उसकी ये 10वीं मैराथन थी। उसको मैराथन के बहाने शहर घूमने का शौक था। विक्टोरिया मेर्मोरियल के सामने से गुजरते हुए मुझे उसकी बात की सार्थकता महसूस हुई। ये मैराथन का रास्ता कोलकाता शहर की कुछ प्रमुख जगहों से होकर गुजर रहा था। ये सब इतना रोमांचक था कि पैरों की दुखन का पता नहीं लग रहा था।

बातें करते करते 3-4 किलोमीटर निकल गए। आशुतोष तो कुछ पेस बढ़ा कर आगे निकल गया। उसने अपने अनुभव से अपने पेस का दूरी के साथ मेल करना सीख लिया था। दूसरी ओर मैं अब तक अपना बेस्ट दे चुका था। धीरे-धीरे मेरा पेस कम होने लगा। पांच दर्द करने लगे। कुछ स्वयंसेवी जो दर्द निवारक स्प्रे लेकर खड़े थे उन्होंने दर्द भुलाने में कुछ मदद की और इस तरह मैं हाँफ़ती सांसों से 19

किलोमीटर पूरा कर पाया।

अब हर एक क्रदम उठाना मुश्किल हो रहा था। सांसें फूल गई थीं। पैर शिथिल पड़ रहे थे। देह की हरकतों पर क्राबू धीमा हो चला था। लोग दिख रहे थे, मुझसे आगे बढ़ते हुए। ये अनुभवी लोग थे शायद। कहता था इन्होंने अन्तर्मन की किसी पोटली में आगे की दौड़ के लिए ऊर्जा बचा कर रखी होगी।

लेकिन, मैंने तो ऐसी कोई पोटली बनाई ही नहीं थी। संभवतः यह अगली बार के लिए सबक हो। लेकिन ऐसे में एक चीज़ थी जो मुझे मेरे लक्ष्य की ओर धकेल रही थी और वह चीज़ थी-मेरा सपना। मैराथन में हिस्सा लेने का मेरा सपना, जिसमें उसे पूरा करने की स्वाभाविक उत्कंठा शामिल थी। यह सपना मुझे किसी तरह खींच कर उस ओर धकेल रहा था जहां तकरीबन 2-3 किलोमीटर बाद मेरे बीते कई सालों के एक सबसे अहम सपने की मंज़िल थी।

अब बस 400 मीटर शेष बच गए थे। शरीर जवाब दे चुका था और पांव में शायद कोई छाला निकल आया होगा, वह भी बुरी तरह दुख रहा था। अब बस ढह जाना था। चूर हो जाना। लेकिन कैसे? फिनिश लाइन 200 मीटर भी नहीं रह गई थी। मैं किसी तरह खुद को रगड़ते हुए खींच रहा था। कुछ लोगों ने पीछे से आकर कंधे पर हाथ रखा। वे मेरा हौसला बढ़ाना चाहते थे। अब आखिर के सौ मीटर बचे थे। मैंने देखा वह व्हील चेयर वाला लड़का मुझे पार कर आगे निकला जा रहा है। उनकी आंखें उत्साह से चमक रही थीं, जैसे मेरा हौसला बढ़ाने के लिए ऐसी साकारात्मक ऊर्जा मुझे छू गई, पूरी देह की ऊर्जा को फिर से समेट कर उसके साथ-साथ दौड़ने लगा और हमने हाफ़ मैराथन की फिनिश लाइन साथ-साथ पूरी की।

यह थी मेरी हाफ़ मैराथन की पूरी कहानी। ऐसा कुछ कर लेना जो तुम्हें कभी लगता हो कि यह असंभव है, बड़ा ही सुखदायी होता है।

जनवरी-मार्च 2021 तिमाही की हिंदी कार्यशाला



राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह 2021 का उद्घाटन समारोह



लॉकडाउन की पहली हवाई यात्रा



श्रुति दीपशिंह
पत्नी श्री राजीव वर्मा
द.नो.प्र.कै., वलियमला

बात 25 मई 2020 की है जब पूरा विश्व भयंकर महामारी के प्रकोप से जूझ रहा था और मैं चेन्नई हवाई अड्डे पर थी। जहां सभी के चेहरे पर मातम के साथ एक अजीब सी चुभने वाली खामोशी थी। लोग एक दूसरे से डरकर अजीब सी नजरों से देख रहे थे और पूरे हवाई अड्डे पर सन्नाटा पसरा हुआ था पर एक मेरे चेहरे पर खिलखिलाहट थी। यह खिलखिलाहट एक लंबे समय के प्रयास और घर वापसी की थी। यह खिलखिलाहट चेन्नई के हवाई अड्डे पर आए बाकी सभी यात्रियों के कानों के साथ-साथ बदन में भी चुभ गई। मानों मेरे मास्क लगाकर हँसने भर से भी उन्हें यह विश्वव्यापी महामारी पकड़ लेगी।

जब भारत में 24 मार्च 2020 को लॉकडाउन हुआ तब बहुत सारे लोग अलग-अलग जगहों पर फंसे हुए थे। उन्हीं तादाद में एक मैं भी थी और घर जाने के हर संभव प्रयास में मेरे साथ-साथ आसपास के सभी लोग और परिवार जन लगे हुए थे। किंतु घर से 800 किलोमीटर की दूरी तय करना, वह भी बिना किसी साधन के संभव नहीं था और जब सरकार ने थोड़ी राहत प्रदान करते हुए सड़कों पर वाहन की मंजूरी दी तब आनन्द-फानन में ई-पास की व्यवस्था करके फोर व्हीलर से ही भैया आकर ले जाने का फैसला कर बैठे। इतने में न्यूज़ चैनल पर आया कि अब ट्रेन भी हर रविवार को चलाई जाएगी। तब हमने सोचा कि जहां इतना इंतजार किया है वहां एक हफ्ते और सही, पर रविवार की टिकट न जाने कब ऑनलाइन बुक होकर बंद भी हो गई। कुछ पता ना चला। फिर नॉर्थ की एक बस खुलने की सूचना आई। उसमें भी काम ना बना। अंततः संघ के कुछ लोगों ने मिलकर एक वैन बुक करने का निर्णय लिया और मुंह मांगे दाम पर हमलोगों ने हामी भरकर ई-पास तैयार करके यात्रा शुरू करने का निर्णय किया, पर ई-पास का नंबर आते-आते फिर एक और रविवार वाले टिकट आरक्षण की सूचना आ गई।

यह सूचना अचानक एक कॉल द्वारा आयी चूंकि महामारी के दौरान दूर-दूर तक के लोग व्हाट्सएप समूह के द्वारा जुड़ चुके थे और जिनकी मंजिल एक थी, वो दोस्त बन चुके थे। उन्हीं दोस्तों में से एक

का कॉल था जिसने कॉल वेटिंग में रहकर भी टिकट बनवाने की सूचना दी और कहा कि अभी अभी खुला है। जल्दी करवाओ और उसी बक्त मेरे भैया ने टिकट बुक करके बधाई दी।

टिकट बुकिंग के दो दिन के भीतर ही मेरे मंगेतर से खबर आई कि चेन्नई से हवाई जहाज रवाना की जाएगी। फिर क्या था, इंतजार में बैठे थे कि इस महामारी में हवाई जहाज का टिकट मिल जाए तो थोड़ी राहत होगी और थोड़े प्रयास के बाद 25 मई 2020 को सुबह 10:00 बजे की उड़ान मेरे भैया ने आरक्षित कर दिया।

इतने में भी सफर समाप्त नहीं हुआ। 25 मई 2020 को प्रातः काल 01:45 बजे मोबाइल पर संदेश आया कि उड़ान रद्द कर दी गई है और इस उड़ान के भरोसे रेलगाड़ी एवं सभी यातायात के साधनों का टिकट हमलोग रद्द करवा चुके थे, क्योंकि आरक्षण भैया द्वारा किया गया था और उनके देर रात जागने की आदत के कारण उन्होंने तुरंत ही संदेश देख कर उस पर काम करना शुरू कर दिया और मुझे



वक्त है... गुजरेगा

संकेत अग्रवाल

वैज्ञा/इंजी-एमटी

द.नो.प्र.कॉ., वर्लियमला



इस संसार में चाहे हर चीज स्थायी रह सकती है पर वक्त कभी नहीं रह सकता।

इस कविता में दरअसल यही बताने का प्रयास किया गया है कि चाहे स्थिति जैसे भी हो, वक्त जैसा भी हो, बदलता जरूर है...। बात है तो बस धैर्य रखने की...।

तू उभरेगा,
इंतजार कर, वक्त है,
गुजरेगा...!

पहचानने से तुझे...
आज यह जग,
मुकरेगा...!

आँख से आँख मिलाकर,
तू भी कभी,
गुजरेगा...!

लिखेगा जब इतिहास तू...
शामिल होने,
जग उतरेगा...!

तू बस इंतजार कर,
वक्त है,
गुजरेगा...!

हौसला भी तेरा,
तिल-तिल कर,
बिखरेगा...!

तू धैर्य रखना,
तू फिर से,
निखरेगा...!

वक्त नहीं तेरा,
दौर आएगा,
तू उभरेगा...!

तू बस इंतजार कर,
वक्त है,
गुजरेगा...!!

02:15 बजे सुबह में कॉल करके जगा कर बोले कि “पहली वाली उड़ान रद्द हो गई है। मुश्किल से 04:50 बजे सुबह की उड़ान मिल रही है। तुम्हारे लिए आरक्षित करूं, तुम हवाई अड्डे पर 03:00 बजे सुबह पहुंच पाओगी?”

मैं 5 मिनट का वक्त लेकर पहले से तय, तीन चार गाड़ी वालों को कॉल मिलाया। एक ने आंखें मलते हुए तमिल में कुछ संवाद किया ना उसकी भाषा मुझे समझ आई, ना मेरी उसे फिर भी तय हो गया कि अभी आना है, हवाई अड्डे जाने के लिए और फिर मैंने भैया से कहकर टिकट आरक्षित करवाकर आनन-फानन में सभी चीजों को बटोरकर चार पराठे और थोड़ी सी बची हुई आलू की भुजिया बना कर डिल्पे में रख ली क्योंकि शाम तक घर पहुंचना था और रास्ते में कुछ खा भी नहीं सकते थे।

ई-पास, आरोग्य सेतु एप, ई-टिकट्स इन तमाम बंदोबस्तों के साथ ही हवाई अड्डे पर पहुंची और बाकी लोगों को उसी उड़ान का इंतजार करते देखकर सांस में सांस आई और इस तसल्ली में कि आखिर दो महीनों के इंतजार के बाद अब घर वापसी कर पाऊंगी। मैंने भैया को बड़ी ही प्रसन्नता के साथ हवाई अड्डे पर पहुंचने की सूचना देते हुए खुशी जाहिर करने में जोर के ठहाकों के साथ संवाद की, साथ ही हंसी भी आ गई थी। फिर क्या था? आसपास के सभी लोग जो काफी दूर-दूर बैठे थे। मुझे ऐसे धूरने लगे मानों अब मेरी इस हंसी द्वारा ही सारी महामारी फैलेगी और इस हवाई अड्डे पर आए सभी लोगों को संक्रमित कर देगी। ऐसे मैं मैंने अपनी भावनाओं पर थोड़ा काबू किया और अपने भैया तथा मंगेतर को अपनी यादगार उड़ान की सूचना देते हुए रातों रात सर पर कफन बांध कर वहां से सफर की और रवाना हो गई।



सरदार वल्लभ भाई पटेल और राष्ट्रीय अखण्डता



डॉ. अशवती एस
वैज्ञा./इंजी.एस.डी.
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

हमारे देश के स्वाधीनता-आन्दोलन और गणराज्य के नव-निर्माण में अग्रणी जननेता सरदार वल्लभ भाई पटेल सर्व त्यागी, देश, भक्त, निर्भय, राष्ट्रवादी थे। अपने गुरु-गंभीर व्यक्तित्व, त्यागमय चरित्र और संकल्प निष्ठा के बल पर वे स्वतंत्र भारत के प्रधान-मंत्री पद के सच्चे अधिकारी माने जाते थे। मगर गांधी जी की इच्छा से पद-मोह त्यागकर, उन्होंने नेहरू जी के नेतृत्व में राजसत्ता संभाली और कर्तव्य निष्ठा तथा अनुशासन का जीवन्त आदर्श प्रस्तुत किया।

वल्लभ भाई झावेर भाई पटेल जो सरदार पटेल के नाम से लोकप्रिय थे, सिद्धान्तवादी होने के साथ-साथ आदर्श, नीडर, साहसी राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने भारत के पहले उप प्रधान मंत्री के रूप में 1947-1950 तक कार्य किया। उनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 में आज के गुजरात में हुआ।

इंग्लैंड से बैरिस्ट्री करने के बाद वकालत शुरू किए तो सरदार पटेल ब्रिटिश न्यायाधीशों के लिए एक चुनौती-समान थे। सरदार पटेल एक कुशल अधिकारा हाने के साथ-साथ भारतीय काँग्रेस के नेता भी थे। उन्होंने भारत के प्रथम उप प्रधान मंत्री और गृह मंत्री का पद संभाला था। उनका व्यवहार स्वार्थ और अहंकार से परे था।

लौह पुरुष-सरदार पटेल

पूरा भारत आजादी के समय 562 छोटी-बड़ी रियासतों में बैंटा हुआ था। जुलाई 1947 में पटेल जी को गठित रियासत विभाग के मंत्री पद की भी जिम्मेदारियाँ दी गई थीं। इस विभाग के अंतर्गत समस्त रियासतों का एकीकरण करना था जिसका कार्यभार सरदार पटेल को सौंपा गया था। इस एकीकरण में पटेल जी का योगदान महत्वपूर्ण और सराहनीय ही था जिन्होंने उड़ीसा, नागपुर, पंजाब, कश्मीर, जूनागढ़, हैदराबाद जैसे रियासतों के एकीकरण में कामयाबी हासिल की। सबसे अन्त में भोपाल रियासत भारत में मिलवा दिया और इन्हीं योगदानों के लिए उन्हें ‘लौह पुरुष’ की संज्ञा दी गयी।

गुजरात में शराब बन्दी, महिला सशक्तीकरण, अशृश्यता और जातिगत भेदभाव के साथ-साथ उन्होंने 1920 में कानूनी प्रथा को समाप्त करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए। 1928 में

उन्होंने गुजरात में अकाल के कारण पीड़ित हुए लोगों की भरपूर मदद की और ब्रिटिश सरकार से पूरी तरह से कर-वापसी की माँग की। उनके इस माँग के आगे भी ब्रिटिश सरकार को घुटने टेकने पड़े। श्री वल्लभ भाई पटेल के इन्हीं योगदानों के कारण बारदोली के किसानों ने यार से उन्हें “सरदार” नाम से पुकारना शुरू किया।

भारत की एकता के सूत्रधार-श्री पटेल

किसी भी देश के विकास का आधार निःसन्देह एकता और अखण्डता ही है। भारत-जैसे विशाल देश जो वैविध्यपूर्ण है, में एकता कायम रखना पटेल जी के योगदान से ही हुआ है। उन्होंने देश की आजादी और उसके बाद पूरे भारत को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई थी। इसी कारण उन्हें राष्ट्रीय एकता का प्रतीक कहा जाता है।

वल्लभ जी एक कुशल व्यवस्थापक थे। गांधी जी से प्रभावित होकर उन्होंने सिर्फ स्वाधीनता संग्राम में ही नहीं, बल्कि गांधी जी का अनुयायी बनकर, काँग्रेस में भी शामिल होकर संगठन में सक्रिय भूमिका निभाने लगे। देशी रियासतों के भारत में विलय के मामले में पटेल ने हर तरह की नीति अपनायी। राजाओं को समझाया और भारतीय संघ से जुड़ने से होनेवाले फायदों से उन्हें अवगत कराया।

सरदार पटेल का निधन 15 दिसंबर 1950 में हुआ। 1991 में उन्हें “भारत रत्न” से सम्मानित किया गया। 31 अक्टूबर 2014 को राष्ट्रीय “एकता दिवस” के रूप में मनाने की घोषणा भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गई। गुजरात में नर्मदा के सरदार सरोवर बांध के सामने सरदार वल्लभ भाई पटेल की 182 मी. ऊँची लौह प्रतिमा जिसे “स्टैच्यू ऑफ यूनिटी” कहा जाता है, का निर्माण किया गया। यह विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है, जिसमें एक म्यूजियम भी बना है।

सरदार पटेल एकीकृत भारत के प्रणेता थे और वे भारत को पूर्णरूपेण एकता के सूत्र में बाँधने के लिए स्वयं जिम्मेदार थे। राष्ट्रीय एकता दिवस भारत के लौह पुरुष और उनके संकल्पों को श्रद्धांजली है।





अब खुशी की तलाश रहने दो
मुझको यूँ ही उदास रहने दो

खुशियाँ ले जाओ तुम मेरी
मेरे दर्द को मेरे पास रहने दो

पूनम यादव

सुपत्नी राम प्रकाश यादव
द्र. नो. प्र. कें., वलियमला



खुशी की तलाश

खुशी को किसी एक सांचे में परिभाषित नहीं किया जा सकता। यह सच है, मनुष्य के जीवन में कभी खुशी कभी गम के पल आते रहते हैं। उसे जीवन का एक हिस्सा समझ कर झोलते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए। खुशी में आदमी के चेहरे पर चमक आती है, दुख में चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं। हमें अपनी जिन्दगी का सबसे अच्छा पल तब लगता है जब हम ट्रेन में सफर करते हैं। ट्रेन ऐसी है जो हमें सारी दुनिया की सैर करा देती है, रास्ते में कितनी नई-नई चीजें देखने को मिलती हैं। कहीं पहाड़ है तो कहीं खाई नदी, पोखड़, तालाब, झरना, पेड़-पौधे, फूल-पत्तियाँ, कहीं बंजर भूमि तो कहीं घने जंगल। यह जंगल देखकर, सतपूड़ा के घने जंगल, उंधते अनमने जंगल, झाड़ ऊँचे और नीचे चुप खड़े हैं आँख मिचे।

झाड़ चुप है काश मूक शाल पलास चुप है।

सतपूड़ा के घने जंगल...

ऐसी छोटी-छोटी चीजों में खुशी तलाशी जा सकती है। जैसे ट्रेन में सफर करते समय हमारे पास खाने के लिए या पीने के लिए पानी नहीं रहता है उस समय हम परेशान रहते हैं, उसी समय अगर चाय पानी खाने का सामान कोई बेचने वाला आ जाए तो उस समय हमें बहुत खुशी मिलती है।

घर में खुशी की तलाश

घर में बहुत सारे लोग रहते हैं सब की सोच अलग-अलग होती है। किसी एक केवश की बात नहीं है कि सब को खुश रखना, लेकिन हम अपने-आप को पौजे सोच रखकर खुश हो सकते हैं। माँ, बाप अपने बच्चों की तरक्की देख कर खुश रहते हैं, अपनी अच्छी सेहत से खुश रहते हैं, दुख तो जिन्दगी में दस्तक देती ही रहती है उसी में हम अपनी खुशी भी ढूँढ़ लेते हैं।

खुशी को किसी एक सांचे में परिभाषित नहीं किया जा सकता है, यह सबके लिए अलग-अलग होती है। परंतु सर्वमान्य है कि यह चेहरे पर ढेरों चमक बिखरती है और आत्म-संतुष्टि होती है। सदियों से नए नए रूप में खुशी की तलाश होती रही है। यह भाँगर है पर इसकी तलाश शाश्वत है। विशेषकर वैश्विक महामारी के दौर और अनिश्चिता से धिरे माहौल में हर किसी को खुशी की दरकार है और हर किसी को खुशी के पल की तलाश है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार-खुशी के दो पहलू हैं-हेडोनिस्टिक

या सुखवादी-जिसमें व्यक्ति साकारात्मक (सुख-सुविधा, आनंद) और निश्चिंत महसूस करता है। परंतु सुख और आनंद स्वभाव से ही क्षणिक होते हैं। दूसरा यूडेमोनिक-जो खुशी की लोगों और पर्यावरण के साथ साकारात्मक संबंधों से भरपूर सार्थक (आत्म-स्वीकृति, व्यक्तिगत विकास, कुशलक्षेम, परिवारिक रिश्ते, काम और उपलब्धियाँ, संतोष और आशावाद) जीवन के बराबर है। किसी के लिए लगातार खुश रहना असामान्य बात होगी, क्योंकि जिन्दगी में अपने हिस्से की पीड़ा और तकलीफ समाई होती हैं। अगर आप उदास नहीं हुए तो कभी खुशी को जान नहीं पाएंगे।

आध्यात्मिक गुरुओं, मनोवैज्ञानिकों और उपदेशकों ने समग्र रूप में खुशी की परिभाषा-जिन्दगी में खुश होने के लिए कुछ बुनियादी भौतिक जरूरतें बताई हैं जैसे कि अच्छी सेहत, आकांक्षाओं और असलियत के बीच तालमेल, परिवार, दोस्तों और समुदाय के साथ समरस और सुधङ्ग रिश्ते, उद्देश्यपूर्ण जीवन और सार्थक काम, करुणा और दूसरों की मदद करना आदि है। आर्ट ऑफ लिविंग हैप्पीनेस में कहा गया है कि व्यक्ति खुश है तो उसका परिवार ज्यादा खुश रहेगा और परिवार खुश है तो पास-पड़ोस तथा इस तरह राष्ट्र खुश होगा।

खुशी का ज्ञान-विज्ञान

जिन्दगी में खुशहाली की अवस्था के मनोवैज्ञानिक और शारीरिक (भौतिक) पहलू होते हैं। किसी व्यक्ति के लिए बिना किसी वजह के हमेशा खुश रहना मुमिकिन नहीं हो सकता। अतः वांछित लक्ष्य प्राप्त कर संतुष्टि का अनुभव करना चाहिए। खुशी को अक्सर चिंताओं और नकारात्मक भावनाओं से मुक्त मनोदशा के रूप में देखा जाता है। कई लोग मन की अनेक भावनात्मक अवस्थाओं (उदासी, चिंता, डर, पीड़ा) के कारण खुशी का अनुभव नहीं कर पाते हैं।

खुशी पाने में काम-धंधे और पैसे की भूमिका- यकीनन, एक हृद तक पैसे से बुनियादी आवश्यकताएं और भौतिक सुख-सुविधाएं मिलती है, जिससे मन में संतुष्टि और सुख का अनुभव होता है। ये सुविधाएं हमारी खुशी को बढ़ाती है।

खुशी या आनंद के मंत्र/सूत्र

अमूमन, आपके विचार आपकी भावनाओं को जन्म देते हैं। अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की जागरूकता बढ़ाएं और असलियत को स्वीकारें। भविष्य की फिक्र या अतीत का मलाल

करने के बजाए वर्तमान में जीना खुशी बढ़ाता है। जिंदगी को अपनी तरह से जीएं। जिंदगी वक्त-वक्त पर जो कुछ देती है, उसका बेहतर से बेहतर इस्तेमाल कर जीवन को लचीला बनाएं और अपनी जरूरतों को यथासंभव कम रखें। भौतिक खुशियां कितनी भी जुटा लें, उससे आपकी चिंता और डर खत्म न होंगे, पर भीतरी आनंद निरंतर बना रहता है। प्रार्थना से हमारे भीतर शांति का भाव आता है, ध्यान और अंतर्चिंतन भी यही काम करता है, हम अपने को ईश्वर के सानिध्य में पाते हैं। सुकून खुशी की बुनियाद है और यही दुनिया में सुकून वाली जिंदगी का जरिया है।

आनंद की तलाश और साझा करने के तरीकों के बारे में वैज्ञानिकों, उपदेशकों और प्रेरक लोगों की सीख...

खुशी को प्रभावित करने वाली वजहें- हमारी सोच, भावनाएं और तौर-तरीके (आभार प्रकट करने, माफ करने, दूसरों की मदद) और बाहरी वजहें (काम का दबाव, अन्याय, खराब रिश्ते, हमारे आसपास होने वाली दूसरी घटनाएं) खुशी पर असर डालती हैं।

परमानंद का स्रोत- सदगुरु जग्गी वासुदेव के अनुसासर अक्सर लोग कहते हैं कि मन की शांति जीवन का लक्ष्य हो। परंतु शांत और आनंदित होना जीवन का लक्ष्य नहीं, बल्कि वह बुनियादी जरूरत है। वैज्ञानिक और चिकित्सीय आंकड़े बताते हैं कि आप भीतर से आनंदित होते हैं, तभी आपका शरीर और मस्तिष्क अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। कुछ अध्ययन से पता चलता है कि यदि आपने 24 घंटे बिना किसी चिड़िचिड़ाहट, उत्तेजना, क्रोध या चिंता के बिताए हों और आप केवल आनंद से भरे हों तो बुद्धि के उपयोग की क्षमता 100% तक बढ़ सकती है।

लेकिन, ज्यादातर लोगों के लिए उनके अपने विचार और अपनी भावनाएं बहुत बड़ी परेशानी के सबब हैं। मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल भारी कीमत वसूलती है। 10 साल पहले क्या हुआ? या क्या होगा?, लोग परेशान हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि वे अतीत और भविष्य को भुगत रहे हैं। पर वे केवल अपनी दो मानसिक शक्तियों (स्मृति और कल्पना) का इस्तेमाल अपने नुकसान के लिए कर रहे हैं। जो 10 साल पहले हुआ..., परसों हो सकता..., क्या अभी मौजूद है? नहीं न...? तो फिर ऐसे में अतीत और भविष्य के प्रति चिंताएं पागलपन हैं। लोग कहते हैं... यह मानवीय स्वभाव है। नहीं, यह उन लोगों का स्वभाव है जिसका मानवीय स्वभाव अपने नियंत्रण में नहीं होता। मानव शरीर इस धरती का सबसे जटिल मशीनरी या तंत्र है। यह एक सुपर-सुपर कंप्यूटर है, पर क्या आपने इसका यूजर्स मैनुअल पढ़ा है? यदि आप जैसे-तैसे इसका उपयोग करेंगे तो दुर्घटना होनी ही है। योग का अर्थ है उपयोगकर्ता के मैनुअल को पढ़ने की कला सीखना...

हमारा मानव शरीर 5 कोशों या परतों के योग से बना है।

- अन्नमय कोश-** भोजन शरीर के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। कहा गया है कि जैसा अन्न, वैसा तन और मन...। इस तरह से हमारा यह शरीर अन्न से बना (राशन का ढेर) है।
- मनोमय कोश (मानसिक शरीर)-** आज डॉक्टर मनोदैहिक रोगों के बारे में बताते हैं कि अगर आपको सिर में तनाव है तो आपके पेट में अल्पसर हो सकता है। यानि, मन को जो हो रहा है, वह शरीर के

साथ हो रहा है, क्योंकि जिसे आप मन (शरीर की प्रत्येक कोशिका की समझ) कहते हैं वह किसी एक स्थान पर स्थित नहीं।

- प्राणमय कोश (ऊर्जा शरीर)-** हमें जीवित रहने के लिए ऊर्जा की जरूरत होती है तथा ऊर्जा से ही शरीर को ताकत मिलती है और शारीरिक क्रिया होती है।
- विज्ञानमय कोश (सूक्ष्म शरीर)-** हमारा शरीर कई विज्ञानमय सूक्ष्म कोशिकाओं से बना है।
- आनंदमय कोश (परमानंद शरीर)-** अभौतिक आयाम जो हर भौतिक वस्तु का स्रोत है। हमारे अनुभव में जब भी हम इसे छूते हैं, आनंदित हो जाते हैं। अगर आप शरीर की पहली तीन परतों को एक सीधे में कर लेते हैं तो इससे आनंद कोश को छूने का एक मार्ग और संभावना पैदा होगी और परमानंद एक स्वाभाविक स्थिति बन जाएगा।

भारत शायद एकमात्र ऐसी संस्कृति हो जो ईश्वर या सृष्टि के स्रोत को आनंद के रूप में वर्णित करती है और जिस क्षण आप उसके संपर्क में आते हैं, आप आनंदित हो जाते हैं।

खुशी तो जीवन का एक नजरिया (एक नियम) है- श्री रविशंकर कहते हैं कि आप नहीं जानते तो खुशी आपके लिए विचार भर है, जानते हैं तो आप ही खुशी हैं। यह इंसान की सबसे कुदरती अवस्था है और तब जाहिर होती है जब आप इसे अंदर से महसूस करते हैं। विडंबना यह है कि खुद खुशी का स्रोत होते हुए भी दूसरी जगहों पर खुशी खोजते (उस मछली की तरह जो समुद्र में पानी खोजती है) रहते हैं।

खुशी के कारक-

स्वास्थ्य, पर्यावरण, रूपया-पैसा, महत्वाकांक्षा आदि खुशी के कारक होते हैं। इच्छा का मतलब है भविष्य में इच्छा पूरी करने के जरिए खुशी पाने का जतन करना। चुनौती यह है कि अपनी तलाश को तिलाजली दिए बिना खुश रहना सीखें। हमें मन-मस्तिष्क को इच्छानुसार दूसरी दिशा में मोड़ने और किसी भी चीज में अटके नहीं रहने की क्षमता विकसित करने की जरूरत है। खुशी नजरिया है जिसे विकसित करना होता है, नियम है जिसका पालन करना होता है। आपको खुशी से तादात्य बिठाना होता है। यह कोई शारीरिक या मनोवैज्ञानिक परिघटना नहीं। जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं। तमाम परिस्थितियों में जतन-पूर्वक अपने स्वभाव में, खुशी के स्वभाव में टिके रहना होता है। ठान लें कि दुनिया की किसी भी चीज को अपनी खुशी में खलल नहीं डालने देंगे।

खुशी का रास्ता-

कोई भी मनुष्य अपने आप में पूर्ण द्वीप नहीं, परिवार में एक सदस्य नाखुश है तो असर दूसरे सदस्यों पर पड़ता है। हम सब परस्पर अंतर्निर्भर और अंतर्संबंधित हैं। खुशी हलांकि व्यक्तिगत नजरिया है, पर हमारे पर्यावरण से जुड़ी हुई है। बगल की सड़क पर दंगा हो तो कोई खुश होने का दावा नहीं कर सकता। जिस तरह हमें दांत साफ करना सिखाया जाता है, वैसे ही हमें चित्त की सफाई का ख्याल रखना चाहिए कि वे नकारात्मक विचारों और परिस्थितियों को कैसे संभालें और सकारात्मक मानसिकता के साथ कैसे आगे बढ़ें। सरकार, एनजीओ

और धार्मिक संस्थाओं का प्राथमिक लक्ष्य खुश और स्वस्थ समाज का निर्माण करना है। परिस्थितिकीय तंत्र के साथ तादात्म्य के साथ अपने सच्चे स्वभाव का पालन करना ही टिकाऊ खुशी का अकेला रास्ता है।

आध्यात्मिक मार्गदर्शक- दलाई लामा (बौद्ध आध्यात्मिक गुरु) की राय में जीवन का उद्देश्य खुश रहना है और लक्ष्य साधने का सबसे सटीक उपाय करुणा और उदारता है। ओस्वाल्ड कार्डिनल ग्रेसियस कहते हैं कि भौतिक वस्तुओं से नहीं, प्रेम से आता है सच्चा आनंद...

खुशी का राज- दुनिया भर की दौलत देकर आप इसे खरीद नहीं सकते, पर मुमकिन है कि कोई नन्हीं-सी चीज आपको अथाह खुशी दे जाए। रुपया-पैसा तो खुशी के बहुत से चाकरों में से एक है। किसी के पास दुनिया भर की दौलत हो, फिरभी इस बात की गारंटी नहीं कि वह खुशी पा ही सकेगा। किसी को कुदरत के दिव्य रूप को निहारना, तो

किसी को हवादार मौसम में ठहलना खुशी देता है। जिंदगी के एहसास में रस है, उसका तत्त्व जो है उसे परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता। एक से दूसरे देश और संस्कृतियों में भी अवधारणाएं बदलती हैं। पश्चिम को अक्सर भौतिकवादी और परमानंद प्राप्त करने के साधन के लिए उपभोगताकावाद पर केंद्रित बताया जाता है, जबकि पूरब और खासकर भारतीय दर्शन सांसारिक सुखों को माया-मोह कहकर खारिज करता है और मोक्ष (कष्ट-पीड़ा देने वाले जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) प्राप्त करने के लिए सत-चित आनंद का उपदेश देता है।

निष्कर्ष- यदा-कदा नकारात्मक महसूस करना लाजमी है, आपके पास जो है सराहें, दूसरों में निवेश करें, जिंदगी का आनंद उठाने का वक्त निकालें और कुछ ऐसा खोजें जिस पर काम कर उसे बेहतर बना सकें।

गगनयान सेमीक्रायो हार्डवेयर का हस्तांतरण समारोह, वलियमला



अधिवर्षिता पूर्व प्लॉनिंग कार्यक्रम, वलियमला



सुरक्षा दिवस समारोह 2021, वलियमला



गुणवत्ता दिवस 2021, वलियमला



परछाई की पहचान



कमरे के उस कोने में इक शीशा था।

धूल से मैला, फिर भी फुर्तीला था।

मिट्टी से बनाया गया था, पर दिल तो उसके भी पास था।

नियत में उसकी पहचान दिखाना था मगर,

रुह को छिपाना उसका काम बन गया।

अधूरे प्यार के आँसुओं को माथे की इक बिंदी में धुलाके,
तीखी नजरों की उभरती आग को काजल के साये से सजाके,

बेरंग हो रहे सपनों के बादल को इक लट में दबाके,
इक फीकी मुस्कान पर पर्दा लगाना उसका तरकीब था।

दुनिया के लिए वो एक झिल्लड़ सा शीशा था,

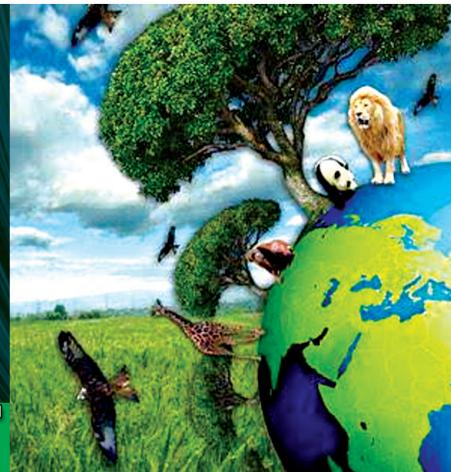
मगर असल में तो परछाईयों का कफ़न था।

काम उसका सबका पहचान दिखाना था,

मगर करना तो सब परछाई में छुपाना था।



सुलजा लाल
पत्नी श्री लालु वी, एल वी डी
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला



बिजा सीखे

प्रकृति की गोद में जीवित

हम नश्वर कलियाँ हैं।

माँ जो सिर्फ प्यार ही देती,

लेकिन मानव जैसा

विषधर चाहता है;

माँ के सीने के गरम खून।

पालक माता को भूलकर वो

लालच से धन के पीछे

दौड़ रही हैं सदैव।

धन पाने की लालच से

प्रकृति की गोद में खुदाई करके,

चट्टानें टूट रही हैं और

खेतों को बिगाड़ते,

बहुमंजिली इमारतों से भरकर

भूमि माता रो रही है।

माँ की पुकार कोई नहीं सुनता

प्रकृति जो सबकुछ सह सकती है।

सहन करते-करते थक चुकी प्रकृति,

सहनशक्ति छोड़कर प्रतिक्रिया करने लगी।

शान्त दिखाई देनेवाली माँ के

खुरदरा रूप देखकर ,

चौंके मानव समाज।

सबकुछ हटाये प्रकृति,

कोई उसे पकड़ नहीं पाया।

फिर भी बिना सीखे इनसान,

माँ की छाती से गरम खून ढूँढ रहे हैं।

2020-21... इतना बुरा भी नहीं था।

जहाँ हर तरफ दुनिया 2020-21 को कोसने में लगी है,
वहीं इस कविता के माध्यम से कुछ सकारात्मक खोजने का प्रयास किया है।

अपनों को अपनों से मिलवाया,
कुदरत की कद्र करना सिखाया...
क्या होती है कैद भरी ज़िन्दगी,
सबको इसका एहसास करवाया...
माना बीता हुआ सत्र अच्छा नहीं था,
पर 2020-21... इतना बुरा भी नहीं था।

अंहकार जिनका चरम सीमा पर था कभी,
उन्हें भी गिड़गिड़ाते हुए देखा था...
आजाद धूम रहे थे बेजुबा बेफिक्र होकर,
और इंसान को कैद हुए भी देखा था,
साफ़ फिज़ाओं में सदियों बाद,

पशु-पक्षियों को मग्न होते देखा था...
हमने आसमाँ को साफ होते देखा था,
माना बीता हुआ सत्र अच्छा नहीं था,
पर 2020-21... इतना बुरा भी नहीं था।

चला गया था जो बचपन भी कभी,
जवानी को फिर बचपना करते देखा था...
अष्टी चंगा, लूडो, ताश की पत्तियों में,
बच्चों ने बड़ों को बच्चे बनते देखा था...
थक चुकी थी जो मेहनत भी कभी,
उसे भी विश्राम करते देखा था...

एक सरीके का चल रहा था जीवन जिनका,
उन्हें पहली दफा आराम करते देखा था...
माना बीता हुआ सत्र अच्छा नहीं था,
पर 2020-21... इतना बुरा भी नहीं था।

जरूरी था एक बदलाव, एक नसीहत,
इंसान को गलती समझाना जरूरी था,
जो देन मिली है कुदरत से, बेइंतहाँ सी,
उसका महत्व समझाना जरूरी था...
माना बीता हुआ सत्र अच्छा नहीं था,
पर 2020-21... इतना बुरी भी नहीं था।



संकेत अग्रवाल
वैज्ञा/इंजी-एसडी
द्र.नो.प्र.के., वलियमला

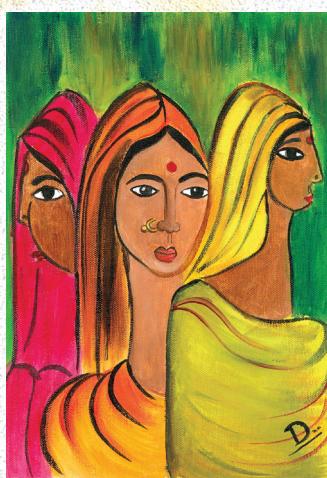
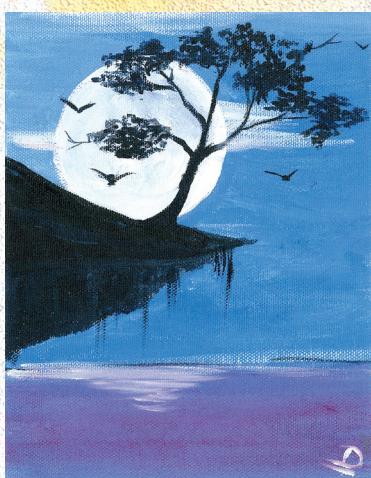
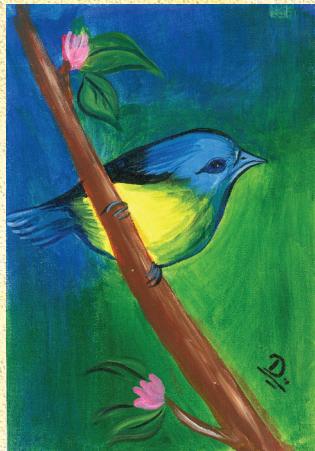


राष्ट्रीय एकता दिवस 2021:
विवंध लेखन
प्रतियोगिता,
वलियमला

कलासृष्टि

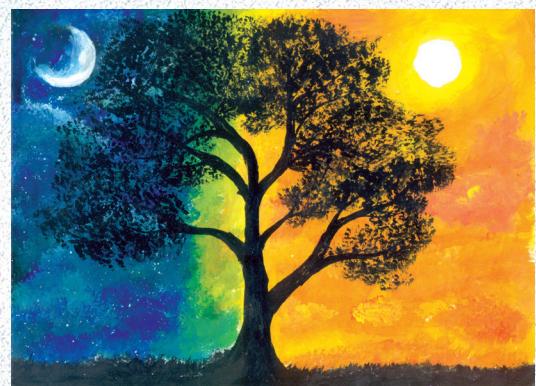
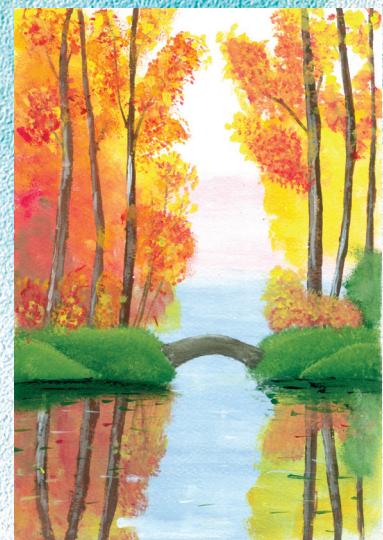


दिया नायर
सुपुत्री रम्या नायर
वेजा/इंजी-एसई
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला

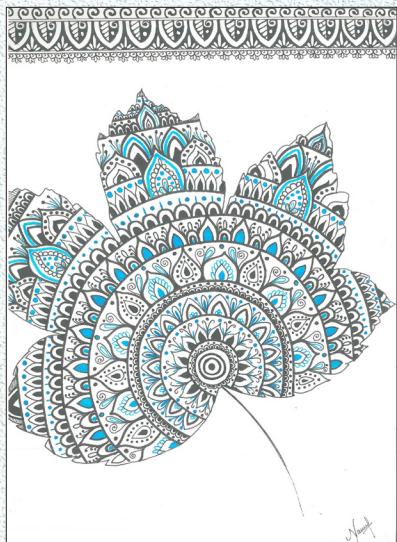
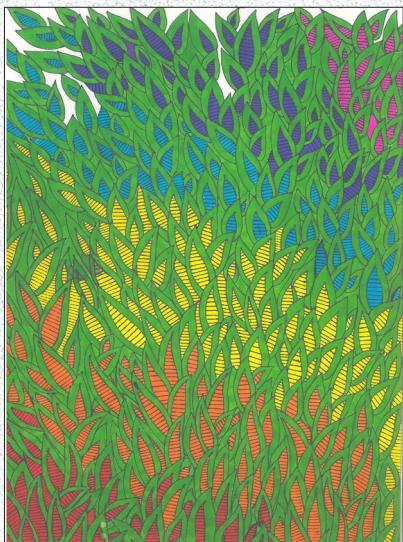


कुमारी अभिरामी आर
सुपुत्री रम्या एस यू
वरि. सहायक
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला





श्रीमा पी राजन
बहन ग्रीष्मा पी राजन
वरि. सहायक
द्र.नो.प्र.कै., वलियमला



नवीना जी
सुपुत्री श्रीमती शोभा गोविन्दराजन
द्र.नो.प्र.कै., बॅगलूरु



दसवीं एवं बारहवीं कक्षाओं में हिंदी में उच्चतम अंक प्राप्त करने पर नकद पुरस्कार विजेता

वालियमला

बैंगलूरु

वर्ष 2019-20



प्रथम पुरस्कार
(दसवीं कक्षा, राज्य पाठ्यक्रम)

कुमा. मंजिमा नाथेन एम
(सुपुत्री श्री मनु रंजनाथ एन.के.,
एचवीडी-बी, टीओएमडी)



प्रथम पुरस्कार
(दसवीं कक्षा, राज्य पाठ्यक्रम)

मास्ट. कृष्णानुण्णी मनोज
(सुपुत्र श्रीमती बिंदु ओ.एस.,
तकनीशियन-जी, क्यूएईआई/एसआरक्यूए)



प्रथम पुरस्कार
(दसवीं कक्षा, सीबीएसई)

कुमा. कृष्णप्रभा एम एस
(सुपुत्री श्रीमती सुधा टी.एस.,
परि. वै. सचिव, सीएटीएफ/सीएससी)



द्वितीय पुरस्कार
(दसवीं कक्षा, सीबीएसई)

कुमा. अनश्वरा अशोक एस
(सुपुत्री श्री अशोककुमार के.,
वरि. सहायक, का.व.सा.प्र./सा.प्र.)



प्रथम पुरस्कार
(दसवीं कक्षा, राज्य पाठ्यक्रम)

मास्ट. आदित कृष्णा बी
(सुपुत्र नैलिमा तुलसी,
वरि. सहायक, क्रय)



प्रथम पुरस्कार
(दसवीं कक्षा, आईसीएसई)

कुमा. दीपांशी अग्रवाल
(सुपुत्री श्री दीपककुमार अग्रवाल,
वैज्ञा.इंजी. एसजी, पीआरएस)



द्वितीय पुरस्कार
(दसवीं कक्षा, सीबीएसई)

कुमा. हृद्या के
(सुपुत्री हरि के के,
वरि. सहायक, क्रय)



वर्ष 2020-21



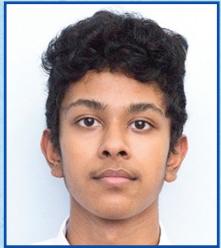
प्रथम पुरस्कार
(बारहवीं कक्षा, राज्य पाठ्यक्रम)

कुमा. हृद्या रेनिष
(सुपुत्री श्रीमती जीवारानी के,
परि. वै. सचिव)



द्वितीय पुरस्कार
(बारहवीं कक्षा, राज्य पाठ्यक्रम)

कुमा. प्रियदर्शनी एम
(सुपुत्री श्री माधवन टी,
वैज्ञा./इंजी. एससी)



प्रथम पुरस्कार
(दसवीं कक्षा, आईसीएसई)

मास्ट. जॉल अबराहम थॉपिल
(सुपुत्र श्रीमती मेरी जी,
वैज्ञा./इंजी. एसएफ)



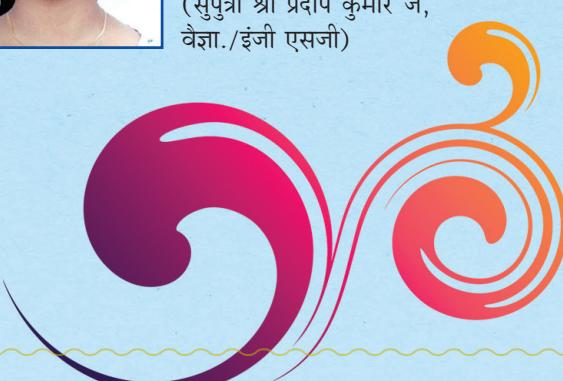
द्वितीय पुरस्कार
(दसवीं कक्षा, आईसीएसई)

कुमा. भाविका प्रदीप
(सुपुत्री श्री प्रदीप कुमार जे,
वैज्ञा./इंजी. एसजी)



तृतीय पुरस्कार
(दसवीं कक्षा, सीबीएसई)

मास्ट. वेंकटाद्री रेड्डी
(सुपुत्र श्री पी वेंकट रेड्डी,
वैज्ञा./इंजी. एसजी)





एस बी एफ
पुरस्कार वितरण
समारोह 2020,
वलियमला

स्वच्छता पंखवाड़ा 2021, वलियमला



विश्व हिंदी दिवस 2021, वलियमला



विश्व अंतरिक्ष सप्ताह 2021, वलियमला





स्वतंत्रता दिवस समारोह 2021
वलियमला ६ बेंगलुरु